LINGUISTIC STUDY OF GURU NANAK

गुरु नानक (वाणी) का भाषा शास्त्रीय अध्ययन

(Revised)

पंजाब विश्वविद्यालय की पी एच. डी. की उपाधि के लिए

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

१९७६ ई०

निर्देशक :

डॉ० गोविन्द नाथ राजगुरु

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

प्रस्तुत कर्ता

गुरुचरण ~~खुराना~~ दास

भूमिका

पंजाब में जन्म लेकर गुरुनानक और उनकी वाणी से अपरिचित रहना शायद एक विडम्बना ही समझी जायगी । गुरु नानक के प्रदेश में रहना और गुरुनानक द्वारा निर्मित सांस्कृतिक वातावरण में सांस लेना संभवत: तभी सार्थक है जब जीवन को किसी न किसी रूप में गुरुनानक का कोई संदर्भ दिया जा सके ।

भाषाई सामग्री

गुरु नानक का अवतरण उस युग में हुआ जब उत्तरी भारत में अपभ्रंश (अवहट्ट) उत्तरी भारत की आधुनिक भाषाओं (विभाषाओं) के लिए सभी आवश्यक भाषाई सामग्री तैयार कर चुके थे । इस मूलभूत भाषाई सामग्री का उपयोग उत्तरी भारत के विभिन्न अंचलों में धीरे धीरे एक स्वतंत्र भाषाई इकाई के रूप में हो रहा था ।

पन्द्रहवीं शताब्दी हमारी प्रान्तीय भाषाओं के लिए एक वरदान सिद्ध हुई । गुजरात के प्रमुख लेखक मालण का नलाख्यान (प्रकाशन वर्ष १६५१) महाराष्ट्र के थानेश्वर की ज्ञानेश्वरी और महानुभाव सम्प्रदाय के अनुयायीओं ने अपने अपने प्रान्तों में प्रचलित भाषाओं में आरंभिक कृतियां प्रस्तुत कीं ।

खड़ी बोली के एकाधिक लेखकों ने भी दक्खिनी में अनेक कृतियां (गद्य सबरस , शाह मीरां जी पृ० १४६६) इसी शताब्दी में प्रस्तुत कीं । पूर्वी अंचलों में बंगला में ' कृत्तिवास ' की ' कृत्तिवासी रामायण ' अवधी में मौलाना दाउद कृत ' चंदायन ' (रचनाकाल विक्रमी १४३१) आदि अनेक भाषाओं में रचनाएं इसी शताब्दी में हुईं । राजस्थान में शार्ंगधर ने लोक भाषा में हम्मीर रासो और हमीर काव्य की रचना की ।

इस साहित्य का इतिहास की दृष्टि से तो अपना महत्व है ही साथ ही भाषा और भाषाई सामग्री की दृष्टि से इस का मूल्य और महत्व अकल्पनीय है ।

गुरु नानक भाषा

गुरु नानक ने अपने युग के पंजाब (पन्द्रहवीं शती) में प्रचलित जनभाषा को अपनी वाणी में प्रयुक्त किया । गुरु नानक का भाषाई सामर्थ्य उनकी घुमक्कड़ी प्रवृत्ति के कारण बहुत तेजस्वी बन गया है । भारत में दुर दुर तक यात्राएं (उदासियां) करने के कारण गुरु नानक की भाषा में अनेक स्थानों पर पूर्वी शब्द और कभी कभी राजस्थानी की बहुत प्रवृत्तियां मिल जाती हैं । संस्कृत और फारसी भाषाओं की मानों खिल्ली उड़ाने के लिए भी गुरुनानक ने कुछ शक्तिशाली रचनाएं प्रस्तुत की हैं । जैसे सलोक सहसकृति (संस्कृत) यक अरज़ गुफतम (फ़ारसी)

' लहंदा ' ' पोठोहारी ' और मलवई जैसे पंजाब की प्रमुख विभाषाओं को भी गुरु नानक ने स्थान स्थान पर प्रयुक्त किया है । स्पष्ट है कि उत्तरी भारत में प्रचलित प्राय: सभी भाषाओं को गुरु नानक ने एक ऐसे भाषाई मुहावरे के रूप में प्रयुक्त किया है जिसे पेशावर से लेकर पशुपतिनाथ (नेपाल) तक और दुसरी ओर समुद्र के किनारे किनारे जगन्नाथ पुरी से दक्षिण और वहां से श्री लंका तक सामान्यतया समझा जा सकता था । भाषा के इस बहुरंगे रूप के कारण गुरु नानक की वाणी को समझना समझाना प्राय: कठि समझा जाता रहा है । सामान्य व्यक्ति के लिए इस प्रकार की बहुरंगी भाषा को समझ पाना एक समस्या रही है ।

इस के अतिरिक्त उन की भाषा का पुरा ढांचा उन के कारकीय प्रयोग उनके क्रिया और कृदन्त रूप प्राय: अपभ्रंश -

(अवहट्ट)

की भाषाई प्रवृत्तियों के अनुरूप हैं। इस परम्परा से अपरिचित व्यक्ति के सामने गुरु नानक की भाषा एक चुनौती के रूप में खड़ी होती है।

गुरु नानक और उनके व्याख्याता

गुरु नानक की भाषा धीरे धीरे उत्तर वर्ती व्याख्याताओं के लिए दुर्बोध बनती चली गई। इस का एक कारण तो यह था कि गुरु नानक के बाद पंजाबी स्वतन्त्र भाषा के रूप में उभरने लगी थी। गुरु नानक के बाद पंजाबी भाषा बोलने वालों के लिए गुरु नानक की बहुरंगी भाषा (अर्नेस्ट ट्रम्प के शब्दों में ` हिन्दुई `) अपने बहुरंगे और विशाल शब्दकोश के कारण प्राय: सुबोध थी।

इस बात के कितने ही प्रमाण मिलते हैं कि गुरु नानक के पश्चात उन की वाणी के व्याख्याताओं को वाणी में भाषा सम्बन्धी कठिनाइयों का पग पग पर सामना करना पड़ता था।

हरि जी (सत्रहवीं शती) ने द्वितीय गुरु अंगद के मुख से गुरु नानक के सामने भाषाई सम्बन्धी इस कठिनाइ को रखा था (विस्तार के लिए देखिए , गोसटि गुरु मिहरिवाणु सम्पादक डा० गोविंद नाथ राजगुरु , पृष्ठ १७०)

हरि जी के इस साक्ष्य से गुरु नानक की भाषा सम्बन्धी कठिनाई का आभास मिलता है। हरि जी के पिता मिहरिवानु (सोलहवीं शती) नानक वाणी के सम्भवत: प्रथम व्यख्याता थे। हरि जी और उन के भाई चतुर्भुज ने भी नानक वाणी की व्याख्या परम्परा को आगे बढ़ाया।

इससे स्पष्ट है कि गुरु नानक से केवल सौ वर्ष बाद ही उनकी वाणी को सुबोध ढंग से व्याख्यायित करने की आवश्यकता महसूस की गई।

मिहरिवाणु , हरि जी और चतुर्भुज ने वाणी की व्याख्या करते समय कितने ही शब्दों को विचित्र रूप से (कई बार हास्यास्पद ढंग से) स्पष्ट करना चाहा है । इससे यह तथ्य उभर कर सामने आता है कि गुरु नानक की भाषा एक समस्या के रूप में पिछले लगभग चार सौ वर्ष से पंजाब के विद्वानों के सामने रही है ।

अर्नेस्ट ट्रम्प

उन्नीसवीं शताब्दी में गुरु नानक की भाषा के सम्बन्ध में विचार करने वालों में डा० अर्नेस्ट ट्रम्प (आदि ग्रन्थ अंग्रेज़ी अनुवाद और भूमिका प्रकाशन वर्ष १८७०) का नाम उल्लेखनीय है । दुर्भाग्य से आदि ग्रन्थ की भाव भूमि के साथ डा० ट्रम्प सामान्य सी सहानुभूति भी नहीं रख सके । फलत: उन की मान्यताओं के विरोध में एक व्यापक प्रतिक्रिया हुई । जो भी हो इस में सन्देह नहीं कि डा० ट्रम्प की दृष्टि गुरु नानक की भाषा के सम्बन्ध में बहुत तटस्थ और शुद्ध थी । गुरु नानक की भाषा को उन्होंने पुरानी ' हिन्दुई ' बोलियों का आकार बताया है ,[56] " But the chief importance of the Sikh granth lies in the linguistic line as being the treasury of the old Hindui dialect."[57]

स्पष्ट है कि भाषा शास्त्रीय दृष्टि से गुरु नानक की भाषा पर विचार करने वालों में ट्रम्प का नाम सर्वप्रथम है ।

मैकालिफ़

ट्रम्प के पश्चात मैकालिफ़ ने गुरु नानक की वाणी के कुछ अंशों का अनुवाद अंग्रेज़ी में किया । मैकालिफ की दृष्टि भाषा पर नहीं थी । वह मूलत: नानक वाणी के व्याख्याता ही थे । उनकी व्याख्या भाई कान्हसिंह की परम्परा प्राप्त दृष्टि से अधिक प्रभावित थी । निश्चय ही इस क्षेत्र में वह कोई नई बात न कह सके । The Sikh Religion पुर्न प्रकाशन , १९६३ , MAX ARTHUR MACULIFFE]

नानक वाणी पंजाब के व्याख्याता

उन्नीसवीं शताब्दी में पंजाब के कितने ही विद्वानों ने नानक वाणी की व्याख्या परम्परा को और आगे बढ़ाया। इन विद्वानों में पंडित तारासिंह नैरोत्तम। (देखिए गुरु मुखि लिपि में हिन्दी गद्य डा० गोविन्द नाथ राजगुरु, पृ० १९५-२०० विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। भाषा की दृष्टि से नरोत्तम सिंह संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे। ट्रम्प आदि विद्वानों की धारणाओं से वह परिचित थे। एक बहुश्रुत व्याख्याता होते हुए भी गुरु नानक की भाषा सम्बन्धी समस्या पर उनके विचार पुरानी परम्पराओं का ही अनुमोदन करते हैं।

फरीद कोटी टीका

नरोत्तम के बाद रियासत फरीद कोट के एक शासक ने अनेक वाणी व्याख्याताओं को बुलाकर आदि ग्रन्थ की एक प्रामाणिक टीका प्रस्तुत करने का प्रयास किया (पुर्न प्रकाशन वर्ष १९७०, प्रथम बार सम्वत, २७ कार्तक १९८१) इस में संदेह नहीं कि वाणी व्याख्या के सम्बन्ध में बहुत सी प्राचीन परम्पराओं को इस टीका में संकलित किया गया है। परन्तु गुरु ग्रन्थ साहिब की भाषा पर इस टीका के लेखकों की पकड़ बहुत कम है।

वाणी व्याख्याताओं में साहब सिंह का नाम बहुत प्रसिद्ध है। साहब सिंह ने वर्षों की साधना के बाद वाणी की व्याख्या की। इन की वाणी की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि उन की व्याख्या प्राचीन परम्परा से हट कर एक नई परम्परा का सूत्रपात करती है। इस परम्परा की अपनी सीमाएं हैं।

गुरुवाणी व्याकरण.

साहब सिंह

साहब सिंह सम्भवत: पहले व्याख्याता हैं जिन्होने नानक वाणी को व्याख्यायित करते हुए वाणी का एक उपयोगी व्याकरण भी लिखा (गुरवाणी विआकरण प्रकाशन १६३२)

संदोप में नानक वाणी की व्याख्या और उसकी भाषाई सरंचना को उद्देश्य बनाकर लिखी गई सामग्री का महत्वपूर्ण अंश इन्हीं कृतियों में देखा जा सकता है। परन्तु प्राय: इन सभी लेखकों की भाषाई दृष्टि से गुरु नानक की भाषा का वास्तविक रूप समझने समझाने में असमर्थ रही है। इसका एक कारण तो यह रहा कि प्राय: ये सभी लेखक अपभ्रंश विशेषत: अवहट्ट की भाषाई प्रवृत्तियों के साथ गुरु नानक की भाषा का सामंजस्य स्थापित नहीं कर सके हैं।

गुरु नानक की भाषा को अपभ्रंश विशेषत: अवहट्ट का संदर्भ देने के उद्देश्य से यह प्रबन्ध प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस शोध प्रबन्ध में :-

१- स्वर

२- व्यंजन

३- रूप विचार

४- सर्वनाम

५- विशेषण

६- क्रिया

७- काल

८- अव्यय

८- अव्यय

अध्यायों की योजना की गई है ।

यथा सम्भव रूप से अपने इस अध्ययन को पूर्ण बनाने का प्रयास मैंने गत १०-१५ वर्षों से किया है । परन्तु इस प्रयास को पूर्ण या अन्तिम समझना मेरे लिए सम्भव नहीं है । इस विषय पर जितना चिन्तन मनन मैं करता रहा उतना ही इस विषय का अगाध और अथाह रूप मेरे सामने स्पष्ट होता गया । इस विषय के साथ पूर्ण न्याय करने के लिए मुझे अपना शेष जीवन इसी विषय के प्रति समर्पित करना बहुत आवश्यक जान पड़ता है ।

0 - 0 0 0

- 0 -

0

<u>आभार प्रदर्शन</u>

"गुरु गोविंद दोनों खड़े का के लागूं पाय

बलिहारी गुरु आपने जिस गोविंद दिया मिलाय"

विषयानुक्रमणिका

ध्वनि विचार

स्वर : 1-14

वर्णित स्वर

विरोधी युग्म

ई । इ

इ । ए

ए । ऐ

अ । आ

अनुनासिक विरोधी युग्म

उ । औ

ऊ । ओ

ऊ । उ

ओ । ऑ

औ । अउ

मूल स्वर - विश्लेषण

गुरु भाषा का ध्वनि तत्व

स्वर तालिका

मूल स्वर

ह्रस्व , दीर्घ , संयुक्त स्वर

उच्चारण स्था

संवृत)
) स्वर
अर्ध संवृत)
)
अर्ध विवृत)
विवृत)

स्वर संयोग तालिका

दो स्वरों का संयोग

तीन स्वरों का संयोग

तीन दीर्घ स्वरों का संयोग

चार स्वरों का संयोग

दो दीर्घ + दो ह्रस्व

तीन दीर्घ + एक ह्रस्व

चार दीर्घ

एक ह्रस्व + तीन दीर्घ

केवल स्वर

ब । ब

मनुनासिक स्वरों की स्वर संगति

दो स्वर

तीन स्वर

चार स्वर

<u>व्यंजन</u> : 20=36

कवर्ग	क , ख , ग , घ
चवर्ग	च , छ , ज , झ
टवर्ग	ट , ठ , ड , ढ
तवर्ग	त , थ , द , ध
पवर्ग	प , फ , ब , म

अनुनासिकता

विरोधी युग्म

क । ख

क । ग

च । छ

ट । ठ

ट । ड

त । थ

प । फ

प । ब

तवर्ग । टवर्ग

त । ट

थ । ठ

र । ड

ल । र

र । ल

त । ट

ब । म

ध । ढ

न । ण

क । ख

च । छ

ज । झ

त । थ

ड । ढ

प । फ

ल + उष्म य अनुनासिक

र + विराम + उष्म

उ + विराम

उष्म + विराम

मध्य संयोग

अंतव्यंजनात्मक

अनुनासिक व्यंजन

ङ, ञ, ण, न, म,

ळ, ळ,

ळ। ळ

लुंठित र

उत्क्षिप्त ड़

प्रातिपदिक

रचनात्मक प्रत्यय 37-49

पूर्वकालिक कृदंत

क्रियार्थक संज्ञा के प्रत्यय

तद्धित प्रत्यय

व्यंजन तालिक

उच्चारण स्थान

विभक्तियां : 50-87

(कारक) अकारान्त पुल्लिंग

आकारान्त पुल्लिंग

इकारान्त पुल्लिंग

ईकारान्त पुल्लिंग

उकारान्त पुल्लिंग

ऊकारान्त पुल्लिंग

अकारान्त स्त्रिलिंग

आकारान्त स्त्रिलिंग

इकारान्त स्त्रिलिंग

ईकारान्त स्त्रिलिंग

उकारान्त स्त्रिलिंग

लिंग : 88-96

वचन : 96-97

सर्वनाम : 98-132

१- पुरुष वाचक - मं हउ तु

२- निश्चयवाचक - एह

३- अनिश्चयवाचक - कोइ , सभ

४- सम्बन्ध वाचक - तिन

५- अनुसम्बध वाचक - जो

६- प्रश्न वाचक - कवन , कउन , किआ

७- निज वाचक - आप

विशेषण 133- 161

१- संख्या वाचक विशेषण

२- सार्वनामिक विशेषण

३- गुण वाचक विशेषण

क्रिया 162-197

१- धातु

२- मुल - २- यौगिक

मूल धातुएं

१- हिन्दी पंजाबी में समान रूप से प्रयुक्त धातुएं
२- हिन्दी की धातुएं
३- पंजाबी की धातुएं
४- तद्भव
५- प्राकृत

यौगिक धातुएं
अकर्मक धातुएं
सकर्मक धातुएं
प्रेरणार्थक धातुएं
नाम धातुएं
संयुक्त क्रियाएं
कर्म वाच्य
प्रकार
पूर्वकालिक क्रियाएं
प्रवर्तनार्थक , विध्यार्थक
वृत्तियां

काल 198-210

१- वर्तमान काल)
२- भूत काल)
३- भविष्यत काल) पुल्लिंग
४- स्त्रीलिंग)

अव्यय : 211-230

क्रिया विशेषण

काल वाचक

स्थान वाचक

रीति वाचक

दिशा वाचक

परिमाण वाचक

सम्बन्ध वाचक

समुच्चय बोधक

ग्रन्थ सूची

स्वर

नानक की वाणी में निम्नलिखित स्वर ध्वनियां मिलती हैं :-

अ आ , ई इ , ऊ उ , ऐ ए , औ (अउ) और ऊपर दी गई ध्वनियों में (अउ) को औ के अन्तर्गत ही माना जायगा ।

इसी प्रकार (अ) को भी हम (अ) के अन्तर्गत ही मानते हैं । दोनों का वितरण एक दूसरे का पूरक हैं । (अ) का व्यवहार ` ह ` से पूर्व है अन्यत्र (अ) पाया जाता है - यथा -

कहर , जहर , सहरु

अत: नानक की वाणी में निम्न स्वनिम माने जा सकते हैं :-

ई , इ , ए , ऐ , ऊ , उ , ओ , औ , अ तथा आ ।

नीचे कुछ उदाहरण इनके विरोध को प्रकट करने के लिए प्रस्तुत किए जाते हैं :-

ई , इ	चीर (कपड़े) ६३३।२१ चीरी (चीरना) ४१८।३	चिरु ६३०।२०
	तीन ४१८।२	तिन तिना २२।३०(उनको)
	नीव १५५।११ नीवी ४७०।२०	निवे ७२१।१५ (झुकना)
	वीचारु १।१२	विचारे ६।१३

इ, ए	तिनु ४।२२	तुल २५।२६
	फिरि १।१३	फैरि २।६
	चिति ६।१६	चैति ७५।४
	कितु (गुप्त) ६।६	केता ६५५।८
ए, ऐ	वैरी १३२७।६	वेरी ४१७।१०
		वेर ६४२।१०
अ, आ	चरै ४१२।२५	चार ४७०
	चहैं १२७३।१०	चारु ५८।२३
	कर ५४।५	कार १४४।२३
	पल	पालि १।५ (पर्दा)
	सकै २।२७	साकु ५५।३
	लमई ६१।२४	लामु ५५।३
	मनति ३५१।२०	माणे
	मणति ५६६।१६	
	झले (मोतियों से जड़े पंखे)	झालु ६२।१६ (प्रातःकाल)

अनुनासिक

कुआ - मिट्टी का बर्तन

कुआं - कुंआ

सर - श्रेष्ठ

सरां - उचित समय

वाढी - बिछुड़ी हुई

वाढीं - दूर

सुनि - सुनो
सुँनि - शून्य समय

चित - हृदय
चिंत - चिंता

टीड - बिल्ली का बच्चा
टिंड - मिट्टी का बर्तन

कोई भी स्वर जो अनुनासिक व्यंजन के पश्चात् आता है स्वत: ही अनुनासिक बन जाता है।

	नाउ २।१०	नाउं ३५२।१
उ , ओ	फुलु ७२५।१२	फोलि १४६।२२
	बुलाइ ६०७।२	बोला १४३।१२
		बोली १०२२।१६
		बोल ५६।५
	महलु १८।१६	महलो ६८६।१४
	मजनु १५३।१८	मजनो ४३७।१
	मानु २।११	मानो ४३७।१३
	मिलउ ६६१।७	मिलिओ ७५।१३
	मिलु २०।१५	
	राहु २।५	राहो ६३८।१४
	पछुतानी ३५७।४	पछोताणी १११।१६
	पछुतावणा ५७।६	पछोतावणा ४७१।२
	निवासु १५।२०	निवासो ६४०।७
	फलु २१।२३	फलोइ ६४।१८

ऊ , औ	ऊडे ४३२।१ (ओंअकार)	ओड (अंत)
	ऊरे ५६७।१ (नीच, छोटे)	औरै ६२।१६ (इधर, पहले)
	ऊणा ७८८।२६(कम)	ओना ७।४ (उनको)
	सूर	सोरु ७।१४
	पूत ६३।१	पोता ८७८।२१
	मूला १४।१२	मोला ३५८।४
ऊ , उ	ऊणा ७८८।२६ (कम)	उना ४७१।१६ (उनको)
	खूल्हि १३३०।२८(खुले तौर पर)	खुले (खुला)
	चूक (मूल चूक)	चुकि १२८७।२(चुकाना)
	तूरे ४७५।१५(तुरही बाजा)	तुरे (घोड़े)
	सूर (शूरवीर)	सुर (देवता)
	सूत (सूत्र)	सुत (पुत्र)
	गूड़ा (पक्का)	गुड़ १५।२८
ओ , औ	मूलो ५६।२१	मूलौ ११८८।१३
	निरमलो ६२।२६	निरमलौ १३३१।११
	खोटो १३३०।१०	खोटौ १३३१।११
	सचो ५६।२८	साचौ ४१६।१७
	अकथो ५६।२२	अकथौ १३३१।२१
औ , अउ	औतु १७।६	अउतु ६५५।६
	और २२३।१	अउप ५३।१७
	अकथो ५६।२२	अकथउ १२३३।१०
	घोर ४।५	चउकड़ी ४७१।६
	घोलि १०१४।२२	चउदसि ८४०।१६
	चोज़ ३५६।२५	कउण २२३।१६

दोसती १४६।२	कउड़ा २२६।१०
कावो ५८१।२७	कउवा ६३५।१०
काला ११२६।१	गउ ४७१।२१
चवरी १३।२	कउरू १०३३।२२

मूल-स्वर

अ :- यह ह्रस्व अर्धविवृत मध्य स्वर है। इसका उच्चारण करते समय जीभ का मध्य भाग कुछ उपर उठता है। मुख थोड़ा सा खुलता है। यह स्वर आदि, मध्य और अन्त सभी हालतों में मिलता है।

अ :- यह ह्रस्व अर्धविवृत मध्य स्वर अ से थोड़ा सा बन्द होता है। इसके उच्चारण में अ की भान्ति जीभ का मध्य भाग कुछ ऊपर उठता है और ओष्ट कुछ खुलते हैं। यह अग्र स्वर है। उदाहरण - कह, कहर, सहरा, जहरा, पहरा।

आ :- यह दीर्घ विवृत मध्य स्वर है। इसका उच्चारण करते समय जीभ का पिछला भाग कुछ ऊपर उठता है। ` अ ` के उच्चारण वाली अवस्था से मुख कुछ अधिक खुलता है। यह आदि, मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है।

आखु, आजु, काटि, गाठि, सजाइ।

ई :- यह दीर्घ संवृत अग्र स्वर है। इसका उच्चारण करते समय ओष्ट कुछ फैले हुये रहते हैं। यह आदि, मध्य और अन्त सब अवस्थाओं में मिलता है। जैसे :-

ईस, ईख, ईसरू, नीव, चीर, थी।

इ :- यह ई की अपेक्षा कम संवृत है। इसका उच्चारण करते समय जीभ का अगला भाग ऊपर उठ कर तालु के निकट पहुंच जाता है। ओष्ट ई से कुछ शिथिल रहते हैं। यह आदि, मध्य, और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है। जैसे :-

इस, इसु, कित, खिन, खिनि, खिआल

अन्त वाली स्थिति में इसका उच्चारण नहीं होता।

ऊ :- यह दीर्घ संवृत पश्च स्वर है। इसके उच्चारण में ओष्ठ गोल हो जाते हैं। जीभ का पिछला भाग उठ कर कोमल तालु के निकट चला जाता है। यह आदि, मध्य, अन्त सब अवस्थाओं में मिलता है। ऊतमु १५।१७, पूतु ३।२०, लूणु ४०३।८।

उ :- यह ह्रस्व संवृत पश्च स्वर है। इसके उच्चारण में ओष्ट गोल हो जाते हैं। जीभ का पिछला भाग ऊ से नीचे रहता है। यह आदि, मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है। अन्त में यह प्राय: अघोष होता है।

उस	सुरती	सुघड ५६६।२१	जिउ
उजाला	सुआमी	कुन ७२१।४	सरीकु

ऐ :- यह अग्र स्वर है। जिह्वा का अग्र भाग (ए) की अपेक्षा और नीचे होता है। यह स्वर शब्दों के आदि, मध्य और अन्त में मिलता है।

ऐव २४।४, वैर ६४२।१०, वैरू १६।१६ होवै सोवै ४४।३

ए :- यह अर्ध संवृत अग्र स्वर है। यह शब्दों के आदि, मध्य और अन्त में मिलता है।

एक ३।२७, वेलि ३५१।३, तारे ३।१६

औ :- यह ह्रस्व अर्ध संवृत पश्च स्वर है। इसके उच्चारण के समय ओष्ठ गोल हो जाते हैं। जीभ का पिछला भाग तालु से दुर होता है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त में मिलता है।

औड़कि ६५३।२१	बौलि १५।२१	रहसीऔ १४१।२४
औड़कु ७६।६	फौगु १४३।३	ढहसीऔ

अउ :- यह शब्दों के आरम्भ ,मध्य और अन्त में मिलता है -

अउगुण	अउखा	अउघु
चउकड़ी	चउकड़ी	
गउ	चलउ	

गुरु भाषा का ध्वनि तत्व

स्वर तालिका

मूल स्वर

	ह्रस्व	दीर्घ	संयुक्त स्वर
मध्यस्वर	अ अ	आ	
तालु	इ इ	ई	ए ऐ
ओष्ठ	उ	ऊ	ओ
कंठ ओष्ठ		ऑ	अउ

स्वर

	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	ई		ऊ
	इ		उ
अर्धसंवृत	ए	अ	ओ
अर्ध विवृत	ऐ		ऑ
विवृत		आ	

	ई	इ	ए	ऐ	ऊ	उ	ओ	औ	अ	आ	अउ
इ	-	-	+	-+	-	+	+	-	+	+	-
ई	+	+	+	+	-	+	+	-	+	+	+
ए	+	+	+	+	+	+	-	-	+	+	-
ऐ	-	-	-	-	-	-	+	-	-	-	-
ऊ	+	+	+	+	-	-	+	-	+	+	-
उ	+	-	+	-	-	-	-	-	-	+	-
ओ	+	+	+	+	+				+	+	
औ	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
अ	+	-	+	-	+	-	+	-	-	-	-
आ		+	+		+	+	+				
अउ											

उदाहरण :-

	आदि	मध्य	अन्त
इऐ			बड़िऐ
इउ	इउ २२।८		अफरिउ २२७।११
इओ		सड़िओहि १४१२।२०	
इअ		इड्डिअड़ा ७२।२६	घिअ ७२१।१५
इआ	इआणा १५६।३		
इआ		अगिआन	

	आदि	मध्य	अन्त
इईं			थीईं २४२।१२
इँह			थीह ७८८।३०
इँए		छावडीएहि ७६२।१०	गौरीए २३।१७
इऐ			कटीऐ १२८८।१३
इँउ			घीउ १४१।३०
इँओ			कीओ ४७३।२८
इँअ		चड़ीअसु ८७६।१४	गीअ १२४६।२
इँआ		बुरीआह ८५।३	थीआ ३५२।२६
एइँ			सदेइँ २४।१६
इह			सुणेइ १२८६।८
एए			
एऐ		बेऐब ७२१।५	
एऊ			जनेऊ ३५५।३
एउ			अभेउ ७६६।२
एअ		देअहु	
एआ		छेआनित ६३२।२७	
ऐओ		पैओहरी १४१०।३	
ऊइँ			सूइँ ६५५।२७
ऊइ			मूइ ७२१।३
ऊए			हुए ४३२।२१
ऊऐ			सूऐ ४६५।१६
ऊओ			मूओ १४१२।११
ऊअ		अकूअणा ५५७।१५	
ऊआ		जूआरी २२२।१८	कऊआ ६३५।११
उइ		कुइरू ४१७।१३	बुइ ११०८।२८

	आदि	मध्य	अन्त
उए			मूए १६।१५
उआ		कुआरी ६।२४	मुआ १६।१६
ओइ	ओइ ७३।७	गोइलड़ा १०२३।२	जोइ ५६६।२७
ओइँ	ओइँ ४७१।२६		सोइँ ४।२८
ओए			होए ३।२५
ओऐ			तोऐ १२६०।१२
अईं			आवईं २।२२
अए			निरमए ६३०।१
अउ			आवउ १४।१६
अओ			गावओ ४३६।३
आईं	आईं	बरजाइँ	अजराइँल १०३७।४
आइ	आइ २३।४	लैलाइदा १०३७।४	कटाइ २।६
आए	आए ५६।२		गाए २२२।२३ वसाए, समाए
अउ			गावउ

तीन स्वर

	ई	इ	ए	ऐ	ऊ	उ	औ	ओं	अ	आ	अउ
इआ	-	+	-	-	-	+	-	-	-	-	-
ईअ	-	-	-	-	-	+	-	-	-	-	-
एई	-	-	-	-	-	-	-	-	+	-	-
ऐ	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
उआ	+	-	+	-	-	-	-	-	ड	-	-
उई	-	-	-	-	-	-	-	ड	-	+	-
ओई	-	-	-	-	-	-	-	-	+	-	-
ओइ	-	-	-	+	-	-	-	-	+	+	-
औं	-	-	-	-	-	-	-	-	-	+	-
अउ											
अइ	-	-	-	+	-	-	-	+	+	+	-
अई	-	-	-	-	-	-	-	-	-	+	-
आइ	-	-	-	+	-	-	+	-	+	-	-
आई	-	-	-	-	-	-	-	-	+	-	-

उदाहरण :-

	आदि	मध्य	अन्त
इआइ		घिआइदा १०३४।१८	घिआइ ५७।२६

	आदि	मध्य	अन्त
इआउ			अपिआउ १४।१४
इँअउ			पीअउ २२७।२०
एइँअ		पेइँअहे ६३।१६	
उआइँ			सुआइँ ४१७।२५
उआऐ			सुआऐ ४१७।२६
उइआ		मुइआसि	
ओइअ		होइँअहि १५५।४	
ओइआ			सोइआ ६०।२४
अइँआ			गइँआ ५५८।२
आइऐ			निबाइऐ
आइओ	आइऔ		दिसाइओ
आइँअ		ऊपाइँअनु ५६६।१२	

तीन दीर्घ

	ई	इ	ए	ऐ	ऊ	उ	ओ	औ	अ	आ	ऋ
ईआ	-	-	+	-	-	-	-	-	-	-	-
एई	-	-	-	+	-	-	-	-	-	+	-
ऐई	-	-	-	+	-	-	-	-	-	-	-
ऊआ	-	-	-	+	-	-	-	-	-	-	-
ओई	-	-	-	+	-	-	-	-	-	+	-
आई	-	-	+	+	-	-	-	-	-	+	-
आऊ	-	-	-	-	-	-	-	-	-	+	-

तीन दीर्घ स्वर

उदाहरण :-

ईआए	पतीआर ६८६।५
एइऐ	पेहऐ २३।१५
ऊआऐ	रुआटे
ओईऐ	होइऐ १।५
आईआ	गोइआ १२७।८

आईए	गाईए ५८०।२४
आइऐ	उपाइऐ १३८।१०
आईआ	गवाईआ ४९७।१२
आऊआ	पधाऊआ ५७।६

दो ह्रस्व + दो दीर्घ — चार स्वरों का संयोग

	इआ	
इआ	+	धिआइआ २४।७
उआ	+	बुआइआ १२।४

बुआइअनु - १४५।२२	तीन ह्रस्व + एक दीर्घ
ऊआइऐ - ४१८।८	चार दीर्घ।

चार स्वर संयोग
एक ह्रस्व + तीन दीर्घ

	ई	इ	ए	ऐ	ऊ	उ	ओ	औ	अ	आ	अउ
इआइ										+	
इआई				+							
ईआइ										+	
ऊआइ										+	
उआई				+							
ओआइ										+	

इआइआ	-	चंगिआइआ १६।३
इआइऐ	-	थिआइऐ १३६।१
ईआइआ	-	पर्तीआइआ ६८६।१७
ऊआइआ	-	रुआइआ ४६४।१७
ओआइआ	-	रोआइआ ६५३।२८

- -

केवल स्वर

आई - ओइ - आइआ - आईआ

व :-

सघोष अल्प प्राण दंतोष्ट्य अंतस्थ अर्ध स्वर है। इसका उच्चारण करते समय ऊपर वाले दांत नीचे वाले ओष्ठ को स्पर्श करते हैं और हवा मुंह में रगड़ खाती बाहर निकलती है। जीभ थोड़ी सी गोल होती है। इसका प्रयोग शब्दों के आदि मध्य और अन्त सब स्थितियों में मिलता है। जैसे :-

वस , सेवक , सेव

(व) और (ब) दोनों का प्रयोग मिलता है। व के स्थान पर ब का प्रयोग भी किया गया है।

अनुनासिक स्वरों की स्वर संगति

दो स्वर -

आइँ	गुंदआइँ ५५८।५
आइ	गिराइ १४६।२८
आईं	ताईं १२७३।१८
आईं	गुसाईं
आउं	छाउं १२८८।६
इईं	कुडिईं १४१२।१८
इआ	डिआनु ४३२।१६
ईअं	पीअंत ६३२।६
इआं	गलीआं १२८८।२७
ईईं	संतोखीईं ४६६।३०
उअं	मुअंम १३४३।८
एअं	बेअंत ४८६।१६
ओअं	ओअंकारि ६२६।२८

<u>तीन स्वर :</u>

इन में से एक स्वर अनुनासिक है ।

आइ॒आं	काइआं १२५६।१०
आइ॒आ	कांइआ १७।४
आंइऐ	चवांइऐ १४५।१३
अइ॒अं	पइअंपि १११३।२०
उइ॒अं	मुइअंगम

<u>चार स्वर :</u>

एक स्वर अनुनासिक है ।

इ॒आईआं	वडिआईआं ७३।८
इआंईआ	वडिआंइआ १४५।६

व्यजंन

(क) यह अल्प प्राण अघोष कठंय स्पर्श व्यजंन है। इसके उच्चारण में जीभ का पश्च भाग कोमल तालु से लगता है। जैसे कुकह।११०६।१, कुल। ३५३। ५, कुंभ। १३४३। ६, कुलु। १३६। १, कह। १४५। १५, कुण्डल। २२५। ११

(ख) यह महा प्राण अघोष कंठय स्पर्श व्यंजन है। इसका 'क' से यह अन्तर है कि यह महा प्राण है। इसका प्रयोग शब्दों के आदि मध्य और अन्त में मिलता है। इसमें प्रतिनिहित है ध्वनि चिन्ह (ष)।
खान। ६४। ११, खाजु। १२४२। २५।, खावणा। ४७४। २६।

(ग) यह अल्प प्राण घोष कंठय स्पर्श व्यंजन है। इसका उच्चारण करते समय जीभ का पश्च भाग कोमल तालु को लगता है। तथा अग्र भाग नीचा होकर इस में थोड़ा सा गढ़ा पड़ता है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त तीनों स्थितियों में मिलता है।

(घ) यह कोमल तालव्य नाद, घोष, महाप्राण निरनुनासिक स्पर्श व्यंजन है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त तीनों स्थितियों में मिलता है।

घन घनघोर दीरघ

(च) यह अल्प प्राण, अघोष, तालव्य श्वास निरनुनासिक स्पर्श ध्वनि है। इसका उच्चारण करते समय जीभ का अगला भाग ऊपर वाले दांतों के अन्दर वाले मसूड़ों से कठोर तालु को लगता है। यह आदि मध्य तथा अन्त सम स्थितियों में मिलता है।

चोज अचारि। ६६६।१०, अचारु। १६।४

(छ) यह अघोष , महाप्राण , तालव्य स्पर्श व्यंजन है। इसका ` च ` से केवल यही अन्तर है कि यह महाप्राण है। यह आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है।

छत्र ।६८६।३ , छक्का ।४६८।१३ , पूछ

(ज) यह अल्प प्राण , घोष , तालव्य स्पर्श व्यंजन है। इसका उच्चारण करते समय जीभ ` च ` के अनुसार ही कठोर तालु को लगती है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है।

जग , सजन , पूज

(झ) यह घोष , स्पर्श महाप्राण व्यंजन है।

झकोलिआ , बुझिआ , बूझ

(ट) यह अल्प प्राण , घोष , तालव्य , स्पर्श व्यंजन है। इसके उच्चारण समय जीभ का अग्र भाग उलट कर कठोर तालु के मध्य को लगता है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है।

(ठ) यह महाप्राण , अघोष , मूर्धन्य , स्पर्श व्यंजन है। ` ट ` के उच्चारण के समान ही जीभ का अग्र भाग उलट कर कठोर तालु को मध्य से ज़रा दांतों के अन्दर वाले मसूड़े वाली और थोड़ा सा एक ओर को लगता है। यह भी शब्दों के आदि , मध्य और अन्त में मिलता है।

ठेह ।१२५७।२ , ठठे ।४३३।६ , मिठा ।१७।२८ , मिठे ।१४३।३,
पाठ । मिठाआई । ६३५।३ ।

(ड) यह अल्पप्राण , घोष , मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन है। इसका उच्चारण भी जीभ के अग्र भाग को उलटा करके कठोर तालु के मध्य को ठ से भी ज़रा और ऊपर वाले दांतों के मसूड़ों की ओर लगाने से होता है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त तीनों स्थितियों में मिलता है।

जैसे :- डडे ।४३३।११ , डउ ।२०।६ , डंडा ।६।२४ ,
गडिआ ।४७३।६, गडी ।४६७।१८ , गडीआ ।६७६।२०
सड ।१२८६।८ , पिंड ।६८६।१४ , पंड ।१५।६ ।

(ढ) मूर्धन्य घोष महाप्राण निरानुनासिक स्पर्श वर्ण है ।

ढूढि ।६३।४ , ढूढी ।४२०।७ , ढोर ।७५१।६ ,
ढोलि ।७३३।१४ , गलवढ

(त) यह अल्प प्राण , अघोष , दंत्य स्पर्श व्यंजन ह । इसका उच्चारण जीभ की नोक वाले भाग को ऊपर वाले दांतों के अन्दर वाले भाग को स्पर्श करके किया जाता है । यह शब्दों के आदि , मध्य और अन्त में मिलता है ।

तेलु ।१२।२० , तेल ।२५।२५ ,
बताइ ।१३३०।१२ , बताए ।७२५।७ ,
बात ।१५५।७ , बाता ।४६६।२० , बाती ।७२२।१५ ।

(थ) यह महाप्राण , अघोष , दंत्य स्पर्श व्यंजन है । इसका उच्चारण भी ` त ` की भान्ति जीभ की नोक को ऊपर वाली दंत बीड़ के अन्दर वाले भाग के साथ लगा कर किया जाता है ।` त ` से इसका अन्तर यह है कि यह महा प्राण है । यह भी शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी स्थितियों में मिलता है ।

थोड़ा ।४६७।२ , थोड़ी ।४६८।२३ , थोड़े ।६८६।६ , थोडे ।५६।४
साथि ।३।११, साथी ।२४।८ , साथु ।६१।१८ ,
साथ । ४६७।१६

(द) यह अल्प प्राण , घोष , दंत्य स्पर्श व्यंजन है । इसका उच्चारण भी जीभ की नोक से दांतों की ऊपर वाली दांत बीड़ के अन्दर वाले भाग को स्पर्श करके होता है । यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है ।

जैसे :- दाति ।१।१३ , दाती ।१२३७।१७ , दाता ।२।१६
बद्रमा
नींद

(ध) दंत्य नाद घोष महाप्राण निरनुनासिक स्पर्श व्यंजन है ।
धन ।१६।७ , धनि ।६१।१३ , धनु ।५।८
गरधब ।८३२।१२
साध-संगति ।६०६।१६ ।

(प) यह अल्प प्राण अघोष द्वयोष्ठय स्पर्श व्यंजन है । इसका उच्चारण करते समय दोनों ओष्ठ थोड़ा कस कर जुड़ के फिर खुल जाते हैं और नीचे वाला जबाड़ा नीचे चला जाता है । मुंह के बीच वाली वायु भी एकदम बाहर निकल जाती है जीभ मुख में बिना हिलने के पड़ी रहती है । इसके उच्चारण में उसकी सहायता की आवश्यकता नहीं पड़ती । यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिल सभी अवस्थाओं में मिल जाता है ।

पाप ।२।२७ , पापा ।६१।५, पापी ।४।६
कपास ।१४३।१३ , कपाह ।४७१।३ , कपाट ।१५३।२

(फ) यह महाप्राण अघोष द्वयोष्ठय स्पर्श व्यंजन है । इसका उच्चारण ' प ' की भान्ति ही किया जाता है । अंतर इतना है कि यह महाप्राण है । यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त में मिलता है ।
फल ।१४७।२० , फलु ।२५।२०
सोफीआ
लेफ

(ब) यह अल्प प्राण घोष द्वयोष्ठय स्पर्श व्यंजन है । इसका उच्चारण भी ' प ' और ' फ ' की भान्ति होता है । ओष्ठों की को सहायता से किया जाता है । यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त में

मिलता है ।

बेला ।७२३।४ , बेलि ।३५१।२

पवणि

पुल

(म) औष्ठय नाद घोष महा प्राण निरनुनासिक व्यंजन है ।

माग ।७।१ , मागि ।४६४।६ ,

परमात ।

सोम ।

अनुनासिकता :

गुरु नानक की भाषा के समस्त स्वर निरनुनासिक तथा अनुनासिक दोनों स्थितियों में मिलते हैं । अन्तिम रूप में केन्द्रित और स्वर विरोधी स्थिति में नहीं दिखाए जा सकते क्योंकि केन्द्रित का के पक्ष में लोप हो जाता है ।

शेष स्वरों की विश्लेषणात्मक विवरण नीचे दिया जाता है ।

कुती ।१४३।१० (एक वचन)

कुतीं ।३६०।२२ (बहुवचन)

जा	यदि
जां	जब
कुजा।११६१।५	मिट्टी का बर्तन
कुजां ।७६२।१५	पक्षी
सर	श्रेष्ठ, धर्म की मर्यादा
सरां	उचित समय
वाढी	बिछुडी हुई
वांढी	दूर

सुनि	शून्य ब्रह्म
सुनि	है , सुम
चित ।२२२।१२	
चिंत ।३५४।१६	
टिंड	मिट्टी के बर्तन
टीड	बिल्ली का बच्चा

विरोधी युग्म

अल्प प्राण । महाप्राण (

काली ।३५०।२७	खाली ।६२।५०	
सुक	सुख	का।ख
काली ।३५०।२७	गालि ।४७१।६	का।ग
	गाली ।२४२।१३ । (गलना)	
	गालो ।५६०।११ (बातें)	
रोक ।१२८८।२७	रोग ।१३६।२८	
	रोगि ।३५२।२४ (रोग में , से)	
	रोग ।५०४।३०	
सोक	सोग ।५०४।३०	
	सोगु ।६।२६	
चाल	छाल	चा।छ
चाल ।२२७।२४	जाल ।२३।१७	चा।ज
	जालु	
मिटे	मिठे	ट।ठ
मिटै	मिटै	
टोल	डोल	ट।ड
टोलि	डोलु	
रत	रथ	त।थ
ताल	थालु	

ताल	दालि	ता।द
तालि		
फल(फलक)	फलु	पा।फ
लेपु(लिपायमान)	लेफु	
	लेफ	
पालि	बाल	पा।ब

तवर्ग । टवर्ग जत जत (जब जब) जटा

जत(शक्ति, ब्रह्मचर्य)

थाउ	ठाउ	
थाइँ	ठाइ	
हथ	हठु	
मन ।८।६	मण	ना।ण
पारे	पाड़े ।६५५ (फड़ना)	
पेढि	पेड़े ।४६६।८	डा।ड़
उन्डे	उन्ड़े ।४३२।१७	
लालि ।५४।७		ला।ल Lalari/Kalari frap
लाली ।५४।८		
लालु ।१८।१७		
लाला ।६६१।१		
लाल ।१०१०।३०		
लाल ।१०११।१		
लालो ।७२२।२७		

ळीग ।१५।३।३	रोगु ।४।१६।११	ळार
कारी	काळि(काळ)	राळ
	काळी (काळा नाग)	
	काळीआ (बहुवचन काळी स्त्रीयां)	
बार	बार	

Contrast of articulation and Manner
Apical v/s Retroflex.

तोल	टोल	ताट
सत	सट	
बात	बाट	
थाउ	ठाउ	
दर	डरु	
बेदु	मेद	
बे	मे	
कुळावा	फुळावा	
कुळावें	फुळावे	
धोई	ढोईं	
गंध	गडुं	
बीना	बीणा	

Contrast of modificatory features.

Contrast of voice v/s voicelessness and aspirate v/s lack of it will be given here. Such contrasts occur in all positions. Only contrast in initial position are given below

काणि	खान
कान	खानि
कानि	खानु
गडि (दुर्ग))	घड़ि
)	
गडु)	
चेरी	छेरी
जालु	झालु
जागि	झागि
जाला	झाला
जड़	झड़ , झडि झडि
तापे	थापे
तालु	थालु
दानु	धानु
डोर	ढोर
डंग	ढंग
डोलि	ढोलि
डालि	ढालि
पलु)	फलु
)	
पले (जेब में))	

ल+ उष्म या अनुनासिक

कलप (कल्पना)

कलप (समय)

बलदी

मलुक

मिलण

१

र + विराम् उष्म

वरत

अरथु

बिरखु

उ + विराम

रूड़उ

रूड़ा

रूड़ि

रूढ़ी

रूड़े

रूड़े

उष्म + विराम

मसत

चसा

चसै

मध्य संयोग

सब प्रकार के गुच्छ जो कि शब्द की अन्तिम स्थिति में आते हैं वे अन्त:स्वर की स्थिति में भी आते हैं। हर प्रकार के व्यंजनों के गुच्छ आते हैं। व्यंजनों के पश्चात् आने वाले स्वरों पर किसी प्रकार का कोई भी प्रतिबन्ध नहीं है। यह शब्द प्राय: व्यंजन गुच्छों से आरम्भ होते हैं। व्यंजन गुच्छों से ही इन का अन्त होता है। इन में मारफीम की सीमायें भी हैं। धीरे बोलने से इन में से प्रत्येक के मध्य में (अ) लगाना पड़ता है। यह वास्तव में पूर्ण गुच्छ है जब इन का प्रयोग किसी संदर्भ या सामान्य वार्तालाप में किया जाता है।

मध्य संयोग

ठद	उठदिआ
लण	तोलणि
रद	परदेसि
	परदेसी
न्त	अनन्त
टण	मेटण
	मेटणा

द्वित्व वर्णों के लिखने की परिपाटी गुरु वाणी में नहीं है ।

अन्त:व्यंजनात्मकता (दो का गुच्छ)

इओ	सड़िओहि
इआ	सिआणिआ
उअ	सुअसति
उआ	सुआह
उआ	सुआद
	दुआरा
ईअ	दबीअहि

अनुनासिक व्यंजन

अनुनासिक व्यंजनों के उच्चारण में वायु नासिका विवर में से हो कर गूंज पैदा करती हुई बाहर निकलती है । कोमल तालु नीचे झुका रहता है और जीभ इसके अधिक पिछले भाग को लगती है ।

(ङ०) यह अल्प प्राण , घोष , कंठय अनुनासिक व्यंजन है । दूसरे कंठय व्यंजनों की भान्ति इस के उच्चारण के समय जीभ का पश्च भाग ऊपर

को उठता है और अगला नीचे होकर थोड़ा सा गढ़ा पैदा करता है। यह शब्दों के आदि और मध्य में मिलता है परन्तु इस का प्रयोग न्यूनतम मात्रा में किया गया है।

(ञ) यह अल्प प्राण घोष तालव्य अनुनासिक व्यंजन है। दूसरे तालव्य व्यंजनों की मान्ति इस के उच्चारण के समय जीम का अगला भाग ऊपर वाले दांतों के अन्दर वाले मसूड़ों के पास कठोर तालु को लगता है। यह आदि मध्य और अन्त में मिलता है गुरु भाषा में आदि में केवल एक बार ही इसका प्रयोग मिलता है।

(ण) यह अल्प प्राण , घोष , मुर्धन्य अनुनासिक व्यंजन है। इसके उच्चारण के समय जीम का अगला भाग उल्ट कर दूसरे मुर्धन्य व्यंजनों से अधिक पीछे जा कर कठोर तालु के मध्य को कुछ दूर तक स्पर्श कर के दुसरे मुर्धन्य व्यंजनों से जीम की नौक नीचे के दांतों को ज़रा स्पर्श करती हुई बहुत ज़ोर और फटके के साथ नीचे को आती है। जीम की नौक के कठोर तालु को स्पर्श करने के पश्चात् मुड़ने की अवस्था दुसरे मुर्धन्य व्यंजनों से थोड़ी सी अन्तर वाली है। जो ळ और ड़ से मिलती है।

(न) यह अल्प प्राण , घोष , वर्त्स्य अनुनासिक व्यंजन है। इसके उच्चारण में जीम का अगला भाग पीछे को उल्ट कर उपरले दांतों के अन्दर वाले मसूड़ों को छूता है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है।

(म) यह अल्प प्राण , घोष द्वयोष्ट्य अनुनासिक व्यंजन है। दुसरे द्वयोष्ट्य व्यंजनों की मान्ति इस के उच्चारण के समय दोनों ओष्ट जुड़ कर खुल जाते हैं। परन्तु वायु मुख से निकलने के स्थान पर नाक में से निकलती है। यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है।

(ल) यह पार्श्विक अल्प प्राण , घोष , वर्त्स्य , व्यंजन है । इसका उच्चारण करते समय जीभ उल्ट कर ऊपर वाले मसूढ़ों को ` न ` की भान्ति स्पर्श करती है और वायु पक्षों से निकलती है । यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त में मिलता है ।

(ळ) यह पार्श्विक अल्प प्राण घोष मुर्धन्य ध्वनि है । इसका उच्चारण करते समय जीभ उल्ट कर ` ल ` की भान्ति ऊपर वाले मसूढ़ों को नहीं स्पर्श करती अपितु उल्ट कर कठोर तालु को लगती है और झटके से नीचे की जाती ` ण ` वाली अवस्था धारण करती है । यह शब्दों के मध्य में ही मिलता है ।

(ळ। ल) मुर्धन्य ळ वर्त्स्य ल का सशक्त विरोध सूचक है । परन्तु गुरमुखी लिपि में ळ लिखने के लिए कोई चिह्न नहीं है । प्राय: ळ का ल के पक्ष में शब्दों के आदि में लोप हो जाता है ।

लुंठित ` र `

यह लुंठित अल्प प्राण घोष वर्त्स्य व्यंजन है । इसके उच्चारण समय जीभ की नोक कठोर तालु के और ऊपर वाले मसूड़े के मध्य को शीघ्रता से थोड़ा सा स्पर्श करती है । यह शब्दों के आदि मध्य और अन्त सभी अवस्थाओं में मिलता है ।

उत्क्षिप्त ` ड़ ` (   )

यह उत्क्षिप्त अल्प प्राण घोष मूर्धन्य व्यंजन है । इसका उच्चारण करते समय जीभ को नोक को उल्टा कर नीचे के भाग को कठोर तालु को झटके के साथ कुछ दूर तक स्पर्श करते हुये वापस लाया जाता है । यह शब्दों के मध्य और अन्त में ही मिलता है ।

प्रातिपदिक

	आदि	मध्य	अन्त
क	कोइ	हुकमी	नानक
ख	खेह	मुखिआ	मुख
ग	गुरा	जुगंतरि	मारग
घ	घोर	घनघोर	दीरघ
ङ०	ङि०आनु	रङंण (रङे०)	-
च	चार	साची	सच
छ	छाइआ	किछउ	मलेछ
ज	जाणै	सहजि	पूज
झ	झोली	बुझाइ	बूझ
ञ	ञिआना	सिञाणि	जञं
ट	टचुं	तोटि	चोट
ठ	ठाक	उठि	पाठ
ड	डंफु	कुडिआर	कपड
ढ	ढालि	ढूढिमु	गलवढ़
ण	णाम	विहूणा	सैण
त	ताणु	सिमृति	अंत
थ	थापिआ	कथना	नाथ
द	दुख	हादरा	वेद
ध	धरै	अंधुले	सिध बुध
न	नर	सुनंति	सुन
प	पाईअहि	थापिआ	दीप
फ	फिरि	सिफति	लेफ
ब	बखसीस	दरबारु	सरब
भ	भालिआ	सभना	सभु
म	माइ	गुरमुखि	नादं

	आदि	मध्य	अन्त
य	यादि	बुगोयद	
र	राजानु	धरति	बार
ल	लिखि	बोलणु	अमुल
व	विदिआ	गावै	सेव
स	सचिआर	बखसीस	बखसीस
ह	हुकमि	कहै	पातिसाह

	द्वयोष्ठ्य	दंतोष्ठ्य	दंतय	वत्स्य	तालव्य	मुर्धन्य	कंठय	स्वर यंत्र मुखी
स्पर्श अल्पप्राण	प ब		त द		च ज	ट ड	क ग	
स्पर्श महाप्राण	ढ		थ		छ	ठ	ख	
अनुनासिक अल्प-प्राण	म			न	व	ण	ड	
अनुनासिक महा-प्राण	मह			न्ह				
पार्श्विक अल्पप्राण				ल		ल		
पार्श्विक महाप्राण				लह				
लुंठित अल्पप्राण				र				
लुंठित महाप्राण				रह				
उत्क्षिप्त अल्पप्राण						ड		
उत्क्षिप्त महाप्राण						डह		
संघर्षी				ल				
अर्ध स्वर		व						

रचनात्मक प्रत्यय

रचनात्मक प्रत्यय

उपसर्ग

अ+ (नकारात्मक)	अखंडु	अचेति	अथाह	अनाथ
	अगोचर	अविगत	अविनासी	
	अटल	अजाण	अडोलु	अथक
				अथकु
अति+ (बहुत)	अभिभउजल	अतिरसु		
	अधिक़	अधिआतम	अधिकार	
अण+ (नाकारात्मक)	अणहोंदा	अणजाणत	अणडीठा	
				अणनातिआ
अन+ (नकारात्मक)	अनादि	अनूपु	अनंतु	अनाहति
अप+	अपसर	अपमानु	अपराधी	
अभि+ (अधिक़)	अभिमान			
अव+ (बिना)	अवगुण	अवधू	अवतार	अवघटि
अउ+ (बुरा)	अउगुण	अउधूत	अउघट	

-(इस का प्रयोग अव के स्थान पर होता है)

अ (बिना)	अधाई		आचार	
उ	उदिआना	उतम	उतंगि	
ऊ	उभै	उची	ऊतम	ऊमी
उत	उतभुज			
उप	उपदेस			
स -(सहित)	सगोनी	सताणा	सफल	सभागी
सं	सपै	सपउ	संपटु	संतापु
	संगम	संसार		

क (बुरा)	कछोति	करूप		
कु (बुरा)	कुसुधा	कुचजी	कुरूपि	कुलखनी
दु (बुरा)	दुघट	दुतरु	दुबलि	दुलंभु
दुर (दुः) (बुरा)	दुरमति	दुराचारी	दुरजन	
नि+	निकौर	निकाला	निकटि	
	निडरू	निताणी	निमाणी	निधनिआ
निह+ (बिना)	निहकामु	निहकेवल	निहचल	निहफल
निर (बिना)	निरगुण	निरमलु	निमोलु	
नी+ (बिना)	नीधन	नीधरीआ		
परा +	पराकउताणा	परावै	परातमु	
बि	बिसमु	बिकट	बिकार	बिकाल
वि	विसमादु	विसमु	विकार	बिगुता
बे	बैरागी			
बे (फारसी) (बिना)	बेऐब	बेगाना	बेचारा	बेअन्त
				बेमुहताजु
वे (बिना)	बेचारा	वेतगा	वेदोना	वेपीर
				वेमारगि
बद (बुरा)	वदनावी	वदफैली	बदबखत	
सर (सिर)	सरकार	सिरकार	सिरताजा	

पर प्रत्यय

+ अक (वाला)	सेवक	गाहक	निंदक	जाचक
+इक (ि+क) (वाला)	साधिक	बधिक		जाचिक
+ आ	कथा	पोचा	विछोड़ा	फेरा
				गेड़ा
+वा (भाववाचक संज्ञा के लिये)	लेखा	वासा	वाजा	पछोतावा

६

+आई (भाववाचक संज्ञा)	कमाई	लड़ाई		
+ आका (वाला)	मोहाका			
आण। आन। आवण (वाला)	बधानु	डरावणा	डरावणी	
आरा। आरा। आवा	वरतारा	लेखारी	वरतावा	
इत (वाला)	सिंचित			
+ ई	फेरी	काती	सौफी	
+अट।ट	दुसट	भरसट		
	(वचन और लिंग सूचक प्रत्यय लगाकर)			
+त।द।ण	आवत	जात	जीवतिआ	सुतिआ
	जीवदिआ	मंगता	चलता	जाती
	जलदी	ढूंढती	चलती	धावत
	जाणदा	जागणा		
+तार (वाला)	करतार	दातार	भतार	

<u>भूत कृदंत के प्रत्यय</u>

+ आ	मूआ	जाता	फाथा	
+ ओ	भुलो	कीतो		
+इआ	मिलिआ	खोइआ	आइआ	मोइआ
	पीड़िआ			
+ ई	फाथी	बूड़ी	गई	चलाई
+ ए	भूले	बधे	पोड़े	जले माते
+ ईआ	सवारीआ			
+ ईआं	रोकीआं			
+ इओ	दिखाइओ	जपिओ	पाइओ	खोइओ
+ आवए	सुखावए			
+ आनिआ	सुखानिआ			

+ ता	सीता	कीता	जाता	परोता
+ ती	पीती	सती		
+ था	फाथा			
+ धा	वधा	पैधा		
+ ना । न	कीना	कीन		
+ नो । नी	कीनो	कीनी		
+ नै	कीनै			
+ लै	तजीअलै			
+ ओ	बुडो			

पूर्वकालिक कृदंत प्रत्यय

+ इ	उपाई	उतारि	आइ
+ इआ	आइआ		
+ ई	लाई	आई	
+ ए	उरधारे	मिले	
+ ०	पी	दे	

क्रियार्थक संज्ञा के प्रत्यय

+ रा । न	नावण	खाणा	पीअण	मिलण
				पीसण
	बंधन	भरन	सिमरन	
+ णा । ना	बुझणा	चड़णा	भवना	कथना
+ राो	नावराो	जाराो		
+ रा । नु । वणु	बोलणु	हसणु	नावणु	कथनु
	कहनु	कहावणु		

णि । नि । वणि	चलणि	आवणि	कथनि	
नी । णी	कथनी रहणी		करणी	
नै । वणो	कथनै	आवणै	जावणै	
नै । णं	कथनै	करणं	कहणं	

तद्धित प्रत्यय

+ अईआ	रमईआ			
+ अउ	मोटउ	अखटउ	निरमलउ	
+ असि	तैरसि			
+ अज । ज	पंकज	अडज	जेरज़	सेतज
+ अट । ई । उ	खसटो	फोकट	लपटु	सुहटु
+ अठ । उ । ई	मागठ	भागठु	सठी	
+ णा । अण । आ । ए उ । उं	चिलकणा	सोहणे	पंखणु पंखणुं	
+ अणि । इणि	कामनी	मंडारणी	सुहागणी	कामणी
+ अणिआरि । ई	कामणिआरि	कामणिआरी		
+ अम । ई	एकम	पंचमी	सपतमी	दसमी
+ अर । अरि	डुबर	मुरारि		
+ अल । उ	सीतुल			
+ मही अलि	मही अलि			
+ अड़ि	कीचड़ि			
+ आ	पिआसा	सूचा	जुठा	मोटा सोभा
+ आउ । आउआ	दीवा	गडीआ		
	वटाउ	वाटाउ	पघाउआ	
+ आइआ	विहाइआ			

+ इआइरा	सराइरा		
+ आइण । इ,उ	पंचाइण	पंचाइणि	चंदाइणु
+ आइ। आईआ। इआई । इआईआ			
	कमाई	वडाई	वडाईआ चतुराई
	लपटाई	चंगिआई	बुरिआई
	बुरिआईआ	कमाई	
+ आण । आन	(विकारी प्रत्यय लगा कर)		
	किरमान	किरसाणु	चिराणा
			रबाणोऐ
	लोकाणीआ	लोकाणी	कुठाराणे
	पुरबाणिआं	हिंदवाणीआ	मटिआणी
+ आगर	मुखागर		
+ आर। इआर	(विकारी प्रत्यय लगा कर)		
	जुआर	वणजार	लाहारु मनीआरु
	कुमिहार	जचिआर	अंधिआरा अंधिआरी
	औभिआर		
	गवार	गावार	गावारा
	भंडार		
	मंभारि	मभारा	मभारी
	जंदारू		
	जुआरी	भेखारी	जोहारी
	लुहारी	बाजारी	बजारीआ
+ आरनि	बनजारनि		
+ आल	(विकारी प्रत्यय लगा कर) दइआल		
	रसाल	किरपाला	रसीला दइआलि
	रसालु	किरपालु	रीसालु रसाले
			भीहाले

+ आवल	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	मोहावलि	मोहावला	रंगावले	रंगावलो
+ आला	हाथाला	ग्रोआला		
+ आली	सुखाली	दुखाली		
आले	दोआले			
+ आवल । T	हरीआवल	हरीआवला	हरीआवले	
आवले				
+ आवस	तपावसु			
आवा । आवी	सचावा	सुहावी		
+ इ	दानि			
इत	मोहित			
+ इल	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	गोइलो	गोइलि	सोहिला	
+ ई	मखी	बाड़ी	आरती	माकुरी
	तंबोली			
	संसारी	संतोखी	भंडारी	
			धिआनी	गिआनी
	मुहताजी	बदी		
	दोसती	किरसाणी	दरवाणी	दरवेसी
+ ईआ । ई ऐ	तीआ	रसीआ	त्रिीआ	तीऐ
ईला । आ । ऐ	रंगीला	रंगीले		
+ ईन । ईण	मलीन	कुलीनु	मलीणु	
+ उ । अउ	काचउ		(काच + अ + उ)	
+ उर । अउर	उल । अउल (विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	ठगउरी	ठगउली	देहुरा	देहुरी
			बाकुल	
	रगुलं	रंगुला	अंधुला	रंगुले
	बेड़ुला	हसुंला	बगुला	बगुल
			मोनुली	

उ आ	मनुआ	जरुआ	नटुआ	
उ	उउरु	हिंदु	आगु	
+ एर । एरू	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	चगेरा	वडेरा	बहुतेरा	अधेरी
	वडेरे	वडेरी	घणेरी	घनेरे
	चगेरिआ	घणेरीआ		
	अधेरू	अधेरे	अधेरीआं	
	पखेरु			
+ एल	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	नवेल	वहेल	सुहेल	दुहेला
	सहेली	दुहेली	इकेली	
	सुहेलेले	सुहेले	सहेलीआ	नवेलओ
+ ऐ । अवै	पहिले	पजवै	सतवे	
+ ऐनी	सखेनी			
+ औट	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	जगोटा	जगोटी		
+ ओ	गाखडो			
+ ओली	मडोली			
+ ओवा	संसारोवा			
+ साल	टकसाल	धरमसाल		
+ स	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	केसि	केसा	केसी	केसे
			तेसा	
	जेसी	तैसो	जेसे	
+ सी । असी	तपसी			
+ हर	धवलहर			
+ हरा । अहरा	दसाहरा			

+ हार । हारा । हारे । हारू । हारो

+ हार । हारा । हारे । हारू । हारो				
	उसारणहार	सिरजणहार	खवारणहारा	
	सिरजणहारा	बखसणहारु	उखणहारू	
			हडावणहारो	
	देखणहारो	सिरजणहारो	गावणहारे	
			काटणहारे	
+ हारी । हारैं । हारेवा । हारिआ ।				
	चालणहारी	थापणहारैं	रोवणहारेवा	
	तारणहारिआ			
+ हीण । हीन ।	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	करमहोण	करमहीणु	भगतिहीणी	
	गुणहीणु	भगतिहीनु	गिआनहीनं	
क । अक । इक । उक । का । की				
	इंचक	निरमोलक	पाइक	दीपक
	मटुकी	टिका	धा गक	जोतकी
+ कर । अर । कालु	करणीकरू	दिनीअर	खेकालु	
+ करण	अहंकरणु			
+ कार	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	जैकार	धिकार	अहंकार	धुनिकार
	धुंधकारि	ओअंकारि	ओअंकारू	
	हितकारु	अहंकारी		
ज । ए	मातीजे			
त । अत	सखाता	खिंथाता	ममता	मिठतु
+ तण । तणि । तणु	कउउतणु	बालतणि	भोलतणि	
			सुरतण	
+ पणि	अहपणि			

+ तम	उतम	ऊतम	प्रीतम	
+ तार	भवतार	लिवतार		
+ थि	चउथि			
+ धर	धरणीधर	धरणीधरा	धरणीधरु	
+ हर । अर	सरीअरु	ससीअर	बिसीअरु	पैओहरी
+ धारी	भेखधारी	म्लुधारी	माइआधारी	
			कलाधारी	
न । अन	कीरतनु	लालन		
+ नि । अनि	बैरागनि			
+ नाल	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	सहनाली	हटनाले		
+ प (अप । एप	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	सिआणप	सिआणपा	बंधप	राडेपा
	बोढेपा			
+ पुर	धरमापुरि			
+ बर । वर । वड़	तरवर	गैवर	हैवर	गिरवड़ी
				गहबरा
+ म । इ	नउमी			
+ मत	मैमत			
+ मान	वरतमान			
+ मे	गगनमै			
+ अर । र । ड़ । ड	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	जीअरा	जीअड़ा	जीअरे	जीअड़े
	जीअड़िआ			
	जेवरी	जेवड़ीआ	जेवडा	

र (आर । ण । न । ड । त (सर्वनाम के साथ विकारी प्रत्यय लगा कर)

	मोर	मेरा	मेरो
	मेरी	मेरीआ	मेरे
	मोरे	मेरें	मेरिआ
	मेडा	तेडा	तेरओ
	तुमारा	तुमारी	तुमारे
	तुमाती	तुहारीआ	आपणा
	अपणा	आपणो	अपणी
	अपणे	अपणो	आपणिआ
+ वाह	रथवाहु		
+ वड	केवड , तेवड		
+ वाण	(विकारी प्रत्यय लगा कर)		
	मलवाणी	घुमणवाणी	जखाणा

वत । वंत । वंड । विद्ववत । धनवंत । धनवंता । गुणवंती

	गुणवंतिआ	बलवंडा	
वार । आ	आवणवार	अंतोवार	चलणवारा
	सक्तवार	मतवारो	
काल । वार	(विकारी प्रत्यय लगा कर)		
	मतवाले	मतवाला	कलवाली
	सक्तवार	मतवार	
वाड़ा । वाड़ी	नगवाड़ा	नगवाड़ी	
वेह	(विकारी प्रत्यय लगा कर)		
	तेवेहा	तेवेहो	

ड़ — (यह स्वअर्थ प्रत्यय है इसके साथ एक और प्रत्यय लगाकर और इसके पूर्व जो यदि व्यंजन हो तो ` अं ` और लगाकर और विकारी प्रत्यय लगा कर दोहरे प्रत्यय प्रयोग किये हैं) ।

	साचड़ा	सचड़ा	सचड़ाउ	
	बकुंडा	कुवाटड़ी	कालंडी	
	थोड़डे	सवाइड़ीए	सलोनडीए	
	इआनड़ीए	नोदड़ोए	बालडीर	
	बाहडीआह	कतडीआह	माडंडीऐ	
	असीसडोआ	सहेलडी	मणकड़ा	
	साहुड़ी	थोडड़िआ	पेईअड़े	
	पेवकडें			
	बकुंड़ा	आपनडा	आपनडें	
	तिानाड़ी	तिनाडीआह		
+ अह (कृत)	गिरफतह			
+ आण	गुदराणु			
+ अंद	(विकारी प्रत्यय लगा कर)			
	दिहंद	सिरंदा	सिरंदिआ	
+ आना	मसताना	गेबाना	तुआना	खसमाना
+ आर	मुरदार			
+ ई	दोसती	दोसी		
+ सतान	हिन्दुसतानु	हिदुस्तान		
+ खाना	बदीखाना			
+ खोर	हरामखोर			
+ गर	बाजीगर	सउदागुरी		
+ कार	बुंदकारू			

+ गार	गुनहगार ,	परवरदगार	परवरदगारी
+ गीर	दसतगीर		
+ गोज	कुढरगोज		
+ गी	बंदगी	वैदगी	
+ च	सराइचे	कुलीचा	
+ दार	सिकदार	सिकदारां	रिदारू दुनीदार
+ कारी	सिकदारी		
+ बंद , वंद	कमरबंद	तेगबंद	
+ बखत	दानसुबंदु	दरदवंद	बदबखत
+ वान	मेहरवान		
+ बाज	तबलबाज		

विभक्तियां

अकारान्त(पुल्लिंग)

कर्ता कारक

एक वचन

एक वचन	बहुवचन
० शुन्य रूप	० शुन्य रूप
आ	आ
उ	आं
इ	इं
ऐ	ईं
औ	
ओवा	
०(म्)	

कर्म कारक

उ	० शुन्य रूप
ऐ	आ
औ	आं
ओ ।उ(हरिनामो)	अहि
	इं
	ऊ

	एकवचन	बहुवचन
करण कारक		
	इ	शुन्य
	ईं	ईं
	एं	इं
	ऐ	अहु
		अह

सम्प्रदान कारक		
(उ)(उ+ओ)	०	ई
	आ	आं
	इ	
	ऐ	

अपादान कारक		
(ओ-ओ)	इ	अहु
	ओ	ई
	ओ	
	अहु	
	आहु	

अधिकारण कारक

	एकवचन	बहुवचन
	आ	० शुन्य
	इ	इ
	ईं	ईं
	ए	ओ
	एं	अइ
	अहि	अहि

सम्बन्ध कारक

	शुन्य	०	० शुन्य
		ईं	आ
		उ	आं
		ऐ	इ
		अहि	ईं
		सय	अइ
का	की	के	नि
दा	दी	दे	

सम्बोधन कारक

० शुन्य
आ

अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा

कर्ता कारक

एकवचन

० शून्य रूप	नानक सचु कहे वैनती सचु मिले गुण गावणिआ । माफ असटपदीआं
उ	करमु होवै सतिगुरू मिले बुझै वीचारा - आसा काफी घरु ८, असटपदीआं-६
	गली हउ सोहागणि भेणा कंतु न कबहुं मिलिआ - आसा - असटपदीआं
इ	फुरमानि है कार खसमि पठाइआ । तबलबाज वीचार सुणाइआ - ६
ऐ	सिरि सिरि करनेहारे साजे - मारु सोहले-४ , माफ पउड़ी
ओवा	बाबा आइआ है उठि चलणा अध पधे है संसारोवा ।
म्०	राजं रूपं, रंगं , मालं जौवनु ते जुआरी

बहुवचन

० शून्य रूप	बारह महि रावल खपि जावहि चहु छिअ महि सन्यासी परभाती चउपदे स० १६
आ	जो सउ चंदाउ गवहि सूरज चड़हि हज़ार- ऐते चानण होदिआ गुर बिनु घोर अंधार । असटपदीआ
आं	साहां सुरति गवाइआ रंगि तमासे चाइ बाबर वाणी फिर गई कुइरु न रोटी खाई । आसा-असटपदीआं
इ	पसरी किरनि रसि कमल बिगासे । ससि घरि सुठसमाइआ परभाती
ईं	मोरी रुणफुण लाइआ भैणे सावण आइआ । वडहंस स०३

अकारान्त पुल्लिंग

कर्म कारक

एकवचन

उ — नाउ पडीऐ नाउ बुझीऐ गुरमती विचारा । माझ पउडी-३

उ ।ओ — हरिनामो वणंजडिआ रसि मोल अपारा राम । आसा-कृत घरु-१

उ — साकतु कूडे सचु न भावै । दुबिधा बाधा आवै जावै ।
माझ - असटपदीआं-१।५

इ — नानक रसनि रसाए राते रवि रहिआ प्रभु सोई ।
परभाती-असटपदीआं १।५

ई — सो गुरु सो सिखु कथीअले सो वैदु जि जाणै रोगी ।
गुजरी । असटपदीआ-१।५

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ । आसा स०३५

कूडु बोलि मुरदारु खाइ । अवरी नो समझावणि जाइ ।
माझ स०७

ओ — हरिआ कीआ संसारो

बहुवचन

शून्य — गुण गावै सुख सहजि निवास
बंधन काटि मुकति घर आवै

आ — पुता देखि बिगसीऐ नारी सेज भतारि । दखणी ओअंकारु
सिधा सेवनि सिध पीर ।

आं — गुणहां बखसनहारु सबदु कमावहि । आसा काफी १६।६

आहि — अपराधी वुणा निवै जो हंता मिरगाहि । आसा-वार-स०१४।१

ई — आपि तरै पितरी निसतारि । गउड़ी - गुआरेरी ६।३

करण कारक

एकवचन

इ	लिखिआ लेखु न मेटै कोइ गुरमुखि मुकति करावणिआ माझ असटपदीआं
ई	अमृत नामु सदा सुखदाता गुरमुखो मनि वसावणिआ । माझ मन मेरे गुरबचनी निधि पाई ।
ए	हुकमे आवै हुकमे जाइ । आगै पाछै हुकमि समाइ । गउड़ी । गुआरेरी गुर के सबदे आपु पछाणै ।
ऐ	नानक कवै रतीआ पुछहि बातडीआह ।

बहुवचन

० शुन्य	मछुली विछुंनी नैण रुंनी जालु बधिकि पाइआ । आसा छंत घरु ३।३
ई	अखी वेखे जिहवा बोले कनी सुरति समाइ । माझ । वार । स० ४ पैरी चलै हथी करणा दिता पैनै खाइ ।
ई	न भीजै रूपी माली रंगि
अहु	राति दिहै के वारि धुरहु फुरमाइआ - माझ पउड़ी-१५ हरणारवसु ले नखहु बिधासा
अह	निरगुण रामु गुणह वसि होइ ।

अकारान्त पुल्लिंग

सम्प्रदान कारक

एकवचन

०	बलिहारी गुर आपणे
	मिलि प्रीतम सुख पाइआ
आ	बगुले ते कुनि हसुला होवे
	जे तुं करहि दइआला
इ	मनु दीआ गुरि आपणै
	खिया गहि मनु सतिगुरि दीआ
ऐ	सखमै मावे सा करे
	नावै बलि जाउ
	जे रतु लगै कपड़े

बहुवचन

आं	नागां मिरगां महीआं सरीआं धरि धनु होइ
ईं	आपि तरे पितरी निसतारे ।

अकारान्त पुल्लिंग

अपादान कारक

एक वचन

इ	त्रै गुण मेटै सबद बसाए ता मनि चुकै अहंकारु । अंधुले नामु विसारिआ मनमुखि अंधु गुबारु ।
ओ	अविगतो निरमाइलु उपजे निरगुण ते सरगुणथीआ
औ	मुहौ कि बोलण बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु
आहु	भली सरी जि उबरी हउमै मुई घराहु । दूत लगे फिरि चाकरी सतिगुर का वेसाहु ।
खसमहु	खसमहु घुथीआ फिरहि निमाणीआ । ७२।५
कालहु	पाप की जंञ लै कालहु धाइआ । ७२२।२२

बहुवचन

ई	लोइण रते लोइणी कंनी सुरति समाइ
अहु	बिरधि भइआ जोबनु तनु खिसिआ । कफु कंठ बिरुधो नैनहु नीर ढरे । १०१४।६

व्यंजनांत

अधिकरण कारक

एकवचन

इ — सबदि रंगाए हुकमि सबाए । सची दरगह महलि बुलाए । १०३१।१८
सतिगुर सबदि रहहि रंगि राता
निजघरि वासा तह मग न चालणहारा । १२७५।१७

ईं — हुकमी वजहु लिखाए आइआ जाणीऐ । ४१६।२७

ए — मनुआ डोले नरके पाइ । ८०६।३

ऐ — पहिलै पिआरि लगा थण दुधि । दूजै माइ बाप की सुधि ।
निहचलु कोइ न दिसै संसारै २२७।१०

अहि — मनमुख तोटा नित है भरमहि भरमाए ।
मन सिउ सुझि मरै प्रभु पाए मनसा मनहि समाइ । ३५३।२६

ही — जब क्रिया विशेषण ०ही० अधिकरण कारक में प्रयोग किए की संज्ञा के पश्चात् आए तो प्राय: इस कारक का अन्तिम चिह्न (इ) उड जाता है । जैसे :-

घर ही — गुरपरसादि ` घर ही ` परगासिआ
घट ही — मनु मंदरु तनु वेस कलंदर घट ही तीरथ नावा

घरि के स्थान पर घर ही
घटि के स्थान पर घट ही

परन्तु यदि ही - एकारान्त अधिकरण कारण में आए तो इस विभक्ति का लोप नहीं होता । जैसे - घरे ही १४१२।१८ उदासीआ घरे ही वुठी
कुडिहं रंनी घंमी

अधिकरण कारक

बहुवचन

० तीरथ -	इकि तपसी बन महि तपु करहि नित तीरथ वासा । ४१६।४
चरण -	जाकी वासु बनासपति सउरे तासु चरणु लिवरहोरे ।
इ हथि -	जिसु हथि जोरु करि वेखै साइ । ७।१५
	सतिगुर हथि निबेडु झगडु चुकाइआ
ई घरी -	जिन्ह के बके घरी न आइआ तिन्ह किउ रैणि विहाणी । ४१८।६
मसाणी -	इकन्हा पेरण सिर खुर पाटे इकन्हा वासु मसाणी । ४१८।५
गुरचरणी -	गुरचरणी सेवकु लगा । १११०।१०
अह गुणह -	नानक अवगण गुणह समाणे ऐसी गुरमति पाई ।
अहि	गुण गुणहि समाणे मसतकि नाम नीसाणी । १११२।१४
औ	बनबनौ - हउ बन बनौ देखि रही । ४३७।५
	जब संज्ञा की पुनरुक्ति हो तो अन्तिम के सा[थ] `औ` का प्रयोग किया जाता है ।

सम्बन्ध कारक

एकवचन

०	गुर किरपा ते हुकम पछाणै । १०२७।२०
	गुर पूरे साबासि है काठे मन पीरा । १०११।२
	पहिले पिआरि लगा थण दुधि । दूजे माह आप की सुधि
इ	राजिरंगु मालिरंगु रगि रता नचै नंगु ।
ई	चिते अंदरि समु को देखि नदरी हेठि चलाइदा ।
	हुकमी बाधे पासै लेलहि ।
उ	काम क्रोध फुटे बिखु माट
ऐ	खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगे दाणे
अहि	धन पिरहि मैला होइ सुआमी आपि प्रभु किरपा करे । ४३६।१
स्य	सागरं संसारस्य गुरपरसादी तरहि के
	आतमं स्त्री वास्व देवस्य जे कोई जानसि भेवा
दे	जाति दे किआ हथि सचु परखीऐ । महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ।
का	समना का दरि लेखा सचै छूटसि नाम सुहावणिआ
के	हुकमु पछाने सु हरि गुण वखाणै । गुर के सबदि नीसाणै ।
की	अपने ठाकुर की हउ चेरी ।
के	चरण गहे जग जीवन प्रभ के हउमै मारि निबेरी ।

सम्बन्ध कारक

बहुवचन

आ	भगता तै सैसारीआ जोड़ु कदे न आइआ । १४५।२० ।
अह	सुलिर नाथह नाथ तु निधारा आधारु
०	सतं सभा गुरु पाईऐ मुकति पदारथु धेनु ।
अनि	प्रणवति नानक दासनिदासा जगि हारिआ तिनि जीता ।
ई	सुखु मांगत दुखु आगल होई । सगल विकारी हारु पराेई ।
	नानक सबदु वीचारीऐ पाईऐ गुणी निधानु ।

<u>सम्बोधन कारक</u>

एकवचन

०	मन , नानक
आ	नानका , सजना
	पुरखा , मित्रा

330060

आकारांत पुल्लिंग

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता कारक	0 ऐ औ ए	ई ए इआ
कर्म कारक	0 उ ए ें ऐ े औ ो	ए (े)
करण कारक	इ ि ऐ े	
सम्प्रदान कारक	ए े	इआ
अपादान कारक	इअहु	
अधिकरण कारक	इ ि ऐ े	ई इं ी ी ऐ े

	एकवचन	बहुवचन
सम्बन्ध कारक	ए ऐ	
सम्बोधन कारक	० (शून्य) ए इआ	इहौ

आकारान्त (पुल्लिंग)

	विभ०	एकवचन	विभ०	बहुवचन
कर्ता कारक	०	करता , गुणदाता	इं	कुतीं
	ए	राजे	ए	कुते , राजे
	ऐ	करते , दाते	इआ	वणजारिआ
	ओ	गुणदातो , दातो		
कर्म कारक	०	दाता	ए	दाते , मंगते ,
	ए	रसीआ		कुते ,
	ऐ	पासै करते		वणजारे
	उ	गदहु		
	ऊ	बछरू		
	ओ	वराजारो		
करण कारक	इ	बिरहि		
	ऐ	माणे , दीवे		
सम्प्रदान	ए	कुते	इआ	चाटड़िआ
			ां	रसीआं
थ थ				
अपादान कारक	इअहु	तोइअहु चसिअहु	-	

	विभ०	एकवचन	विभ०	बहुवचन
अधिकरण	इ	बोहिथि	इ इं	सउदी ,खाती
कारक	ऐ	फले यवै		सउदीं
			ऐ	टोवें
सम्बन्ध कारक	ए	करते, दाते	-	
	ऐ	साचै		
सम्बोधन	०	करता	इहो	वणजारिहो
कारक	ए	बाले , दातें , पांडे		अंधिहो
	इआ	वणजारिआ		

इकारान्त (पुल्लिंग)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	० शुन्य	
कर्म	० शुन्य	
अधिकरण	०	
सम्बोधन	ए े--	
सम्बन्ध	०	

ईकारान्त (पुल्लिंग)

कर्ता	० शुन्य इर	० शुन्य ए े- ई आ
कर्म	० शुन्य	० शुन्य
करण	० शुन्य	
सम्प्रदान	०	वा वां

	एकवचन	बहुवचन
अपादान		ए े
अधिकरण		
सम्बन्ध	0 शुन्य इ ि	आ
सम्बोधन	0 शुन्य	हो

इकारान्त (पुल्लिंग)

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
कर्ता	०	हरि , रवि		
कर्म	०	दधि		
अधिकरण	०	जलनिधि		
सम्बोधन	ए	पते , हरे		
सम्बन्ध		हरिजसु , हरिचरणो		

१

ईकारान्त (पुल्लिंग)

कारक	वि०	एकवचन	विभ०	बहुवचन
कर्ता	०	गिआनी	०	वापारी, जोइसी
		घिआनी	ए	वापारीए
			ई	संतोखीई
			आ	सत्रीआ
कर्म	०	पाणी	०	वापारी
				हसती
करण	०	पाणी		
सम्प्रदान	०	अपराधी	आ	संतोखीआ
			आं	संतोखीआं
अपादान			ए	कवे
अधिकरण				
सम्बन्ध	०	हुकुमी	आ	प्राणीआ
		पाणि		मनमुखीआ
सम्बोधन	०	गिआनी	हो	भाई-हो

उकारान्त पुल्लिंग

	एकवचन		बहुवचन
कर्ता	o	शून्य	अ
	औ		ऐ
कर्म	o	शून्य	अ
	औ		ऐ ँ
			व
करण	इ		
सम्प्रदान			- व
			- अ
अपादान	- वहु		
	- अहु		
अधिकरण	ऐ	ँ	ई
	ए	ए	
	इ		
सम्बन्ध	o	शून्य	- वा
	अ		
	-वि		
सम्बोधन	o		

उ कारान्त पुल्लिंग

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
कर्ता	0	मउ, हिआत	आ	जीअ
	औ	काओ	ऐ	मै
कर्म	0	पसाउ , पिउं	अ	घिअ , जीअ
		अमिउ	ऐ	सै
			- व	थाव , काव , नाव
करण	इ	घिइ		
सम्प्रदान			- व	नाव
			- अ	जीअ
अपादान	बहुं	थावहु, नावहु		
	अहु	जीअहु		

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
अधिकरण	ऐ	मै	ई	थाई , पाई ,
	ए	ठाए		ठाई
	इ	ठाई , जीइ , चाइ		
सम्बन्ध	०	मउ	वा	थावा
	-वि	ङवि		
	अ	प्रिअ		
सम्बोधन	०	प्रिउ		

उकारान्त

कारक	एकवचन		बहुवचन	
कर्ता	०	(शून्य)	०	(शून्य)
कर्म	०	शून्य	आ	
करण	०	शून्य		
सम्बन्ध		शून्य		

ऊकारान्त

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
कर्ता	0	हिंदु , गुरु ,कुगुं	0	वाटाऊ , हेरू
कर्म	0	जनेऊ ,डुरू, दारू , कुंगू	आ	पधाऊआ
करण	0	कुंगू		
सम्बन्ध	0	गुरू		

(अकारान्त) स्त्रीलिंग

कारक	एकवचन		बहुवचन
कर्ता	0	शून्य	ई
	-	आ	
कर्म	0	शून्य	आ
	-	ही	आं
			अडी (आह)
करण			ई
			ईं
			ोईं
सम्प्रदान	0	शून्य	
अधिकरण	0	शून्य	
	ऐ	ै-	
सम्बन्ध	ऐ	ै	
सम्बोधन	0	शून्य	
	ए		

(अकारान्त) स्त्रीलिंग

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
कर्ता	0	साधन , धन ,	ईं	गाली
		जीम , महल		
	आ	साधना , सैजा		
कर्म	0	धीरक, बखसीस, बात	आ	गला
		कपास	आं	गलां
	डी	सजड़ी	अडी, आह	बातडीआह
करण			ईं	बाती, गली
			ईं	गलीं
			ईं+ईं	गलीईं
सम्प्रदान	0	धन		
अपादान	अहा	कपाहहु		
	- औ	जीमौ		
अधिकरण	0	सैज		
	ऐ	कारै , जीमै		
सम्बन्ध	ऐ	हिवै		
सम्बोधन	0	धन		
	ए	मैणे		

६

आकारान्त स्त्रिलिंग

कारक	एकवचन		बहुवचन
कर्ता	0 उ	(शून्य)	
कर्म	0	(शून्य)	
करण	0		
सम्प्रदान	0		
अधिकरण	0		
सम्बन्ध	0		
सम्बोधन	0		

इस में बहुवचन का प्रयोग नहीं मिलता ।

आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
कर्ता	०	जिह्वा माइआ निंदु		
कर्म	०	दुविधा , विदिआ तृसना , दइआ		
करण	०	जिह्वा रसना		
सम्प्रदान	०	जिह्वा , जिहबा		
अधिकरण	०	दुविधा, तृसना , निंदा , जिह्वा		
सम्बन्ध	०	जिह्वा, तृसना		
सम्बोधन	०	काइआ		

गुरु भाषा में आकारान्त स्त्रीलिंग केवलएकवचन में प्रयोग किए गए हैं।

इकारान्त स्त्रीलिंग

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	०	ई
कर्म	ई	ई ईं
करण	० ई	ई ईं
अधिकरण	० - ई	ई

२

इकारान्त (स्त्रीलिंग) संज्ञा

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
कर्ता	०	अगनि , दुरमति	ई	अगनी , दाती मती , लहरी
कर्म	इ	रजाइ	ई ईं	मती , लहरी मतीं
करण	० ई	गुरमति अगनि अकली मती अगनी गुरमती	ई ईं	मती दातीं
अधिकरण	० ई	रजाई , मति अगनी	ई	दाती

ईकारान्त (स्त्रीलिंग) संज्ञा

कारक	वि०	एकवचन	वि०	बहुवचन
कर्ता	०	नारी, गुरबाणी, माड़ी, सखी	०	सखी
	ऐ	मोहणीऐ	आ	मोहणीआ, सखीआ माधाणीआ माडीआ
कर्म	०	साखी, बाणी, माधाणी चोरी , मेदनी	०	खाणी, बाणी
			आ	माडीआ, मणीआ
	इ	चेरि	आं	गलीआं
करण	०	गुरबाणी		
सम्प्रदान	०	इंद्री	आं	मछीआं
अधिकरण	०	दाड़ी	ई	पुरीई
	ऐ	माड़डीऐ	ऐ	ढाढीऐं
सम्बोधन	०	सहेली, सखी	हो	सखीहो
	ऐनी	सखेनी		सहेलडीहो
	ए	सखीए		

ईकारान्त स्त्रिलिंग

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	0 ऐ	0 -ं आ
कर्म	0 इ	0 आ - आं
करण	0	
अधिकरण	0 ऐ	इँ ऐ
सम्बोधन	0 ऐवी ए	हो - ए

उकारान्त स्त्रीलिंग

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्म	0	
करण	0	

ऊकारान्त स्त्रीलिंग

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	0 (गऊ)	
कर्म	0	

कर्ता कारक का ` उ ` चिह्न संस्कृत के औ से विकसित या विकृत रूप है।

कर्ता कारक एकवचन का ` इ ` चिह्न संस्कृत के ` एन ` रूप से विकसित या विकृत रूप है।

कर्ता कारक बहुवचन शुन्य रूप। यह रूप संस्कृत का कारक चिह्न अस् (अ:) है। विसर्ग के लोप के पश्चात ` अ ` रह जाता है तथा संस्कृत के अकारान्त प्रतिपदिक के साथ मिल कर आ हो जाता है। परन्तु प्राकृत और गुरु भाषा में अकारान्त व्यंजनांत हो गया जो बहुवचन का ` अ ` चिह्न जुड़ने पर भी व्यंजनांत ही रह गया।

कर्म कारक। संस्कृत में पुल्लिंग (संज्ञा) के लिए कर्ता कारक और कर्म कारक में भिन्न भिन्न चिह्न हैं। परन्तु न:पुसिकलिंग कर्ता कारक और कर्म कारक के चिह्न एक रूप के है। प्राकृत और गुरु भाषा में नपुंसक लिंग का प्रयोग नहीं है। परन्तु कर्ता और कर्म कारकों में समान चिह्न का लक्षण बना रहा। इस लिए गुरु भाषा में कर्ता कारक और कर्म कारक एक वचन (उ) अन्त हो गई।

प्रोफेसर साहिब सिंह

करण कारक : एकवचन

गुरु भाषा का ` इ ` प्रत्यय संस्कृत ` एन ` से जो कि प्राकृत में ` एण ` हो गया और अपभ्रंश में ` इ , - ए ` बन गया से विकसित जान पड़ता है ।

(दुनी चन्द)

१ अधिकरण कारक एकवचन	गुरु भाषा का ` इ ` रूप संस्कृत ` ए ` से विकसित हुआ जान पड़ता है। (स० गृहे - अप० घरि गुरु भाषा घरि) गुरु भाषा का ` ए ` रूप संस्कृत के ` क ` प्रत्यय से विकसित हुआ है। संस्कृत द्वारके -दुआरए गुरु भाषा का ` ए - ) रूप संस्कृत के ` क ` प्रत्यात द्वारके आदि रूपों से निकले हैं।
२ अधिकरण कारक बहुवचन	जब संज्ञा की पुनरुक्ति हो तो दूसरी के अन्त में ` ी ` लगाया जाता है। जैसे बनबनी
(ई)	संस्कृत में अकारान्त संज्ञा का सप्तमी विभक्ति का बहुवचन का रूप सु-षु - लगाकर बनाया जाता है जैसे गृहेषु , पुत्रेषु , इस एषु के स्थान पर प्राकृत में ऐसु हो गया। जैसे पुतेसु अपभ्रंश में करण कारक बहुवचन के अनुसार ` एस ` के स्थान पर ` एहि ` हो गया। जैसे पुतहि। एहि का दूसरा रूप ` ई ` गुरुबाणी में मिलता है। स० गृहेषु से प० घरी।
सम्बोधन एकवचन	व्यंजनांत संज्ञा के अन्तिम व्यंजन के लोप हो जाने के कारण यदि संज्ञा स्वरान्त भी हो जाए तो भी इसी स्वर युक्त रूप को ही बिना कोई और कारक चिह्न लगाए प्रयोग किया है। जैसे अउघु , माधो।

१-२ दुनी चन्द।

लिंग

गुरु नानक की भाषा संयोगात्मक भाषा है। इस लिए गुरु जी की भाषा में लिंग की पहचान करने के लिए विभक्ति प्रत्यय को देखना पड़ता है। जैसे गुरु भाषा में कर्ता कारक एक वचन पुल्लिंग बनाने के लिए (ु) का प्रयोग किया जाता है।

प्रातिपदिक जैसे :- (ु) पुल्लिंग एकवचन का चिह्न

कुइर	कुइरु	४१७।१३
सतिगुर	सतिगुरु	४१८।२२
दातार	दातारु	२।७
इसर	इसरु	६।१०
चंद	चदु	१३।१
निरजंन	निरंजनु	२।११
निरंकार	निरंकारु	८।७
लोक	लोकु	१४।६
कूड़	कूड़ु	१५।१४
कुटब	कुटंबु	१३६।१३

(स्त्री लिंग) (व्यंजनांत प्रातिपदक) (निर्विभक्तिक) स्त्री लिंग का चिह्न अकारान्त

साधनु	साधन	१०१५।१५
नीदु	नीद	६०।१०
मीखु	मीख	७६२।२२
जीभ	जीभ	१०२३।११
महलु	महल	१०८८।१०
पीड़	पीड़	४३८।२२

गुरु भाषा में स्त्रीलिंग एकवचन संज्ञा रूप पुल्लिंग की भान्ति (ु) कारान्त नहीं है अपितु स्त्रीलिंग के पश्चात (ु) का प्रयोग नहीं होता।

स्वरान्त प्रातिपदिक

गुरु भाषा में , आकारान्त , इकारान्त , ईकारान्त, उकारान्त , ऊकारान्त तथा ऐकारान्त प्रातिपदिक मिलते हैं। उदाहरणार्थ -

आकारान्त	पुल्लिंग	(आ)
करता ६०।१२	वणजारा १५६।२०	
गुणदाता ६३१।२८	पाधा ६३७।२८	
	राजा ४६४।२०	
	दीवा २५।२५	
	कीड़ा १४४।१७	

ईकारान्त	पुल्लिंग	
	माली ११७१।६	(ई)
	अपराधी ४७०।२१	

उकारान्त	पुल्लिंग	
	धाउ २५।२३	(उ)
	घिउ	

ऊकारान्त	पुल्लिंग	
	गेरू १०१५।२७	(ऊ)
	जनेऊ ३५५।३	

स्वरान्त प्रातिपदिक

आकारान्त	**स्त्रीलिंग**	
	सिला १२५७।१	(आ)
	जटा ६५१।२३	
	खिमा २२३।२२	
	गुढा १३६।१५	
	चिंता २०।२५	
इकारान्त	**स्त्रीलिंग**	
	गति ३।७	(इ)
	धूलि ६३०।८	
	राति १०।१	
	गालि ४७१।८	
	रासि १८।१४	
	नाभि ४६६।११	
	रिधि ५०४।६	
ईकारान्त	**स्त्रीलिंग**	
	घोड़ी १२८७।२५	(ई)
	छुरी ४७१।२५	
	मिटी ४६६।७	
	आरती ६६३।१४	
	मोहणी १४।७	
	गोपी ६।१	
	दासी ५६।२०	

ईकारान्त	**स्त्रीलिंग**
	घड़ी ५०।३
	मढ़ी ५५।१३
	कीड़ी ५।८
	माखी १०३५।२६
	मढ़ी ४६७।२८
	गुरसाखी १३।८
	नदी १५०।६
उकारान्त	**स्त्रीलिंग**
	लजु १५६।८
	चिंजु १४११।७
ऊकारान्त	**स्त्रीलिंग**
	गऊ
ऐकारान्त	**स्त्रीलिंग**
	नै ७३।४
	जै ४१३।१२

लिंग विधान

शब्द रचना और शब्द प्रयोग की दृष्टि से गुरू भाषा के लिंग सम्बन्धी नियम इस प्रकार हैं।

गुरु भाषा में अकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में मिलती हैं। चूंकि अनेक संज्ञाओं के बहुवचन रूप भी प्रत्यय रहित हैं इस लिए इन को गुरु भाषा

में पुल्लिंग को कर्ता, कर्म और सम्बन्ध कारक का एकवचन का चिह्न (ु) लगाकर पृथक किया गया है। उदाहरणार्थ :

पुल्लिंग

एकवचन	बहुवचन
रोगु	रोग
दूतु	दूतु
सागरु	सागरु
सुखु	सुखु
सरीरु	सरीर
दुखु	दुख
दुधु	दुध
कंचनु	कंचन

स्त्रिलिंग

अकारान्त (व्यंजनान्त) स्त्रीलिंग संज्ञा पद सदैव एकवचन में अपरिवर्तित रहते हैं। इनके बहुवचन रूप व्यंजन भिन्नान्त होते हैं अतः इनको (ु) का चिह्न नहीं लगाते। उदाहरनार्थ -

१- देह ४।१७

२- तिख १२४०।१०

३- सेज २११२८

४- पुस्तक १३५३।६

५- वेदन ५६५।५

६- मेण १०३८।३०

स्त्रीलिंग

आकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों प्रकार की मिलती हैं। जैसे :-

पुल्लिंग

करता ४।२८

दैवता ४७३।७

दाता ५।१६

पिता ७५।१८

स्त्रीलिंग (आकारान्त)

माता २३।२३

जटा १०१३।८

विदिशा २।१

चिंता २०।२५

जिह्वा १६।२५

कथा ६२।२०

कुछ इकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग हैं जैसे :-

पुल्लिंग

ससि ५७।१२

मुनि ७।२५

हरि १३।६

रवि १३।१

दधि १००६।६

दही १०५।८

मुनी ६६२।७

कई स्थानों पर इ के स्थान पर ई का प्रयोग भी मिलता है।

स्त्रीलिंग

इकारान्त संज्ञाएं अधिकतर स्त्रिलिंग ही हैं।

उसतति २२१।२८

दामनि ११०८।१६

संगति २०।२१

रीति ५६०।३

मति २।१८

उतपति ६०५।२२

विभुति १०४३।१५

सकति ११६०।२४

बुधि ३।१०

कुछ ईकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग हैं। जैसे :

गुणी २१।१२

भाई १८।१८

जैनी १२८५।१०

गिआनी ६।१७

जोगी ४।२७

धरमी ४६६।४

ईकारान्त संज्ञाएं अधिकतर स्त्रीलिंग हैं। जैसे

नारी ६३।२५

गोपी ६।१

पुत्री ४३७।१७

नदी १५०।६

दासी ५६।२०

चेरी ५४।७

इसत्री १०१३।१२

चक्वी ६०।१०

मोहणी १४।७

उकारान्त संज्ञाएं दोनों पुल्लिंग और स्त्रीलिंग में मिलती हैं। जैसे -

पुल्लिंग

घौलु ३।२०

निमाउ ३५०।३

नाउ ५८।५

स्त्रीलिंग

छाउ ८३।२०

वाउ ७२।२६

धातु १४३।१०

वसतु ७६४।८

ऊकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दो प्रकार की मिलती हैं।

पुल्लिंग

दारू १२५७।२

पसु १५६।१६

स्त्रीलिंग

गऊ ४७१।२१

बालू ११८७।१२

ऐकारान्त की संज्ञाएं गुरु भाषा में नाम मात्र ही मिलती हैं।

पुल्लिंग

मै १६।१५

स्त्रीलिंग

ने ७३।४

जे ४१३।१२

वचन विधान

वचन विधान की दृष्टि से गुरु भाषा में दो वचन मिलते हैं एकवचन और बहुवचन ।

गुरु भाषा में संज्ञा पदों में पाए जाने वाले वर्ण के विभक्ति पदों को कारक संबंध प्रकट करने वाले कारक प्रत्ययों से अलग नहीं किया जा सकता । अत: विभक्तियों के साथ ही वचन के विषय में विचार किया जा रहा है ।

आदर सूचक (एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग)

गुरु भाषा में आदर के लिए विशेषण और क्रिया के बहुवचन के रूप एकवचन की संज्ञा के साथ और सर्वनाम के एकवचन के रूपों के स्थान पर बहुवचन के रूप भी प्रयोग किए गए हैं ।

जैसे - जोगी बैसि रहहु दुविधा दुखु मागै । ६०३।१२

मध्यम पुरुष :

एकवचन

कह बैसहु कह रहीऐ वाले कह आवहु कह जाही

साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै । ६३८।१३

उत्तम पुरुष :

एकवचन

एकवचन के स्थान पर सर्वनाम बहुवचन का प्रयोग किया है । जैसे -

साच वखर के हम वणजारे । ४३६।२७
सुणि सुआमी अरदासि हमारी
पूछउ साचु बीचारो   ६३८।२४

उपरिलिखित उदाहरणों में रहहु , बैसहु , आवहु , कहहु क्रियाएं बहुवचन में हैं जो एकवचन की संज्ञा जोगी , बाले , और सर्वनाम मध्यम पुरुष एकवचन ' तुम ' के साथ आदर सूचक अर्थों में प्रयोग किया गया है । ऐसे ही ' हम ' सर्वनाम और ' वणजारे ' (बहुवचन) उत्तम पुरुष एकवचन के स्थान पर प्रयोग किए गए हैं ।

कारक विधान :

गुरु नानक की भाषा संयोगात्मक भाषा है । इसके विभक्ति प्रत्यय लगाकर संज्ञा , सर्वनाम और विशेषण के पृथक रूप बनाए गए हैं । यहां पर वचन अनुसार इन्हीं रूपों पर विचार किया जा रहा है ।

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द सर्वनाम है। यह संज्ञा की भाँति वाक्य रचना में आता है, किन्तु किसी व्यक्ति या पदार्थ के नाम के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकता। सर्वनाम वाक्य में कर्ता, कर्म तथा सीमित मात्रा में पूरक स्थान पर आता है।

सर्वनाम के भेद :-

१- पुरुष वाचक	मैं, हउ, तू
२- निश्चवाचक	एह
३- अनिश्यवाचक	कोइ, सभ
४- सम्बध वाचक	तिन
५- अनुसम्बध वाचक	जो
६- प्रश्न वाचक	कवन-कउण-किआ
७- निज वाचक	आप

पुरुष वाचक सर्वनाम

पुरुष वाचक सर्वनामों के ३ उपवर्ग माने जाते हैं।
उत्तम पुरुष , २- मध्यम पुरुष ३- अन्य पुरुष ।

उत्तम पुरुष

एक वचन

(मैं)[१,२]

गुरुनानक द्वारा कर्ता कारक एक वचन में मैं ` और ` हउं ` का प्रयोग किया गया है। मैं का (अर्थ) प्रयोग (मेरे) सम्बन्धवाचक(अर्थों) में भी किया गया है। और (मुझे) के अर्थों में भी किया गया है। हउं का प्रयोग भी मैं के अर्थ में किया गया है।

यथा :- गली हउ सोहागणि मैराो कंतु न कबहु मैं मिलिआ ` हउ ` का प्रयोग वर्तमान या भविष्यत काल में (रागु आसा ।२३। निर्विभक्तिक रूप से किया गया है। भूत काल में अकर्मक क्रिया के साथ हउ का प्रयोग होता है।

१- ` समना जीआ का इकु दाता सो ` मैं ` विसरि न जाई जपु जी ।५। १ जो मैं कीआ सो मैं पाइआ दोसु न दीजै अवर जना । रागु आसा । हउं मूरखु नीचु अजाणु समझा साखीऐं - रागु धनासरी छंत ।५ जिनि जरातु उपाइआ धधे लाइआ ` हउ ` तिसै विटहु मैं मनि चाउ घणा राचि विगासी राम । रागु विलावलु ।

२- मैं आधार तेरा तु खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ । रागु खड़ी बोली में ` मैं ` का प्रयोग निर्विभक्तिक कर्तृ प्रयोग है और ` मैने` का प्रयोग कर्मवाच्य अथवा सविभक्तिक प्रयोग है।

सकर्मक या प्रेरणार्थक धातुओं के भूतकाली रूपों के साथ ` में ` का निर्विभक्तिक अविकारी प्रयोग किया गया है ।

में का प्रयोग उदाहरण १ में , मैंने के अर्थ में किया गया है तुलनात्मक दृष्टि से यह हिन्दी का प्रयोग है क्योंकि पंजाबी में सामान्यत: वर्तमानकाल (पूर्ण वर्तमान) में ` ने ` का प्रयोग नहीं होता यदि हम इसी वाक्य को आधुनिक पंजाबी के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहें तो होगा ` जो में कीता सी में पाया । `

अपभ्रंश में ` हउ ` का प्रयोग कर्ताकारण एकवचन में मिलता है ।

खड़ी बोली में , ` में ` तथा ` में ने ` का प्रयोग कर्ताकारक एकवचन में मिलता है ।

पंजाबी में भी ` में ` का प्रयोग मिलता है ।
में का प्रयोग खड़ी बोली और पंजाबी के निकट है ।

` मोही,मोही मोहि और मोही ` का प्रयोग गुरु नानक द्वारा कर्म , सम्प्रादान कारकों के लिए किया गया है । यह संश्लिष्ट प्रयोग है इस का अर्थ है मुझे ` अपभ्रंश में कर्म कारक में ` अम्हे ` , मम्ह ` ` मज्झु के प्रयोग मिलते हैं ।

खड़ी बोली में मुझे ` मुझ को के दो प्रयोग मिलता हैं और पंजाबी में ` मैंनू ` का प्रयोग मिलता है ।

१- हरी चरण कमल मकरंद लोभितमनो अनदिनो मोहि आही प्यासा (आरती)

हिन्दी में मुझे जाना है और मुझ[१] को जाना है मुझे काम करना है मुझ को काम करना है रूप मिलते हैं ' मुझ को ' पंजाबी प्रभावाधीन लिया गया है ।

मेरा, मेरी, मेरो, मेरे

गुरु नानक द्वारा ' मेरा ; ' मेरी ' और मेरो ' का प्रयोग सम्बधवाचक कारक के लिए किए गए हैं । पुल्लिंग के लिए मेरा और स्त्रीलिंग के लिए ' मेरी ' का प्रयोग किया गया है । स्त्रीलिंग बनाने के लिए ' इ ' प्रत्यय का प्रयोग हुआ है ।

खड़ी बोली और पंजाबी में भी यही प्रयोग मिलते हैं ।

' मेरी ' का प्रयोग हिन्दी में विशेष्य के वचन के अनुसार नहीं बदलता जबकि पंजाबी में ' मेरी ' का प्रयोग विशेष्य के वचन के अनुसार बदल जाता है इस दृष्टि से गुरु नानक ने हिन्दी की वृति को अपनाया है ।

बहुवचन ' हम '[२]

' मेरो ' ब्रज और अवधि का प्रयोग है ।

१- हि० मुझ का संबंध षष्ठी कारक के प्राकृत रूप ' मह ' के अतिरिक्त एक अन्य रूप मज्झ प्रा० मह्यं स० मह्यं से किया जाता है । मुझ या मझ का प्रयोग पुरानी हि० में षष्ठी के अर्थ में भी होता था । ' उ ' का आगम हि० तुझ के प्रभाव के कारण हो सकता है । चतुर्थी में मुझ को के अतिरिक्त मुझे रूप भी प्रयुक्त होता है । यह ' ए ' विकृत रूप का चिन्ह है जो मुझ में उपर से लगा है । हिन्दी भाषा का इतिहास , १९५८, धीरेन्द्र वर्मा ,पृ०२८१ ।

२-' हम घर साचा सोहिलड़ा प्रभ आइअड़े मीता राम ' रागु आसा छंत घरु, १(११४)(स)

हम [१,२,३,४] का प्रयोग गुरुनानक द्वारा कर्ताकारक बहुवचन के लिए किया गया है। यद्यपि रूप की दृष्टि से ` हम ` का प्रयोग कर्ताकारक बहुवचन के लिए हुआ है तथापि अर्थ की दृष्टि से ` हमे ` का प्रयोग सम्बध कारक में हुआ है।

खड़ी बोली में हम का निर्विभक्तिक प्रयोग कर्ताकारक बहुवचन में मिलता है जबकि पंजाबी में इस के लिए ` असी ` का प्रयोग होता है।

` असां जो मुलतानी अर्थात पश्चिमी पंजाबी का रूप है पंजाबी में आम प्रचलित है अत: ये दोनों हिन्दी की वाक्य रचना के अनुसार सविभक्तिक प्रयोग हैं। वाक्य रचना की दृष्टि से भी हिन्दी के ही प्रयोग हैं।

हमारा,[५] हमारी ,[६] हमारे [७]

गुरु नानक ` हमारा ; ` हमारी ,` ` हमारे ` का प्रयोग सम्बन्ध

१-` तूं वड पुरखु अगंम तरोवर हम पंखी तुझ माही `
`रागु गूजरी असटपदीआ ४।८।

२-` हम अपराधी निरगुणे माई तुझ ही ते गुण सोइ `
रागु सोरीठ असटपदीआ चउतुकी

३-` हम आदमी हों इक दमी मुहलति मुहतु न जाणा `

४-` हम सह केरीआ दासीआ साचा खसमु हमारा `

५- असुर साधारण रामु हमारा। घटि घटि रमिआ राम पिआया।
रागु मारु।

६- सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ पूछउ साचु वीचारो (सिध गोसटि ६ सोहले १)

७- हिन्दी भाषा का इतिहास , १९५८ , धीरेन्द्र वर्मा , पृ० २८१।

कारक में किया गया है। पुल्लिंग के लिए ` आ ` और स्त्रीलिंग के ` ई ` प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

` ए ` प्रत्यय का प्रयोग आदर सूचक एकवचन के लिए किया गया है।

खड़ी बोली में भी ` हम ` के लिंगवचनानुसार सम्बन्ध कारक में ` हमारा ` ` हमारी ` और हमारे प्रयोग मिलते हैं और पंजाबी में असाडा, साडा और साडे का प्रयोग किया जाता है।

` खड़ी बोली के हम का सम्बन्ध प्रा० ` अम्हे ` या ` म्हे ` से है जिन के ` म ` और ` ह ` में स्थान परिवर्तन हो गया है। इन प्राकृत रूपों की व्युत्पति ` अस्मे ` से मानी जाती है। वह वैदिक भाषा में वास्तव में मिलता है। कुछ कारकों में संस्कृत में भी इस के रूप पाए जाते हैं जैसे ` अस्मान ` अस्माभि: संस्कृत प्रथम पुरुष बहुवचन वयं से हि० ` हम ` का किसी तरह भी सम्बन्ध नहीं हो सकता। हि० हमें का सम्बन्ध प्राकृत अप ` अम्हह ` से किया जाता है। इस से स्पष्ट है कि ` हमारा ` ` हमारी ` हमारे ` खड़ी बोली के प्रयोग है।

मध्यम पुरुष

एकवचन ` तु `[१] गुरु नानक द्वारा ` तु ` (विश्लिष्ट , मूलरूप)का प्रयोग कर्ता कारक एकवचन में किया गया है।

अपभ्रंश में ` तुहुं ` रूप मिलता है।

पंजाबी सानुनासिक ` तुं रूप मिलता है जबकि खड़ी बोली में निरानुनासिक ` तु ` प्रयोग मिलता है।

१-` तुं ` जलिथलिमहीअलि भरिपुरि लीणा तु आपे सरब समाणा

(रागु सूही घरु।७, ४।१।६

विकृत रूप

` तुधु `[1] गुरु नानक द्वारा कर्ता कारक और कर्ता के कर्म वाच्य रूप एकवचन में किया गया है । रूप और अर्थ की दृष्टि से यह कर्ता कारक और कर्म कारक का प्रयोग है । गुरु नानक ने इस का प्रयोग दोनों रूपों में किया है । जैसे ` तुधु संसार उपाइआ ` कर्ता कारक का प्रयोग है , ` जो तुधु भावे ` यह कर्म कारक का प्रयोग है ।

` तुझ , तुझु `[2]

` तुझ ` और ` तुझु ` यह दोनों प्रयोगों कर्म कारक में किए गए हैं । यह ` तू ` के विकृत रूप हैं ।

अपभ्रंश के ` तुज्झ ` का प्रयोग अपादा कारक में मिलता है । खड़ी बोली में ` तुझे ` का प्रयोग कर्म और सम्प्रदान कारकों में होता है । पंजाबी में ` तेनू ` का प्रयोग कर्म कारक के लिए होता है ।

` हिन्दी ` तुझ `[3] का सम्बन्ध प्राकृत के षष्टी के ` तुह ` रूपांतर ` तुज्झ ` तथा संस्कृत ` तुभ्य ` से माना जाता है । प्रा० से पूर्व संस्कृत में इस तरह के रूप नहीं मिलते । हि० तुझे में ` ए ` विकृत रूप का चिन्ह है ।

१- तुधु ससारु उपाइआ सिरे सिरि धंधे लाइआ (सिरी रागु घरु ३)
जो ` तुधे ` भावे साई भली कार (जपु १७)
जो तुधु भावे सोई आखा तिलु तेरी वडिआई (रागु विलावल , चउपदे ११ ॥
२- तुझ बिन अवर न जाणा मेरे साहिबा गुण गवा नित तेरे रागु विलावलु चउपदे घरु १
साचु कहु तुम पारग्रामी तुझु किआ बैसगु दीजे । सि० गो० ।४
३- हिन्दी भाषा का इतिहास , १६५८ , धीरेन्द्र वर्मा , पृ० २८२
गुरु नानक द्वारा ` तू ` के दोनों रूपों तूं और तु का प्रयोग किया है ।

तेरा तेरी , [1] तेरे , तेरे , तव

` तेरा , तेरी , तेरे , तेरे , तव ` में सम्बध कारकीय रूप है । इन में पुल्लिंग के लिए ` आ ` और स्त्रीलिंग के ` ई ` प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है ।

` तव ` संस्कृत का प्रयोग है ।

` तेरा , तेरी , तेरे , खड़ी बोली और पंजाबी दोनों में प्रयोग होते हैं ।

पंजाबी में बहुवचन के लिए ` तेरिआं ` का प्रयोग होता है ।

` तेरे का प्रयोग बहुवचन के लिए भी किया जाता है ।

तेरो अवधि और बृज में प्रयोग किया जाता है ।

` तुझै , तोहि , तुहनो ` [2]

तुझै तोहि तुहनों गुरु नानक द्वारा कर्म , सम्प्रदान और सम्बध कारकों में प्रयोग किए गए हैं ।

१-` मेरे लाल जीउ तेरा अन्त न जाणा ` रागु सुही घरु ७।१
कउणु तराजी क्वणु तुला तेरी क्वणु सराफ बुलावा ।सुही।घरु।७।४।१।६

२- सहस तव नैन नन मैन है तोहि कउ सहस मूरति नना
एक तोही - आरती
कृपा जलि देहि नानक सरिंग कउ होइ जाते तेरो नामि वासा ,
हउमै पैसहु तेरे मने माहि । हरि न चेतहि मूढ़े मुकति जाहि । वसंतु
गावहि तुहनो पउणु पाणी वेसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ।
असरपदोआ जपुजी २७ ।

जैसे - तुझे रजाइ - तेरी मर्जी

तैहि - तेरे तौहो - तेरी

तुहनो - तुमको

तुझे और तोहि ब्रज भाषा के प्रयोग हैं।

'तुहनों' पंजाबी के निकट है। पंजाबी में 'तेनु' का प्रयोग होता है।

यद्यपि व्युत्पत्ति परक विश्लेषण सीधे मूल विषय से सम्बन्ध नहीं रखता तथापि स्पष्टीकरण के लिए यहां संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है ।

व्युत्पत्ति ` तु ` की उत्पत्ति वैदिक ` तु ` (जैसा कि तु-अम में मिलता है) तथा त्वम-प्रा० तु से हुई है । स० युष्मे का रूप प्रा० में ` तुम्ह ` बन गया । इसी से तुम भी बना । इन रूपों में ` तु ` के प्रभाव से स० यु तु । तुम की व्युत्पत्ति हुई है । तेरा की उत्पत्ति तव-केर (कार्य) से हुई । तुम्हारा की उत्पत्ति ` तुम्ह ` युष्म + केर) (कार्य) से हुई । तेरी तथा तुम्हारी में स्त्रीलिंग प्रत्यय ` ई ` है ।

तु सचा सचिआरु जिवि सचु वरताइआ (रागु मलार-वार , पउड़ी । २)

खड़ी बोलो में ` तुझ ` का प्रयोग होता है। इस प्रकार
` तुमे ` खड़ी बोली के निकट है।
यह संश्लिष्ट रूप हैं।

`बहुवचन `[१] `तुम ` गुरु नानक द्वारा ` तुम ` का प्रयोग बहुवचन और एकवचन दोनों में किया गया है। रूप की दृष्टि से तुम बहुवचन का प्रयोग है। परन्तु अर्थ की दृष्टि से इसे एक वचन में भो प्रयोग किया गया है। जैसे ` तुम गावहु ` बहुवचन का प्रयोग है और `साधु कहहु तुम पारग्रामी ` एकवचन का प्रयोग है।

तुमारी,तुम्हारी,[२] तुमारा, रूप की दृष्टि से ये बहुवचन के प्रयोग हैं परन्तु अर्थ के विचार से इनका प्रयोग गुरु नानक द्वारा एक वचन में किया गया है पंजाबी में इनके लिए तुहाडी , तुहाडा , प्रयोग मिलते हैं। इस प्रकार ये प्रयोग हिन्दो के प्रयोग हैं।

अन्य पुरुष एक वचन ` वह ` वह और वे का प्रयोग गुरु नानक द्वारा नहीं किया गया इनके स्थान पर ` ओहु ` और ` ते ` के प्रयोग मिलते हैं।

१- ` साधु कहहु ` तुम ` पारग्रामी तुझु किआ वेसणु दीजे
(सि० गोसटि , पूरबी
` तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ` ` गउड़ी दीपकी (२०)
ड़ाड़ें गारुड़ तुम सुणहु हरि वसे

२- सिद्धो सुरति अनाहदि वाजै छटि छटि जोति तुमारी
(रागु रामकली असट पदीआं । २३ ।४
नानक बोलै सुणि वैरागी किआ , तुमार राहो - राम कली सि०
गो० ।२
सिख मत सम बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तैरे-रागु बिलावनु
। घरु १ चउपदे ३
गुरमुखि साधु सरणि तुमारी । करि किरपा प्रभ पार उतारि ।

` ओहु ` [१] गुरु नानक द्वारा ` ओहु ` का प्रयोग कर्ता कारक एकवचन के लिए किया गया है ।

खड़ी बोली में तृतीय पुरुष कर्ता कारक एकवचन में ` वह ` का प्रयोग किया जाता है ।

पंजाबी में उह ` का प्रयोग होता है ।

` ओहु ` पंजाबी ` उह ` का ही पर्याय माना जाएगा ।

` ओइ ` [२] ` ओइ ` का प्रयोग गुरु नानक द्वारा कर्म कारक में किया गया है । और यह स्थानीय प्रयोग है ।

बहुवचन

` ते ` [३] ` ते ` का प्रयोग गुरु नानक द्वारा बहुवचन में किया गया है ।

खड़ी बोली में अन्य पुरुष बहुवचन में ` वे ` का प्रयोग मिलता है ।

पंजाबी में ` उह ` का प्रयोग मिलता है ।

`विकृत रूप`

एक वचन ` ता ` [४] ` ता ` का प्रयोग गुरुनानक द्वारा सम्बध कारक में किया गया है ।

` तिसै ` [५] तिसै का प्रयोग कर्म कारक में किया गया है ।

` तिसु ` [६] तिसु का प्रयोग कर्म कारक में किया गया है ।

१- ओहु सबदि समाए आपु गवाए , त्रिभवण सोफी सुफाए । विलावलु छंत दरवणी २ ।

२- इकु दरि सेवहि दरदु वजाए

३- जिन्ह इक मनि धिआइआ तिन्ह सुखु पाइआ ते विरले संसारि जीउ `

४- ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु । जपु २६ ।

५-` तिसै ` आदेसु ` तिसै ` आदेसु । जपु २६ ।

६- जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु । जपु ३० ।

` वह ` की व्युत्पति स० के अदस शब्द के रूप ` असौ ` से निम्नलिखित रूप में हुई है ।

स० असौ पा० असु प्रा० असौ अहो , ओह , वह ।

` यह `

व्युत्पति:[1] प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के कर्ता एकवचन की ` एष ` प्रकृति म०भा०आ० भाषाओं में एस हो गई पुल्लिंग में ` एसो ` ` स्त्रीलिंग में ` एसा ` और नपुंसकलिंग में एस रूप निर्माण हुआ । अपभ्रंश में ` स ` ` ह ` रूप में परिणत हो गये । और क्रमश: एहो एस , एष , एह (ह्रस्वी करण) एसा एषा और एहु एस हेम्य ८।४।३६८

हि०[2] यह , ये की व्युत्पति स० एष , एवे , एतति आदि रूपों से स्पष्ट ही है । हार्नली भी इन का संबंध स० एष से जोड़ते हैं । चेटर्जी के मतानुसार निकटवर्ती निश्चवाचक समस्त रूपों का सम्बध स० मूल शब्द एत (उदा: एषा , एतद) से है ।

हि इस स्पष्ट रूप से प्रा० एअस्स (स० अस्य से संबद्ध मालूम होता है । चेटर्जी इसका सबंध स० एतस्य से जोड़ते हैं ।

१- वीरेन्द्र ` श्रीवास्तव ` अपभ्रंश साहित्य का इतिहास

२- धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास

` तिसे `[1] यह सम्बन्ध कारक का प्रयोग है ।

` तिसहि `[2] ` तिसाह ` कर्म कारक का प्रयोग है ।

यह सारे ` ता , तिसै , तिसु , तिसै , तिसहि ` सम्बन्ध कारक के प्रयोग हैं ।

ता (कीआ)[3] यह सम्बध कारकीय प्रयोग है ।

ता (कउ)[4] यह कर्म कारकीय प्रयोग हैं ।

ता (का)[5] यह सम्बध कारकीय प्रयोग हैं ।

ये सारे (३ से ५ तक) एक वचनीय वियोगात्मक प्रयोग हैं ।

पुरुष वाचक

निश्चय वाचक (निकटवर्ती)

इहु[6] यह सार्वनामिक विशेषण रूप है ।

एहु[7] यह सार्वनामिक विशेषण रूप है ।

वाहे[8] कर्ता कारक (कर्मणि प्रयाग) एक वचन

१- कोइ नाम जपै जपमाली लागै ` तिसै ` धिआन । ८७६

२- जितु मउलिए सभ मउलिऐ ` तिसहि ` न मउलिहु कोइ ।

३- ता किया गला कथीआ न जाहि ` जपु ३६ `

४- नानक ` ताकउ ` मिलै वड़ाई आपु पछाणै सभ
जीआ ` सिध गोसटि

५- ततै तारन मवजलु होआ ` ता ` अंतु न पाइआ ` पृष्ठ ४३३ परि

` यह ` ` वह ` ` उह ` ` इह ` ये दोनों पुरुषवाचक के भी भेद हैं ।

६- इहु मनु डोलतुतउ ठहरावै । सचु करणी करि कार कमावै ।
रागु परभाती

७- जिसु की आसा तिसही सउपि कै एहु रहिआ विखाणु (असरपदीआं
परभाती चउपदे घरु १।८

८- जाइ पुछहु सोह सोहागणी वाहे किनी वाती सहु पाईऐ
तिलग ` । घरु २।४।३

सम्बन्ध वाचक

दुरवर्ती

एक वचन		बहुवचन
	निर्विभक्तिक	तिना[1] तिनि[2]
	साविभक्तिक	तिनकउ[3] , तिन के[4]

तिना[1] यह कर्म कारक का बहुवचन संश्लिष्ट प्रयोग है ।

तिनि[2] यह सार्वनामिक विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ है और यह संश्लिष्ट प्रयोग है ।

तिन(कउ)[3] यह अधिकरण कारक का विश्लिष्ट प्रयोग है ।

तिन (के)[4] यह सम्बध कारक का विश्लिष्ट प्रयोग है ।
अधिकरण कारक (अर्थ की दृष्टि से)

१- जिन कउ माडे माउ तिना सवारसी (रागु सूही घरु ६।१)

२- तिनां मिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ (रागु सूही घरु ६।१)

२- नानक सुरि नर सवदि मिलाए तिनि प्रम कारण कीआ
। रागु तुखारी । बारह माह ।२

३- हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिनां दै बाति । वार सूही की सलोका नालि ।४।

४- हउ तिन के बलिहारणै दरि सचै सचिआर । सिरी रागु असटपदीआं । ४ । २ ।

` हिन्दी `जो `[1] का सम्बन्ध संस्कृत ` य: ` से है। हि० जिस यस्य प्रा जिस्स , जस्स , से संबद्ध है।

` जो `[2] की व्युत्पति य: यो से निम्न प्रकार से हुई है
य: यो पा० यो अशो प्रा० यो , ये प्रा० जो जो
तिर्यक रूप जिस की उत्पत्ति स० यस्य से निम्नलिखित रूप
में हुई है यस्य पा० यस्स , प्रा० जस्स हि० जिस ।

१- हिन्दी भाषा का इतिहास , धीरेन्द्र वर्मा , पृ० २८५

२-३ हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास , उदय नारायण
तिवारी , पृ० ४५३

अनुसम्बंध वाचक सर्वनाम

` जो `

१- ` जो ` का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के रूप में हुआ है ।

` जो ` का प्रयोग कर्ता कारक एकवचन के रूप में हुआ है ।

` जेहे ` २- जेहे का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के रूप में हुआ है । यह संयोगात्मक प्रयोग है ।

जिना[३]	यह कर्ता कारक का साविभक्तिक प्रयोग है ।
जिनी[४]	यह कर्ता कारक का साविभक्तिक प्रयोग है ।
निनि[५]	यह कर्ता कारक का साविभक्तिक प्रयोग है ।
जा(की)[६]	यह सम्बन्ध कारक का प्रयोग है ।
जा(के)[७]	यह सम्बन्ध कारक का प्रयोग है ।
जिस(ते)	यह सम्बन्ध कारक का प्रयोग है ।
जिस(की)	यह सम्बन्ध कारक का प्रयोग है ।

गुरु नानक द्वारा ` जो ` के निम्नलिखित रूपों का प्रयोग किया गया है ।

		एक वचन	बहुवचन
मूलरूप			
	निर्विभक्तिक	` जो `	` जे हे `
	विकृत	निनि	जिनी जिना
विशेष	जा (की) जा (के) जिस (ते) जिस (की)		

जो दमु चितु न आवह सा दमु तिरण जाइ । रागु सूही चउपद ६।७

१- किआ कहीऐ सबे रहिआ समाइ । जो किछु वरते सभ तेरीरजाई रागुं परभाती विभासु चउपद $\frac{1}{5}$

२- जेहे करम कमाई तेहा होइसी रामुसुही चउपदे ६।८

३- नानकु तिन के चरन परवाले जिना गुरमुखि साचा भाइआ
रागु परमाती बिभास चउपदे घरु ४।२

४- जिनी जाणु सु जाणिआ ` जागि ते ` पूरी परवाणि ८

५- आपे करे कराए करता जिनि रहु रचना रचीऐ -
रागु परमाती दरवणी

४ । ७

६- जाकी वासु वनासपति सउरे तासु चरण लिव रहीऐ
परमाती विभास

८

७- जा के आसु नाही निरास नाही चिति सुरति समझाइ

८- जिस ते होआ सोई परु जाणै जा उस ही माहि
समाइ (११ $\frac{११}{८}$)

जिसकी आशा तिस ही सउचि के रहु रहिआ निरवाणु

८

३ प्रश्न वाचक

३ गुरु नानक द्वारा निम्नलिखित प्रश्नसूचक सर्वनामों का प्रयोग किया गया है ।

मूलरूप	एकवचन	बहुवचन
निर्विभक्तिक	१- कवन	
	२- कउणु	
	३- किआ	
	४- की	

विकृत: किसु[५], कह[६], कहा[७], केतड़ा[८]
केतिआ[९], केते[१०], किउकरि[११], कित[१२], केरा[१३]
कितु[१४], काहे[१५], किस[१६] (कउ) किस[१७] (मो)

केतिआ (क) कत (की)

विशेष:- १- केतिआ : गुरु नानक का विशेष प्रयोग है ।
२- केरा , बंगला का प्रभाव है ।
३- किदु : इसका ताल मेल बंगला के साथ किया जा सकता है ।

१- कवन तुम्हे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ (सिध्गोसटि १)[२]
२- कउणु मरै कउणु रोवै ओही ।। रागु आसा घरु असटपदीआं ।८।१
३- जिनी कीआ तिनि देखिआ किआ कहीऐ रे भाई । तिलंग घरु २।६
४- आपनड़े धरि हरि रंगो की न माणीहि । तिलंग - घरु २।४।१
५- किसु-किस कारणि ग्रिह तजिओ उदासी -सिध्गो १७(अट्ठाणवे)
६- कह कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो
सिध्गो०२

७- ते आवे कहा हहु जावे कहा हहु रहै समाई (सिःगो २२)

८- हुकमु न जापी कहि न सकीजे कार

९- के बाप केतिआ के बेटे केते[१०] गुर चेले हुए । सारंग की
वार स० ४

११- किउकरि - कउिकरि बाधा सरपनि खाधा । सि० गो १४

१२- किउ - बिनु दता किउ खाईऐ सारु (नानक साचो करहु वीचारु

१३- [१८] कत की माई वापु कत केरा

१८ किदु थावउ हम आए । गउड़ी चेती $\frac{१७}{१}$

१४- कितु काहे कितु विधि पुरखा जनमु बटाइआ

१५- काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ । सिःगो १६

१६- किस वउ दोसु देहि तू प्राणी सहु अपणा कीआ करारा है
मारु सोहले १४

१७- किस नो कहीऐ नानका जा घरि वरतै सभि कोई । मारु वार
सलोक १८

बहुवचन

तिनी[1]	यह कर्म कारक का बहुवचन प्रयोग है और संयोगात्मक प्रयोग है ।
तिनि[2]	इस का प्रयोग सार्वनामिक विशेषण के रूप में हुआ है यह संयोगात्मक प्रयोग है ।
तिन कउ[3]	यह अधिकरण कारक का वियोगात्मक प्रयोग है ।
तिन के[4]	यह सम्बध कारक का प्रयोग है ।

१- जिन कउ भाउे भाउ तिना सवारसी (रागु सूही घरु ६।१)
तिनामिलिआ गुरु आइ जिन कउ लीखिआ । रागु सूही घरु ६।१

२- नानक सुरि नर सबदि मिलाए तिनिप्रभ कारणु कीआ ।
रागु तुखारी बारह माह ।२।

३- हउ बलिहारी तिन कउ सिफति जिनां दे नाति । वार सुहो की
समि राती सोहागणी इक मै दोहागणि रति । सलोका नालि।४।

४- हउ तिन के बलिहारणै दरि सचे सविआर (सिरी रागु असटपदीआं
४।२

` यह `

व्युत्पति[१] :- प्राचीन भारतीय आर्य भाषा के कर्ता एक वचन ` एष ` प्रकृति म० भा० आ० भाषाओं में एस हो गई पुल्लिंग में ` ऐसो ` स्त्रीलिंग में ` एसा ` और नपुसकलिंग में एस रूप निर्माण हुआ । अपभ्रंश में ` स ` ` ह ` रूप में परिणत हो गया । और क्रमश: एहो एसो एष ; एह (ह्रस्वीकरन) एसा (एषा और एहु एस हेम ८।४।३७

हि०[२] यह , ये की व्युत्पति स० एषः : एते , एतानि आदि रूपों से स्पष्ट ही है । हार्नली भी इन का संबंध स० एषः से जोड़ते हैं । चैटर्जी के मतानुसार निकटवर्ती निश्चवाचक समस्त रूपों का संबंध स० मूल शब्द एत (एष: एषा, एतद) से है हि० इस स्पष्ट रूप से प्रा० एअस्स (स० अस्य सेसबद्ध मालूम होता है । चैटर्जी इस का संबंध स० एतस्य से जोड़ते हैं ।

१- धीरेन्द्र ` श्रीवास्तव ` , अपभ्रंश साहित्य का इतिहास

२- धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास ।

४- निश्चय वाचक

	एकवचन	बहुवचन
मूलरूप		
निर्विभक्तिक	इहु एहु	एहु

१- इहु[1] यह एक वचनीय सार्वनामिक विशेषण रूप है ।

२- एहु[2] यह एक वचनीय सार्वनामिक विशेषण रूप है ।

एहु[3] यह बहुवचनीय सार्वनामिक विशेषण रूप है ।

एहि

इन

इव पंजाबी

इहु , एहु एक वचन और एहु बहुवचन के रूप में अपभ्रंश में प्रयुक्त होते थे ।

गुरु नानक द्वारा अपभ्रंश के रूपों का ही प्रयोग किया गया है ।

आजकल इन का प्रयोग पंजाबी में होता है । खड़ी बोली में इन का प्रयोग नहीं होता ।

१- इहु मनु डोलत तउ ठहरावै । सचु करणी करि कार कायै । परभाती असरपदीआ ५

२- इहु संसार सगल विकारु । तेरा नामु दारु अवरु नासति करण हारु अपारु । विभास चउपदे १ , रागु परभाती

तैसो ही इहु खेलु खसम का जिउ उसकी वडिआई । परभाती चउपदे घरु १।८

३- जिस की आसा तिसही सउपि कै ` एहु ` रहिआ निरवाणु परभाती घरु १ चउपदे

बहुवचन

३- बुझहु हरिजनु सतिगुर वाणी । एहु जीवनु सासु है देह पराणी । सोहले मारु ।६।५

मूलरूप

निर्विभक्तिक इकि, [1] इकना [2]

सविभक्तिक इकना, [3] इकि, [4] इकनी [5]

विकृत

१- इकि कर्ता कारक का प्रयोग है

२- इकना कर्ता कारक का प्रयोग है

३- इकना कर्म कारक का प्रयोग है

४- इकि कर्म कारक का प्रयोग है

५- इकनी कर्ता कारक का (कर्मणि) प्रयोग है।

१- इकि कहि जाणहि कहिआ बुझहि ते नर सुघड़ सरूप

। सारंग की ।३

२- इकना सुधि म बुधि न अकलि सर अखर का भेउन लहंति

। वार स० ३३

३- इकना नाद न वेद न गीअरसु रस कसु जाणंति

४- इकि धुर बखस लए गुरि पूरे सची बणत बणाई

। परभाती दखणी ।७।१

५- इकनी लदिआ इकि लद चले इकनी बधे भार

। सहस्कृति ४।सारंग की वार स० २६

कोइ (अनिश्चय वाचक)

मूलरूप	कोई[1]
विकृत रूप	किस ही[5] किसै[6] किस[8] - (किससे)
	किसु[7] किसु[9] (कर्ण) किसै कर्म[11] ,अपादान
विशेष	(सम) (कोई)[2]
	किस (का)[4]
	किस (की)[3]
	किसु (सम्बंध)[10]
	समु कोई

को : गुरु नानक का विशेष प्रयोग है। यह हिन्दी और पंजाबी से नहीं मिलता।

१- तुधु सरि अवरु न कोई कि आरिख वखाणिआ। रामु माझ - वार।पउड़ी

२- विनु नावै(समु) कोई निरधनु सतिगुरि बूझ बुझाई। रागु सारंग घरु १ असटपदीआं ४

३- विनु वर्झ को थाह न पाई। नाम विहूणे माथे छाई। आसा असटपदीआं २।१

मा को पड़िआ पंडितु बीना ना को मूरखु मंदा। आसा ३६।४

४- न किस का पूतु न किसकी माई। झूठै मोहि भरमि भुलाई। आसा ४।२८

५-६ किसही मानु किसै अपमानु। दाहि उसारे घरे धिआनु। तितुका

७- तुझ ते वडा नाही कोई। किसु वेखासी चंगा होई

८- किस कउ कहहि सुणावहि किस कउ किस समझावहि समझि रहे। आसा ४।१७

६- किसु पूछउ किसु लागउ पाइ। किस उपदेसि रहा लिव लाई। १७।४

१०- तुझ बिनु कोइ न देखउ मीतु। किसु सेवउ किसु देवउ चीतु। गउडी असरपदीआ १।५

११- हुकम न जापी खसमु का वडाई देह। गउडी वैरागणि १८।४

सभ (अनिश्चय वाचक)

एक वचन बहुवचन

मूल = सभि[1] सभ[5] सभु[8]

विकृत रूप= सभ[3] (महि) अधिकरण

विशेष = सरब[2] सभे सभि[4] (पंजाबी)

सभु करण

संबंध सभना (का)[7]

१- ऊड्ड ठाकुर नानका सभि सुख साचु नाम

२- सरब सबदं त एक सबदं जे को जानसि भेउ - स० सहसकृति

३- सभ महि जीउ जीउ है कोई घटि घटि रहिआ समाई । मलार असरपादेआ १।७

४- सभे राती सभिदिह सभि थिति सभिवार

५- नाइ सुणिए सभ सिधि है रिधि पिछै आवै ।

६- सभु करण किरतु करि लिखीऐ करि करि करता करे करे सारंग वार स० ४

७- करता तू सभना का सोई । आसा ।३६

८- सभु जगि देखिआ माइआ छाइआ । नानक गरमति नाम धिआइआ

आसा ।१७।४

६- निजवाचक ` आप `

गुरु नानक द्वारा निजवाचक ` आप ` क निम्नलिखित रूपों का प्रयोग किया गया है :-

अपि , आपे , आपु आपे-आपि , आपीवहे , आपे ,

आपस,

आपे-आपे , आपणे , आपण , अपना , आपणा आपु

इन रूपों का विश्लेषण निम्नांकित रूपतालिका द्वारा किया गया है ।

एक वचन

आपे-आपे :-

आपे-आपे का प्रयोग गुरु नानक द्वारा ` खुद-स्वयं के अर्थों में किया गया है इस में (आपे आपे) संयोजक रेखा का प्रयोग नहीं किया गया है क्योंकि यह उस समय की परिपाटी नहीं थी ।

रूप : तालिका निजवाचक आप

एकवचन

मूलरूप

निर्विभक्तिक : आपे , आपु आपि , आपे आपे ,

विकृत रूप आप , आपे , आपीन्हे[५]

विशेष आपसों , आपण , आपणों , अपुने , अपना , आपा , आपनडे

मूलरूप :-

आपे :[१] - यह कर्ता कारक एकवचन का प्रयोग है ।

आपि:[२] - यह कर्ता कारक एक वचन का प्रयोग है ।

आप :[३] - यह कर्ता कारक एकवचन का प्रयोग है ।

आपि आपे :[४] - यह कर्ता कारक एक वचन का प्रयोग है ।

आपीन्हे :[५] - यह कर्म कारक एक वचन का प्रयोग है ।

आपे :[६] - यह सम्प्रदान कारक एक वचन का प्रयोग है ।

१- आपे करे कराए आपे आपे दे वाडेआई हें - १०२१

२- आपि निरंजनु अलख अपारी

३- आपि उपाए आपि खपाए । आपे सिरि सिरि धंधे लाए - १०२४

३- आवीन्हे आपु साजि आपु पछाणिआ - १२७६

४- इकि सोगी इकि रोगी विआपे + जो किछु करे सो आप आपे ६१८

५- आपीन्हे आपु साजि आपु पछाणिआ - १२७६

६- आपे दोसु देई न करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ २।५।३६ ।

आपणा आपु [७] यह सम्बध कारक एक वचन का प्रयोग है ।

` आप ` यह सम्बध कारक एक वचन का प्रयोग है ।

मध्यम

के अर्थ में अधिकरण में अन्यथा सम्बधं कारकीय रूप :-

आपनड़े [८] यह सम्बध कारक एक वचन का प्रयोग है ।

७- आपणा आपु पछाणिआ नामु निधानु पाइआ । रागु धरु वार पउड़ी

८- आपा मधे आपु परगासिआ पाइआ अमृतु नामु ।
आपनडे घरि हरि रंगो की न मारोहि । रागु तिलंगु धरु २४।१

आपणी[1], अपना[2], और आपणी[3] :- ये सम्बन्ध कारक एकवचन के प्रयोग हैं।

अपुने[4]	यह सम्बन्ध कारक एकवचन का प्रयोग है।
आपु[5]	यह कर्म कारक एकवचन का प्रयोग है।
आपि[6]	यह कर्म कारक एकवचन का प्रयोग है।

आपका पुल्लिंग द्योतक सर्वनाम बनाने के लिए प्रत्यय लगा कर 'आप' का मध्य 'आ' का लोप कर 'अपना' बनाया गया है। स्त्रीलिंग द्योतक सर्वनाम बनाने के लिए प्रत्यय लगा कर 'आपणी' शब्द निर्माण किया गया है।

'अपना' और 'आपणी' के उच्चारण में विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि अपना में तो 'म' का प्रयोग है और 'अपणी' में 'ण' का प्रयोग है। 'ण' पर अपभ्रंश का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है। 'अपना' का प्रयोग खड़ी बोली और पंजाबी दोनों में होता है। 'आपणी' का प्रयोग पंजाबी में होता है।

आपणी[1] :- किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ। रागु मारू वर्ग वार पाउड़ी

अपना[2] :- अपना काजु सवारहु आपे सुखदावेगुसाई। रागु मलार असटपदीआ १।८

आपणी[3] :- किरपा करि कै आपणी गुर सबदि मिलाइआ। रागु मारू वार पउड़ी

अपुने[4] :- सासि गिरास जपउ अपुने हरि माली। रागु बिलावल चउपद

आप[5] :- असथिरु थानु सदा निरमाइलु आपे आपु उपाइदा १०३३

आपि[6] :- आपे करता पुरखु विधाता। जिनि आपे आपि उपाइ पछाता ६२०।

(आप) आपे रसीआ आपे रावे जित तिस दी वडिआई

राग सूही ३।घरु ।३

नानक आपे जोग सजोगी नदरि करे लिव लाइऐ -

आपीन्है आपु साजि आपु पछाणिआ - १२७६

वार मलार की

आपे करता आपे भुगता । आपे तृपता आपे मुकता - मारु

१४।१४

आपि असथिरु थानु सदा निरनाइलु आपे आपु । १०३३

कर्ता कारक-आपे आपु उपाइदा

कर्म कारक-आपीन्है आपे करता पुरखु विधाता । जिनि आपे आपि उपाइ

पछाता ६२०

आपु

आपि आपि निरंजन अलख अपारी १०२४

आपि उपाए आपि खपाए । आपे सिरि सिरि धंधे लाए

आपि - (।) शब्द आपि कर्ता कारक एक वचन के साथ ' ही के प्रयोग के कारण ' आपि ' की ' इ ' उड़ कर ' आप ' रह गया ' ही ' का ' ह ' उड़ कर इ रह गई अब ये दोनों मिल कर आप + इ - आपे बन गया (गुण सन्धि) जैसे :-

आपे रसिआ आपु रसु आपे रावणहारु ।आपे होवे चोलड़ा आपे सेज भतारु ।सिरी रागु म० १

(।।) ही का ' ह ' उड़ कर ई रह गया कई बार पहले शब्द की इ नहीं गिरती और ये दोनों उ मिलकर ई बन जाती हैं।

आपी नै आपु साजिउ आपीनै रचिउ नाउ आसा की वार

आप की व्युत्पति :- हि० निजवाचक सर्वनाम ` आप ` प्रा० अप्पा , आपा स० आत्मन से निकला है। हि० अपना वास्तव में आप का स० कारक रूप है। किन्तु हिन्दी में निजवाचक होकर स्वतंत्र शब्द हो गया है इस रूप का संबंध प्रा० अप्पाणो अप० अप्पाणु जैसे रूपों से माना जाता है।

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त आप आपीन्है इत्यादि रूपों पर अपभ्रंश और प्राकृत का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है आप शब्द खड़ी बोली और पंजाबी दोनों के निकट है।

उत्तम पुरुष

मूलरूप	एक वचन	बहु वचन
निर्विभक्तिक	मैं, हउ	हम
सविभक्तिक	मै (मेरे) मैं (नैं) (मुझे)	हम (हमारे)

विशेष मेरा, मेरी, मेरे, मेरो, मेरे, मोहि हमारा, हमारी (विशेष
मोही, मैंडा, महिंडा हमारे

मध्यम पुरुष

	एक वचन	बहुवचन
मूलरूप(निर्विभक्तिक)	तू	तुम
सविभक्तिक	तुधु	
विकृत रूप	तुझ तुझु तेरा , तेरी तेरे , तेरे , तव तुझे तोहि , तुहनों	तुमारी , तुम्हारी विशेष तुम्हारा ।

अन्य पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
मूलरूप	ओहु	ते
विकृत रूप	ता , तिसै , तिसु	तिनों
	तिसै तिसहि	तिनि
ता(कीआ)		तिन कउ
	ता (का)	तिन के
	ता(कउ)	

विशेषण

परिभाषा :-

जिस विकारी शब्द से संज्ञा शब्द की व्याप्ति मर्यादित होती है, उसे विशेषण कहते हैं, जैसे बगु काला इत्यादि। विशेषण संज्ञा शब्द की व्याप्ति मर्यादित करता है इस उक्ति का अर्थ यह है कि विशेषण-रहित संज्ञा से जितनी वस्तुओं का बोध होता है उनकी संख्या विशेषण के योग से कम होती है, जैसे ` गाय ` शब्द से जितने विशेष प्रकार के प्राणियों का बोध होता है उतना ` गारी । गाय ` से नहीं होता। इस प्रकार ` गोरी ` शब्द से गाय शब्द की व्याप्ति मर्यादित होती है। गाय शब्द अधिक प्राणियों का बोध कराता है और ` गोरी गाय ` उन से कम प्राणियों का बोधक है।

२- व्यक्ति वाचक संज्ञा के साथ जो विशेषण आता है वह उस की व्याप्ति मर्यादित नहीं करता केवल उसका अर्थ स्पष्ट करता है जैसे पतिव्रता सीता, प्रतापी राम, दयावान प्रभु इत्यादि। अत: किसी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिए जो शब्द आते हैं वे समानाधिकरण कहाते हैं।

३- जातिवाचक संज्ञा के साथ उनका साधारण धर्म सुचित करने वाला विशेषण समानाधिकरण होता है, जैसे मूक पशु, गर्म दुध इत्यादि इन उदाहरणों में विशेषणों के कारण संज्ञा की व्यापकता कम नहीं होती।

४- विशेष्य के साथ विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है (१)संज्ञा के साथ (२) क्रिया के साथ। पहले प्रकार को विशेष्य-विशेषण और दुसरे को विधेय विशेषण कहते हैं। विशेष्य-विशेषण विशेष्य के पूर्व और विधेय विशेषण क्रिया के पहले आता है जैसे, `ऐसी सुन्दर स्त्री कहीं नहीं,` ` यह बात असत्य है `। विधेय-विशेषण समानाधिकरण होता है, जैसे ` यह

बालिका चंचल है ` इस वाक्य में ` यह ` शब्द के कारण ` बालिका ` शब्द की व्यापकता घटती है , परन्तु चंचल शब्द उस व्यापकता को कम नहीं करता इससे बालिका के विषय में केवल एक बात जानी जाती है वह है उस की चपलता ।

भेद :-

रूप की दृष्टि से विशेषण के मुख्य निम्नांकित तीन भेद माने जा सकते हैं :-

१- संख्या वाचक विशेषण
२- सार्वनामिक विशेषण
३- गुणवाचक विशेषण

(१) संख्यावाचक विशेषण :

विश्लेषण :- संख्या वाचक विशेषण के तीन भेद माने जा सकते हैं :

(१) निश्चित संख्यावाचक विशेषण
(२) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
(३) परिमाणवाचक विशेषण

(१) निश्चित संख्या वाचक विशेषणों से पदार्थों और मनुष्यों की निश्चित संख्या का बोध होता है , जैसे एक लड़का ।

निश्चित संख्या वाचक विशेषणों के पांच भेद माने जा सकते हैं :-

(१) गुणवाचक
(२) क्रम वाचक
(३) आवृति वाचक
(४) समुदाय वाचक
(५) प्रत्येक सूचक

(१) गणवाचक विशेषणों के दो भाग माने जा सकते हैं :-

(i) अपूर्णांक बोधक , जैसे पाव , आधा, पौन इत्यादि

(ii) पूर्णांकबोधक जैसे एक , दो , चार इत्यादि

गणवाचक विशेषणों के गुरु नानक वाणी में से उदाहरण :-

तिथै सोहनि पंच[१] परवाणि । नदरी करमि पवै नीसाणु
बीस[२] सपता । हरो बासरो संग्रहै तीनि खोड़ा नित काल सारै
दस[३] अठार[४] मैं अपरंपरो चीनै कहै नानक इव एकु तारै
एक[५] सुआनु दुइ[६] सुआनी नालि । भलके भउकहि सदा बइआलि
तीह[७] करि रखे पंजि[८] करि साथी नाउ सैतानु मतु कटि जाइ
नउ[९] निधि उपजै नामु एकु[१०] करमि पवै नीसाणु
कतीह[११] अंमृत भाउ एकु जा कउ नदरि करेइ
दस[१२] बालतणि बीस[१३] रवणि तीसा[१४] का सुंदरु कहावै
चालीसी[१५] पुरु होइ पचासी[१६] पगु खिसै सठी[१७] के बोदेपा आवै
सतरि[१८] का मतिहीणु असीहां[१९] का विउहारु न पावै
नवै[२०] का सिहजासणी मूलि न जाणै अपबलु

१- जपु पौ ३४

२,३,४ सिरी रागु २६

५,६ सिरी रागु २६

७,८ सिरी रागु २७

९,१० सिरी रागु १३

११ सिरी रागु १३

१२,१३,१४,१५,१६,१७,१८,१९,२० रागु माझु , वार

२१. पंजि निवाजा वखत पंजि पंजा पजे नाउ । [22][23][24]

सुणिए सतु संतोखु गिआनु । सुणिऐ अठसठि का इसनानु [25]

गुरा इकु देहि बुझाइ । सपना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि जाई [26][27]

एका सुरति जेते है जीअ । सुरति विहूणा कोइ न कीअ [28]

जेही सुरति तेहा तिन राहु । लेखा इको आवहु जाहु [29]

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलु इकु धातु [30]

इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दीवाणु [31][32][33]

अपूर्णांक बोध

पाताला पाताल लख आगासा आगास [34]

सहस अठारह कहनि कतेबा असुलु इकु धातु [35]

तिसु विचि जीअ जुगति के रंग । तिनके नाम अनेक अनंत [36][37]

२१,२२,२३,२४ रागु माझ सलोक -१२

२५ जपु-१०

२६ जपु-४५

३० जपु २६

३१,३२,३३ जपु ३०

३४ जपु २२

३५ जपु २२

३६,३७ जपु ३४

कीता पसाउ एको कवाउ । तिसते होए [३८]लख दरिआउ

[३९]असंख नाव असंख थाव । अगंम अगंम असंख लोअ

असंख कहहि सिरि भारु होइ

कोटि कोटी मेरी आरजा पवणु पीअणु अघिआउ

कृम वाचक

[४०]पहिलै पिआरि लगा थण दुधि । [४१]दूजै माइ आप की सुधि

[४२]तीजै भया भाभी बेब । [४३]चउथै पिआरि उपंनी खेड

[४४]पंजवै खाण पीअण की धातु । [४५]छिवै कामु न पुछै जाति

[४६]सतवै संजि कीआ घर वासु । [४७]अठवै क्रोधु होआ तनु नासु

[४८]नावै धउले उभे साह । [४९]दसवै दधा होआ सुआह ।।

[५०]पहिला सचु हलाल [५१]दुइ [५२]तीजा खैर खुदाइ

[५३]चउथी नीअति रासि मनु [५४]पंजवी सिफति सनाइ

[५५]एकम एकंकारु निराला । अमरु अजोनी जाति न जाला

[५६]दूजे भाइ लगे पछुताणे । जम दरि बाधे आवण जाणे

---

३८ - जपु १६

३९ - जपु १९

४०-४९ रागु माझ वार ।

५०-५४ रागु माझ स० १२

५५-५६ रागु बिलावलु थिति

[57]तृतीय ब्रह्मा विसनु महेसा । देवी देव उपार वेसा

[58]चउथि उपार चारे वेदा । खाणी चारे बाणी भेदा ।

[59]पंचमी पंच भूत बेताला । आपि अगोचर पुरख निराला

[60]खसटी खटु दरसन प्रभ साजे । अनहद सबद निराला बाजे

[61]सपतमी सतु संतोखी सरीरि । सात समुंद भरे निरमल नीरि

[62]असटमी [62]असट सिधि बुधि साधै । सचु निहकेवलु करमि आराधै ।

नोउ [63]नउमी [63]नवे नाथ [63]नव खंडा । घटित घटि नाथु महा बलवंडा

[64]दसमी नामु दानु इसनानु । अनदिनु मजनु सचा गुण गिआनु

[65]एकादसी इकु रिदै वसावै । हिंसा ममता मोहु चुकावै

[66]दुआदसि मुद्रा मनु अउधूता । अहिनिसि जागहि कबहि न सूता

[67]तेरसि तरवर समुद कनारे । अंम्रितु मूल सिखरि लिव तारे

[68]चउदसि चउथे थावहि लहि पावै । राजस तामस सत काल समावै

[69]एका सुरति जेते है जीअ सुरति विहूणा कोइ न कीअ

एकामाइ जुगति विआई [69]तिनि चेले परवाणु जपु-३०

आवृति वाचक

जे जुग चारे आरजा होर [70]दसूणी होइ

५७-६८ रागु बिलावलु थिति

६९ ,

७० जपु २६

समुदाय बोधक :-

अंत कारणि केते[७१] बिललाहि । ताके अंत न पाए जाहि

केते ले ले मुकरु पाहि । केते मूरख खाही खाहि

ऐते कीते होरि करेहि ता आखि न सकहि केइ केइ[७२]

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरव[७३] समाले

चंदु सरजु दुइ[७४] गुफे न देखा सुपनै सउण न थाउ

इकि[७५] आवहि इकि उठि रखी अहि नाव सलार

इकि[७६] उपाए मंगते इकना[७७] वडे दरबारि

संख्या वाचक विशेषणों का विश्लेषण

गुरु नानक द्वारा जिन पूर्ण संख्यावाचक विशेषणों का प्रयोग हुआ है उन्हें रूप रचना की दृष्टि से किसी वर्ग विशेष में रखना तब तक सम्भव नहीं है जब तक उसके निहित भाव (अर्थात दार्शनिक पक्ष) को स्पष्ट नहीं किया जाता । इस कारण विश्लेषण में कई स्थानों पर द्विरुक्ति दोष आ गया है फिर भी यथा सम्भव इस से बचने का प्रयास किया गया है ।

गुरु नानक वाणी में विशेषणों की रुपात्मक योजना संज्ञा की तरह है । विशेषण विशेष्य के अनुरूप विभक्ति और वचन का अनुसरण करते हैं । संख्या वाचक विशेषणों का विश्लेषण नीचे किया जा रहा है ।

७१,७२,७३ जपु २६

७४-७७ सिरी रागु

गुरु नानक द्वारा संख्या वाचक ` एक ` का रुपात्मक प्रयोग निम्नलिखित ढंगों से भिन्न भिन्न ढंगों में हुआ है :-

एक , इक , इकु , एका इको , इकि

एक का प्रयोग तो साधारण संख्या बताने के लिए किया गया है जैसे ` एक सुआन `

इक , इकु का प्रयोग बहुधा आध्यात्मिक तत्व का वर्णन करने के लिए ही किया गया है , जैसे इकु दाता या इकु संसारी में परमात्मा की जो तीन शक्तियां उपार्जन , पालन , और विनाश करने की हैं उनकी ओर संकेत किया गया है ।

` एका ` का प्रयोग एक पर बल देने के लिए किया गया है । इस का अर्थ ` एक ही ` (आध्यात्मिक तत्व) है , जैसे एका सुरति जेते हैं जीअ ।
सुरति विहूणा कोइ न किआ

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु

परन्तु यह आवश्यक नहीं है जैसे

` इकु तिलु पिआरा वीसरै रोगु वडा मनु माहो `

इस पंक्ति में ` इकु ` विशेषण रूप का प्रयोग ` तिलु ` साधारण पदार्थ के लिए प्रयोग हुआ है । परन्तु इस का सम्बन्ध ` पिआरा ` (प्यारा) अर्थात भगवान से है । ` इको ` का प्रयोग भी ` एक ही भगवान ` के लिए हुआ है । ` इकदू इकू ` तुलनात्मक विशेषण के रूप में इसका प्रयोग हुआ है ।

टिप्पणी :-

दे० ५, २६, २७, २८, ३१, ३२, ३३

` एकम ` गुरु नानक ने एक के लिए एकम का प्रयोग भी किया है ।

` एक ` के लिए क्रमवाचक संख्या दर्शाने के लिए गुरु नानक ने पहिला का प्रयोग किया है ।

` दो ` [0] ` दो ` का प्रयोग भी अनेक प्रकार से मिलता है । इस का प्रयोग दो पूर्णांक संख्या वाचक के लिए हुआ है । ` दुइ ` ` दुजे , ` दुजा ` ` दुजी ` इन सब का प्रयोग ` दो ` तथा ` दूसरी ` क्रम वाचक संख्या के रूप में हुआ है । ` दुइ दीवे ` यहां पर साधारण पदार्थों को छोड़कर विशेष पदार्थों अर्थात् सूर्य और चन्द्रमा की ओर संकेत किया गया है । इस का अर्थ ` दो ` या ` दोनों ही ` से है दोनों समुदाय वाचक है ।

` दुजे ` ` दुजे ` का प्रयोग` दुसरे ही ` के अर्थों में भी किया गया है और क्रम वाचक संख्या के रूप में भी किया गया है , जैसे दुजे भाइ अर्थात् द्वैत भाव में और ` दुजे माइ बाप की सुधि ` में दुसरी या दुसरे स्तर पर मां बाप की सुधि आती है ।

` दुजा `, ` दुजी ` का प्रयोग भी क्रमवाचक अर्थों में हुआ है । दुजा और दुजी का प्रयोग पंजाबी में होता है ।

` तीन ` [0] ` तिनि ` ` तीजे ` ` तृतीआ ` का प्रयोग तीन के अर्थों में गुरु नानक द्वारा किया गया है ।

` तिनि ` का प्रयोग तो तीन के लिए किया गया है ।

` तीजे ` और ` तृतीआ ` का प्रयोग क्रमवाचक संख्या के लिए किया गया है ।

` तीजे ` का प्रयोग पंजाबी में होता है ।

---

[0] दे० ६,४१,५१,५६,७४

[0] दे० ५७,५२,४२,६६

` चार `[1] ` चउथे ` ` चउथि ` यह दोनों ही क्रम वाचक संख्याएं हैं
` चउथे ` पुल्लिंग और ` चउथि ` स्त्रीलिंग प्रयोग हैं।
` दोहा कोश ` में ` चार ` प्रयोग मिलता है। समास में ` चउ `
रूप का प्रयोग मिलता है ` चउक्कथ ` और चउदिसि। संख्या -
वाचक शब्दों में भी ` चउ ` का प्रयोग मिलता है।
आ० आ० भाषाओं में यही ` चउ ` ` अउ ` ` ओ ` प्रवृति के
कारण ` चौ ` का रूप धारण कर लेता है जैसे ` चौदस `
` चारि ` संस्कृत नपुसंकलिंग से विकसित होने पर भी सभी लिंग
और कारकों में प्रयुक्त होता है।

` पांच ` [0] ` पंजि ` ` पंजा `5` पजे ` पंजवें ` पंचमी ` ` पंच ` ` पंच आदि
का प्रयोग इस बात का संकेत है कि उस समय पंजाबी के आधुनिक
संख्या रूपों का विकास होने लगा था।
` पंजि ` का प्रयोग समुदाय वाचक के रूप में किया गया है।
पांच नमाज़ों को बताने के लिए पंजि का प्रयोग किया गया है।
` इ ` प्रत्यय लगा कर कर्म कारक बनाया गया है।
` पंचमी ` ` पंजवें ` ` पंजा ` ` पजे ` पंच `
` पंचमीं ` और पंजवें ` क्रमवाचक संख्या सूचक के रूप में
प्रयोग हुआ है। ` पंचमी ` तिथि के लिए स्त्रीलिंग प्रयोग है।
` पंजा ` अर्थात ` पांचों के ` सम्बध वाचक प्रयोग है।
` पंजा ` समुदाय बोधक प्रयोग है।
` पजे ` अर्थात पांच ही बहुवचन का प्रयोग है।
` पंज ` यह संख्या वाचक सामान्य प्रयोग है।
संस्कृत का रूप ` पंच ` है। अपभ्रंश में भी अनुनासिक प्रयोग
` पंच ` मिलता है। अपभ्रंश के कारकों में भी ` पंच ` रूप मिलता है।

दे० ५३,५८,४३

दे० २१,२२,२३,२४,४४,५६

इस प्रकार संस्कृत अपभ्रंश का रूप ` पंच ` का प्रयोग गुरु नानक द्वारा किया गया है।` पंजवें ` का प्रयोग आ० पंजाबी में सानुनासिक मिलता है।

छ:[१] ` छिवें ` ` खसटी ` छिवें और खसटी दोनों क्रमवाचक संख्याएं हैं। ` छिवें ` पुल्लिंग सम्बध वाचक और खसटी स्त्रीलिंग सम्बध वाचक है। अपभ्रंश में भी ` छ ` का प्रयोग मिलता है। समास में भी ` छ ` रूप ही मिलता है। संस्कृत के ` ष ` ` श ` के स्थान पर गुरु नानक में ` स ` प्रयोग ही मिलता है।

इस प्रकार स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि ` षसटी ` और ` छिवें ` पर संस्कृत और अपभ्रंश का प्रभाव है।

` सात `[२] सपता-हरा ` ` सपतमी ` ` सतवें ` सात के लिए ये तीन प्रयोग मिलते हैं। इसका प्रयोग पुल्लिंग सम्बध धोतनार्थ रूप में हुआ है।

खड़ी बोली में सातवां सातवीं और पंजाबी में सतवां और सतवीं रूप प्रयोग होते हैं। ` सात ` और `सत` में व +आं, व + इं प्रत्यय लगा कर रूप बनाये जाते हैं। अपभ्रंश ` सत्त ` ` सत्ता ` इत्यादि प्रयोग मिलते हैं। समस्त पदों में पहला संख्या सुचक पद ` सत्त-सत्त ` हो जाते हैं। ` सपता-हरो ` और ` सपतमी ` संस्कृत के निकट जा पड़ते हैं। ` सत्वें ` पर अपभ्रंश का प्रभाव है और इसका पंजाबी में सानुनासिक रूप में प्रयोग होता है।

१- दे० ४५,६०

२- दे० २,४६,६१

` आठ `[1] ` असट ` असटमी `` अठवें ` आठ के लिए यह तीन प्रयोग मिलते हैं। ` असटमी ` और ` अठवें ` यह दोनों रूप क्रमवाचक संख्या सूचक हैं। ` असटमी ` स्त्रीलिंग और ` अठवें ` पुल्लिंग प्रयोग हैं। यह दोनों प्रयोग अधिकरण कारक के हैं।

` असट ` का प्रयोग निर्लिंगीय निश्चित संख्यावाचक रूप में हुआ है। ` आठ ` के लिए संस्कृत में ` अष्ट ` का प्रयोग होता है। अपभ्रंश में ` श ` ` ष ` के स्थान पर ` स ` हो जाता है। इस प्रकार ` अष्ट ` का विकसित रूप ही ` असट ` है और अष्टमी का विकृत रूप ` असटमी ` है।

अपभ्रंश में अट्ट प्रयोग मिलता है।

पंजाबी में ` अठ ` ` अठवां ` अठवीं प्रयोग मिलते हैं।

अत: कहा जा सकता है कि पंजाबी तब विकसित हो रही थी।

हिन्दी में इस का (समीकरण के नियमानुसार) दीर्घीकृत रूप आठ , आठवां इत्यादि मिलता है।

नौ `[2] ` नावें ` ` नउमी ` ` नवें ` ` नव ` ` नउ ` ` नौ ` के लिए ` नावें ` ` नउमी ` ` नव ` शब्द मिलते हैं। ` नावें ` और ` नउमी ` में दोनों क्रमवाचक संख्या सूचक शब्द हैं।

` नावें ` पुल्लिंग प्रयोग है। ` नउमी ` तिथि के लिए स्त्रीलिंग प्रयोग है। नव निश्चित संख्या संख्या सूचक शब्द है।

अपभ्रंश में ` नव ` मिलता है और तद्धितान्त प्रत्यय परे होने पर ` नव ` मी मिलता है। संस्कृत में ` नवम ` मिलता है। ` नउमी ` और ` नव ` संस्कृत के अधिक निकट है। गुरु नानक द्वारा ` व ` के स्थान पर ` अ+ उ ` का प्रयोग प्राय: मिलता है। अत: नवमी के स्थान पर ` नउमी ` गुरु नानक की एक सामान्य प्रवृत्ति है। ` नावें ` अपभ्रंश का ही प्रयोग है। नवे का अर्थ ` नौ ` है और यह समुदायवाचक प्रयोग है।

१- दे० ट ठी ६२,४७,६२

२- दे० ६३,६३,६३,४८, ६

खड़ी बोली में ` नौ ` नौवां नौमी इत्यादि प्रयोग प्रचलित हैं। पंजाबी में ` नौ ` ` नौवां ` ` नौमी ` या ` नौवी ` इत्यादि प्रयोग मिलते हैं।

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त नउमी खड़ी बोली के अधिक निकट है।

दस[1] ` दस ` ` दसवें ` ` दसमी ` ` दस ` के लिए गुरु नानक द्वारा `दस` ` दसवें ` ` दसमी ` इन तीन शब्दों का प्रयोग किया गया है। ` दसवे ` दसमी ` यह दोनों शब्द तो क्रमवाचक संख्या सूचक हैं। दसवे का प्रयोग पुल्लिंग और दसवीं का प्रयोग स्त्रीलिंग हैं। दस संख्या सूचक शब्द है। अपभ्रंश में ` दस ` और ` दह ` दोनों रूप मिलते हैं।

संस्कृत में `दश ` प्रयोग मिलता है। गुरु नानक द्वारा अपभ्रंश की प्रवृति , ` श ` ` ष ` के स्थान पर `स ` का ही प्रयोग किया गया है। अत: दस संस्कृत के ` दश ` का ही विकसित रूप है। अत: यह खड़ी बोली के ।दस। के अधिक निकट है। पंजाबी क्षेत्रीय रूप में ` दह ` का प्रयोग होता है। गुरु नानक ने ` वें ` और ` मी ` प्रत्यय लगाकर क्रमवाचक संख्या सूचक शब्द बनाया है।

ग्यारह[2] ` ग्यारह ` के लिए गुरुनानक द्वारा ` एकादसी ` का प्रयोग किया गया है। संस्कृत में ` ग्यारह ` के लिए एकादश प्रयोग होता है। गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त ` एकादसी ` संस्कृत का ही विकसित रूप है।

१- दे० ६४,४६,१२,३ स ह की प्रवृति कार्य करती पाइ जाती है। इसे फारसी प्रभाव भी कहा जा सकता है।

२- दे० ६५

बारह[१] (दुआदसि ।। गुरु नानक द्वारा ` बारह ` के लिए ` दुआदसि ` का प्रयोग हुआ है । इस के लिए संस्कृत में ` द्वादश ` शब्द का प्रयोग होता है गुरु नानक द्वारा ` दुआदसि ` का प्रयोग क्रमवाचक संख्या सूचक स्त्रीलिंग के लिए हुआ है । यह संस्कृत का ही विकसित रूप है । पंजाबी में संस्कृत के ` व ` के स्थान पर ` उ ` का प्रयोग करने की प्रवृति है । इस में ` इ ` प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया गया है ।

तेरह[२] । तेरसि (गुरु नानक द्वारा ` तेरह ` के लिए ` तेरसि । का प्रयोग किया गया है । यह क्रमवाचक संख्या सूचक स्त्रीलिंग प्रयोग है । अपभ्रंश में ` तरस `, ` तेरह ` आदि रूप मिलते हैं । अपभ्रंश के ` तेरस के साथ ` इ ` प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया गया है ।

चौदह[३] ` चौदह ` के लिए गुरु नानक द्वारा ` चौदसि ` शब्द का प्रयोग किया गया है प्राकृत और अपभ्रंश में ` चौदह ` और ` चउदस दोनों ही प्रयोग मिलते हैं ।
अपभ्रंश के ` चउदस ` में ` इ ` प्रत्यय लगाकर ` चउदस ` बनाया गया है । यह अपभ्रंश के ` चउदस ` का ही प्रयोग है ।

गुरु नानक द्वारा क्रमवाचक संख्या सूचक शब्द तिथियों और जीवन की अवस्थाओं के विषय में वर्णनार्थ ही प्रयोग किए गए हैं अन्यथ: यह रूप विरल ही मिलते हैं ।

१- दे० ६६

२- दे० ६७ स ह

३- दे० ६८

अनिश्चित संख्यावाचक

अठारह[1] । अठारह । का प्रयोग गुरु नानक द्वारा संख्या सूचक शब्द के रूप में हुआ है । अपभ्रंश में अठ्ठारह और ` अट्ठारस ` दोनों रूप मिलते हैं ।

खड़ी बोली में । अठारह । रूप ही चलता है और यह प्रयोग खड़ी बोली के समीप है । गुरु नानक में अपभ्रंश रूपों का ही अधिक प्रयोग पाया जाता है ।

तीस[2] । तीस । के लिए गुरु नानक ने । तीह । का प्रयोग किया है । यह कर्म कारक का प्रयोग है । अपभ्रंश में तीसा का प्रयोग मिलता है । पंजाबी में ` तीह ` रूप प्रचलित है जो कि इसके निकट है ।

छतीस[3] । छतीह । छतीस के लिए गुरु नानक द्वारा ` छतीह ` शब्द का प्रयोग किया गया है । अपभ्रंश में ` छतीस ` प्रयोग मिलता है । इस में भी ` सकार ` का ` हकार ` करके अपभ्रंश के ` छतीस ` के स्थान पर ` छतीह ` प्रयोग किया गया है ।

गुरु नानक द्वारा दस , बीस , चालीसी , पचासी , सठी , सतरि , असीहां , नवे , संख्यासूचक शब्दों का प्रयोग अधिकरण कारक में किया गया है । तीसा । । चालीसी । इत्यादि से अभिप्राय है ` तीस ` , ` चालीस ` की आयु में । । दस । का विश्लेषण पहले हो चुका है ।

१- दे० ३५ । ४

२- दे० ७

३- दे० ११

[1] ।बीस । के लिए गुरु नानक द्वारा । बीस । का ही प्रयोग किया गया है ।

प्राकृत में । बीसा । और अपभ्रंश में । बीस । रूप मिलते हैं ।

खड़ी बोली में और पंजाबी में भी इस का यदाकदा व्यवहार किया जाता है ।

। तीसा [2] । । तीस । के लिए । तीसा । का प्रयोग अधिकरण और सम्बध कारक में किया गया है ।

। चालीसी [3] । । चालीस । के लिए चालीसी का प्रयोग किया गया है । यह भी सम्बध और अधिकरण कारकों का प्रयोग है ।

। पचासी [4] । । पचास । के लिए । पचासी । का प्रयोग किया गया है यह प्रयोग सम्बध और अधिकरण कारक में हुआ है । इस में भी ` इ ` प्रत्यय लगाया गया है । खड़ी बोली में । पचास । रूप मिलता है । पंजाबी में । पंजाह । रूप मिलता है । अत: यह खड़ी बोली के अधिक निकट है ।

। साठ [5] । गुरु नानक द्वारा । साठ । के लिए सठी रूप का प्रयोग हुआ है । यह सम्बन्ध और अधिकरण कारक का प्रयोग है । अपभ्रंश में `सट्ठि ` रूप मिलता है । खड़ी बोली में । साठ । और पंजाबी में । सठ । रूप मिलता है ।

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त । सठी । शब्द अपभ्रंश का ही प्रयोग है ।

१,२,३,४,५ दे० १२,१३,१४,१५,१६

।सत्तर।[1] ।सत्तर। के लिए ।सत्तरि। रूप का प्रयोग गुरु नानक द्वारा किया गया है यह सम्बन्ध और अधिकरण कारक का प्रयोग है अपभ्रंश में ।सत्तरि ।ही मिलता है। खड़ी बोली और पंजाबी में भी ।सत्तर । रूप मिलता है।

स्पष्ट है कि यह गुरु नानक द्वारा प्राचीन शब्द का प्रयोग है।

। अस्सी ।[2] । अस्सी । के लिए । असीहां । का प्रयोग किया गया है। यह भी सम्बध और अधिकरण कारक का प्रयोग है। अपभ्रंश में ` असी ` ` असिअ ` इत्यादि प्रयोग मिलते हैं। खड़ी बोली और पंजाबी में भी (अस्सी) प्रयोग मिलता है।

नव्वे[3] नव्वे के लिए गुरु नानक द्वारा । नवें श्र का प्रयोग किया गया है। यह सम्बन्ध और अधिकरण कारक का प्रयोग है। अपभ्रंश में । नवई। प्रयोग मिलता है।

खड़ी बोली में । नव्वे । और पंजाबी में । नव्वे । रूप मिलते हैं। स्पष्ट है कि गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त । नवें । रूप अपभ्रंश के । गवई। रूप का ही विकृत रूप है।

लख । लाख । के लिए गुरु नानक द्वारा । लख । का प्रयोग किया गया है।

अपभ्रंश में । लक्ख । रूप मिलता है।

खड़ी बोली में । लाख । और पंजाबी में । लख । रूप मिलते हैं।

१,२,३ दे० १७,१८,१९ ।

गुरु नानक द्वारा संयुक्त और द्वित्व अक्षरों का प्रयोग नहीं किया गया ।

स्पष्ट है कि गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त । लख । रूप अपभ्रंश के । लक्ख। रूप का ही प्रयोग है ।

अनिश्चित संख्यावाचक

। कोटि कोटी । यह द्विरुक्त प्रयोग है । इस का प्रयोग अनिश्चित संख्या वाचक के लिए हुआ है ।

। सहस । । सहस । का प्रयोग हज़ार के लिए हुआ है ।

अपभ्रंश में । सहस । रूप का प्रयोग मिलता है यह प्रयोग भी अपभ्रंश का ही प्रयोग है ।

। केते केते । । केते केते । का प्रयोग अनिश्चित संख्या वाचक परिमाण वाचक बहुवचन के रूप में किया गया है ।

` केह केह । । केह केह । का प्रयोग अनिश्चित संख्या वाचक , परिमाणवाचक बहुवचन और एक वचन दोनों रूपों में किया गया है ।

। केते केते । के लिए खड़ी बोली और पंजाबी में । कितने । रूप का प्रयोग किया जाता है ।

। केह केह । अनिश्चित संख्या वाचक बहु वचन के लिए खड़ी बोली और पंजाबी में ` कोइ ` रूप का प्रयोग किया जाता है ।

स्पष्ट है कि । केते केते । और । केह केह । का प्रयोग गरु नानक द्वारा अपभ्रंश के प्रभावाधीन ही किया गया है ।

मुख्य रूप से हम कह सकते हैं कि गुरु नानक के संख्या वाचक प्रयोग अपभ्रंश के निकट है । इन में क्रमवाचक बनाने के लिए वे और भी प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है । सम्बध और अधिकरण कारकों के लिए आ , इ , और हां प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है ।

४

गुण वाचक

गुण वाचक विशेषण वे हैं जो वस्तुओं के गुण , दशा , रंग इत्यादि का बोध कराते हैं । रूप की दृष्टि से गुण वाचक विशेषणों को दो भागों में बांटा जा सकता है :-

१- विकारी
२- अविकारी

अविकारी : अविकारी विशेषण वे हैं जिनके रूप में प्रयोग की दृष्टि से कोई विकार नहीं आता , जैसे लाल , सफेद ।

इनके अन्तर्गत अर्थों में से मुख्य मुख्य ये हैं :-

रंग	काला , लाल
आकार	गोल सुन्दर
देश	हिन्दुस्तानी , जापानी
काल	नया पुराना
स्थान	बाहरी , भीतरी
दिशा	पूर्वी , पच्छमी
गुण	अच्छा , बुरा

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त गुणवाचक विशेषणों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :-

१- रंग

चिटे[७८] जिनके कपड़े मैले चित कठोर जीउ

कचा रंगु कुसम[७९] का थोड़ड़िआ दिन चार जीउ

१- ७८ रागु सूही असटपदी ।२
७९ - वही - ।२

राती होवनि [८०] कालीआ सुपेदा सेवंन

दिहु [८१] बगा तपे घणा [८२] कालिआ काले वंन

[८३] सूहा रंगु सुपनै निसी बिनु तागे गलि हारु

सचा रंगु [८४] मजीठ का गुरमुखि बीचारु

चिते दिसहि धउलहर [८५] बगे बंक दुआर

तूं सुणि हरणा [८६] कालिआ की वाड़ीऐ राता राम

रता पैनणु मनु रता [८७] सुपेदी सतु दान

[८८] नीली सिआही कदा करनी पहिरणु पैर धिआनु

[८९] उजलु कैहा चिलकणा घोटिन कालड़ी मसु

[९०] मेरे लाल रंगीले हम लालन के लाले

[९१] बागे कापड़ बोले वैण । लमे नकु काले तेरे नैण

गुरु नानक द्वारा निम्नांकित रंगों का वर्णन अपनी भाषा में किया गया है :-

चिटे , कुसंभ , कालीआ , सूहा , मजीठ , बगे , बागे , उजल , लाल ।

इन रंगों के नामों में से ` चिटा , सूहा , मजीठ , बगा , पंजाबी

८०,८१,८२	रागु सूही घरु ।६
८३	रागु सूही सलोक १
८४	- वही -
८५	रागु सूही सिरी रागु । १५
८६	रागु सूही रागु आसा । घरु ३।५
८७,८८	रागु सिरी रागु ।७
८९,९०	रागु दुखारी छंत ।५
९१	रागु मलार चउपदे । ९

में प्रयुक्त होते हैं। काला , लाल खड़ी बोली और पंजाबी दोनों में प्रयुक्त होते हैं।

कुसंम संस्कृत का शब्द है।

विश्लेषण

विशेषणों का प्रयोग विशेष्य के अनुसार किया गया है। जैसे कपड़े ` के साथ ` चिट्टे ` बहुवचन पुल्लिंग का प्रयोग किया गया है।

रातों के साथ (राती)` कालीआ ` का प्रयोग किया गया है। ` राती ` स्त्रीलिंग बहुवचन है इसके साथ ` कालीआ ` स्त्रीलिंग बहुवचन का प्रयोग किया गया है। ` नैण ` बहुवचन के साथ काले बहुवचन पुल्लिंग का प्रयोग किया गया है।

सम्बोधन , विशेषण में कोई परिवर्तन नहीं किया गया ,` जैसे मेरे लाल रंगीले `।

इन विशेषणों में से निम्नलिखित आकारांत है :-

बगा , चिटा , काला , सूहा , उजला (सफेद के अर्थों में)

इन विशेषणों में से निम्नलिखित व्यंजनांत हैं :-

कुसंम , मजीठ , लाल

आकारांत विशेषणों में निम्नलिखित ढंग से विकार हुआ है :-

खड़ी बोली में स्त्रीलिंग एकवचन बहुवचन के लिए आकारान्त , शब्दों के पीछे ` ई ` जैसे काली लड़की

काली लड़कियां

पंजाबी में भी ` ई ` प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

आकारांत विशेषणों में परिवर्तन करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले प्रत्यय :-

पुल्लिंग बहुवचन :-

	शब्द	बहुवचन	प्रत्यय
गुरु नानक	चिटा	चिटे	ए
खड़ी बोली			
पंजाबी	चिटा	चिटे	ए

स्त्रीलिंग बहुवचन :-

गुरु नानक	काली	कालीआ	इआ
खड़ी बोली	काली	काली	कोई परिवर्तन नहीं
पंजाबी	काली	कालीआं	ईंआं पंजाबी में अनुनासिक का प्रयोग है ।

गुरु नानक में व्यंजनांत विशेषणों में भी कहीं कहीं स्त्रीलिंग बनाने के लिए ` इ ` प्रत्यय का प्रयोग किया है । जैसे ` सुपेदी ` सतु दानु अर्थात् सच्च और दान सफेद पोशाक हैं । यहां पर विशेष्य पोशाक लुप्त है ।

आकार।दशा बड़ा साहिबु ऊंचा[६२] थाउ । ऊचे उपरि ऊचा नाउ
एवडु[६४] ऊंचा[६५] होवै कोइ ।
पूरो पूरो आखीऐ पूरै[६८] तखति निवास

दस अठार मैं अपरंपरै[६८] चीनै कहै नानकु इव इकु तारै
बाबा अलहु[६६] अगमु[१००] अपारु

६२,६३,६४,६५ दे० जपु जी , २४,२८
६६,६७,६८ दे० सिरी राग ६
६६ , १०० दे० सिरी रागु असटपदीआ ।१

८

[१०१] ऊचा ऊचउ आखीऐ कहउ का देखिआ जाइ

एहु अंतु न जाणै कोइ । बहुता[१०२] कहीऐ बहुता होइ

देश :- आपे नेड़ै[१०२] दूरि आपे ही आपे मंझि मिआनो

गुर कै सबदि सलाहणा घटि[१०३] घटि डीठु अडीठु

गुर सबदी सालाहीऐ अंतु न पारावारु [१०४]

काल :- [१०५] है भी होसी जाइ न जासी सचा सिरजणहारो

[१०६] आदि सचु जुगादि सचु । है भी सचु नानक होसी भी सचु

[१०७] आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु

स्थान :- जिस ते उपजै तिस ते विनसै घटि[१०८] घटि सचु भरपूरि ।

[१०९] घटि घटि जोति निरंतरि बूझै गुरमति सारु

---

१०१ दे० सिरी रागु असटपदीआ ।३

१०२ दे० सिरी रागु ।३१

१०३ दे० सिरी रागु असटपदीआं ।३

१०४ दे० सिरी रागु असटपदीआं ।४

१०५ दे० सिरी रागु घरु ।२८

१०६ दे० जपु

१०७ दे० जपु २८

१०८ दे० सिरी रागु १६

१०९ दे० सिरी रागु १६

गुण वाचक गाफल[११०] गिआन विहूणिआ[१११] गुर बिनु गिआनु न भालि जीउ

सूकर[११२] सुआन[११३] गरदभ[११४] मंजारा[११५] । पसु[११६] मेलछ[११७] नीच[११८] चंडाला[११९]

गुर ते मुंहु फेरे तिन्ह जोनि भवाइऐ । बंधनि बाधिआ आइऐ जाइऐ

ना मै रूप न बंके[१२०] नैणा । ना कुल ढंगु ना मीठे[१२१] बैणा

जब गुण वाचक विशेषणों का विशेष्य लुप्त रहता है तब उनका प्रयोग संज्ञाओं के समान होता है जैसे ` बड़ो न कहा`

गुरु नानक वाणी में से विशेष्य लुप्त विशेषणों के उदाहरण

१) विणु नावै भ्रमि भुलीआ ठगि मुठी कूड़िआरि[१२२] जीउ

सचे[१२३] सेति रतिआ जनमु न दूजी वार जीउ

२) अवगणि मारि गुणी घरु छाइआ पूरै पुरखि बिधाते ।

अमर[१२४] अडोलु[१२५] अमोलु[१२६] अपारा[१२७] गुरि पूरै सचु पाइऐ

सार्वनामिक विशेषण

पुरुष वाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़ कर शेष सर्वनामों का प्रयोग विशेषण के समान होता है । जब ये शब्द अकेले आते हैं तब सर्वनाम होते हैं और जब इनके साथ संज्ञा आती है तब ये विशेषण होते हैं ।

११०,१११ रागु सूही घरु ६

११२-११६ रागु बिलावलु असटपदीआं

१२०-१२१ रागु सूही असटपदीआं

१२२,१२३ रागु सूही घरु ६।३

१२४-१२७ रागु सूही घरु । ३

गुरु नानक वाणी में से सार्वनामिक विशेषणों के कुछ उदाहरण :-

१- सा[१२८] धन चली साहुरे किआ मुहु देसी जाइ जीउ

२- जिन्ही[१२९] सखी सहु राविआ से अंबी छावड़ीएहि जीउ

३- साइ[१३०] वसतु परापति होई जिसु से मनु लाइआ

इन उदाहरणों में ` सा धन ` ` जिन्ही सखी ` ` साई दसतु ` ` सा ` ` जिन्ही ` और ` साई ` विशेषण हैं। ये वैसे तो सर्वनाम हैं परन्तु यहां पर ` सा ` धन की , जिन्हीं सखी की और साई वस्तु की व्याप्ति को मर्यादित करते हैं अत: यहां इन उदाहरणों में इन का प्रयोग विशेषण रूप में हुआ है।

यौगिक सर्वनाम

जो मूल सर्वनामों में प्रत्यय लगाने से बनते हैं और संज्ञा के साथ आते हैं जैसे जैसा , तैसा ,

गुरु नानक वाणी में से उदाहरण :-

१- अंजनु ` तैसा[१३१] ` अंजीऐ ` जैसा ` पिरु भावै

२- दुइ दीवे चौदह हट नाले , जेते[१३२] जीअ तेते वणजारे

३- तैसो[१३३] जैसा काढीऐ जैसी कार कमाइ

` जो-सो ` जो[१३४] दमु चिति न आवई सो दमु बिरथा जाई

१२८- रागु सूही कुचजी

१२९- रागु सूही

१३०- रागु सूही घरु २।१

१३१- रागु सूही घरु ५।४

१३२- रागु सूही वार स०८

१३३- रागु सूही चउपदे घरु ६।७

१३४- रागु सूही

' किआ'　　माणसु तो ' किआ[१३५] ' बेचारा तिहु लोक सुणाइसी

कउणु और　प्राणी , पदार्थ व धर्म के नाम के साथ आते हैं जैसे ,

कवणु -　　[१३६] कउणु तराजी , कवणु तुला तेरा [१३७] कवणु सराफु बुलावा

[१३८] कउणु गुरु के पहि दीखिआ लेवा के पहि मुलु करावा

जिन-तिन (व्यक्तिगत सम्बध वाचक)

चिटे जिन[१३६] के कपड़े मैले चित कठोर जीउ

[१४०] तिन मुख नामु व उपजे दुजे विआपे चोर जीउ

यहां इनका प्रयोग यौगिक सम्बध वाचक सार्वनामिक विशेषण के रूप में हुआ है ।

केते :　　केते ले ले मुकरु पाहि केते मूरख खाही खाहि

इस उदाहरण में केते का प्रथम प्रयोग तो सर्वनाम है और ' केते मूरख ' में केते सार्वनामिक (परिमाण वाचक विशेषण है)

आवृति वाचक

आवृति वाचक विशेषण से जाना जाता है कि उसके विशेष्य का वाच्य पदार्थ के गुना है , जैसे दुगुना , चौगुना , दसगुना इत्यादि ।

१३५　　रागु सूही घरु ६।६

१३६,१३७　　रागु सूही घरु ६।६

१३८

१३६,१४०　　रागु सूही घरु ६

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त आवृतिवाचक विशेषण का उदाहरण :-

` जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ` ।
` दसूणी ` का यहां अर्थ दस गुणा से है ।
यह स्त्रीलिंग प्रयोग है ।

खड़ी बोली और पंजाबी में ` गुणी ` प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग आवृति वाचक विशेषण बनाया जाता है । प्रा० आ० पा० और म०भा०आ० में भी ` गुण ` प्रत्यय लगाकर आवृति वाचक विशेषण बनाने की पद्धति प्रचलित थी । जैसे द्विगुण , दुणा ।

गुरु नानक ने इसी प्राचीन पद्धति का अनुसरण किया है परन्तु ` गुण ` के स्थान पर ` उण ` का प्रयोग कर ` इ ` प्रत्यय को स्त्रीलिंग निर्माणार्थ प्रयोग किया है जैसे :- इस में ` ग ` का लोप कर दिया गया है जैसे :-

दसूणी = दस + गुण + इ = दस + ग का लोप
दस + उण + इ = दसूणी

<u>तुलनात्मक</u>

१- विशेषण के जिस रूप से किसी वस्तु की तुलना सूचित नहीं होती उसे मूलावस्था कहते हैं जैसे वह अच्छा है ।

२- विशेषण के जिस रूप से दो वस्तुओं में किसी एक के गुण की अधिकता या न्यूनता सूचित होती है उस अवस्था को उत्तरावस्था कहते हैं जैसे ` घोरतर अपराध `

---

१४१ जपु ।।७।।

३- विशेषण के जिस रूप से दो से अधिक वस्तुओं में किसी एक के गुण की अधिकता या न्यूनता सूचित है , जैसे ` उच्चतम आदर्श

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त तुलनात्मक विशेषणों के उदाहरण :-

मणि चाउ ` वर्णरा[१४२] ` सुणि प्रम मे तेरा भरवासा `

आपे सचु भावै तिसु सचु । अंधा कचा ` कचु नि[१४३] कचु `

इकदु[१४४] इकि चउदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ

तेहा कोइ[१४५] न सुझइ जि तिसु गुण कोइ करे

वडा[१४६] साहिबु वडी[१४७] नाई कीता जा का होवै

एवडु[१४८] उचा होवै कोइ । तिसु उचे कउ जाणै सोइ

वडा साहिबु उचा[१४९] थाउ । उचे उपरि उचा[१५०] नाउ

विश्लेषण गुरु नानक की वाणी मुख्यत: धर्म प्रधान है इसलिए यहां पर तुलनात्मक स्थितियों की अपेक्षाकृत कम आवश्यकता हुई है फिर भी उन्होंने कई स्थानों पर तुलनात्मक शब्दावली का प्रयोग किया है जिसका विश्लेषण इस प्रकार है :-

---

१४२ रागु सूही

१४३ सिरी रागु ३२

१४४ रागु सूही ` कुचजी `

१४५,१४६,१४७ जपु ७ , २१

१४८,१४९,१५० जपु २४

जो तुलनात्मक शब्द प्रयोग किए गए हैं :-

१- घणेरा

२- कचु नि कचु ` (` कचुनिकचु `)

३-` इकदु इकि `

४-` तेहा कोइ न `

५-` वड़ा ` ` वडी `

६-` एवडु ऊचा ` , ` उचे `

७- ` उचे उपरि उचा `

विशेषण	शब्द		प्रत्यय
१- घणेरा -	घण	+	एरा (बहुत अधिक)
२- कचुनिकचु	कचु +		नि +(कचु) सब से अधिक कच्चा
३- इकदु इकि	इक + दु + इकु		एक से बढ़ कर एक
४- तेरा कोइ न			ऐसा कोई भी नहीं
५- वडा - वडी			

६- एवडु उचा = ए + वडु उचा = इतना वडा (सब से बड़ा)

७- उचे ` उपरि ` उचा = सब से ऊंचा

` एरा ` ,` नि ,` दु `, प्रत्ययों द्वारा सब से तुलना की गई है ।

` एवडु ` द्वारा भी सब से तुलना की गई है ।

` उपरि ` के प्रयोग द्वारा भी सबसे तुलना की गई है ।

` को न` से भी सब से तुलना की गई है ।

इस प्रकार प्रभु की महत्ता दिखाने के लिए इन प्रत्ययों और शब्दों द्वारा काम लिया गया है । स्त्रीलिंग बनाने के लिए ` इ ` प्रत्यय का प्रयोग किया गया है ।

0 - 0 - 0

- 0 -

0

क्रिया

रचना के अनुसार धातुओं के दो भेद होते हैं। मूल धातु २- यौगिक धातु ।

१- मूल धातु

मूल धातुएं वे हैं जो किसी के सहायता के बिना बनी हों जैसे कर, चल , बैठ इत्यादि ।

गुरु नानक साहित्य में प्राय: निम्नलिखित मूल धातुओं का प्रयोग हुआ है :-

स्वरान्त :-

हिन्दी । पंजाबी में समान रूप से प्रयुक्त		पंजाबी	हिन्दी	अपभ्रंश प्राकृत
		करला	बिल्ला	
कमा	सी	परो (पिरोल)	बिला	मुठी (ठगना)
	रो		बाउरा	
खा			ला	फलो[1]
गया			ले	
गा				
छा				
जा				
ढो				
दे				
धो				
न्हा (आधुनिक रूप)				
पा				
पी				
पढ़ना				

१- फलो - गुरु नानक ने इस का प्रयोग ` कुपना ` अर्थ में किया है परन्तु प्राकृत में इस का अर्थ देखना है । प्र + लुय ` प्रलय से विकसित जान पड़ता है ।

व्यंजनांत

हिन्दी । पंजाबी में
समान रूप से प्रयुक्त

उग	टल	फट
उजड	टिक	मर
उड़	उर	मिल
कर[1]	ढाल	मांज
कट	तुल	माण
खिल	तोड	मोह
खेल	थक	रच
गल	घर	लाद
चल	निकल	विछुड
चउ	नाच	विरोध
चमक	निज	(निमा आ० रूप)
चुण[2]	पिट	सुन
चेत	परख	सह
चुग	पच	हार
छल	पउ	
जप	पछाड	
जल	पाल	
जाण	पूज	
जोड[2]	फिर	

१- कर आदि धातुओं का अन्तिम व्यंजन सुविधा की दृष्टि से हलन्त नहीं किया गया ।

२- चण : चुन हिन्दी

हिन्दी	पंजाबी	
उवर	कट	पहिर(पहिन आ , रूप)
गरज	कुह	पसर[2]
चुक	कत[2] (कातना)	पाउ
छोड	कुक[3]	पोड
डूब	खिंड	फोल(फरोलना भी आ०पंजाबी) में चलता है।
डाल	सुथ (गवा)	बह (बैठना भी आ०पंजाबी में चलता है)
ढूंढ	खट	बन
ताप	खप	मुन
पूछ	गाल	नुकर(आज इस का प्रयोग हिन्दी में भी मिलता है)
वथ[1]	थड	रल
माग	जाप	रूल
मूल	जण	लंघ(हिन्दी में भी मिलता है)
भरम	झिमक(चमकना)	वस
माग[2]	ढह	विआप(व्याप्त)
लूट	तक	वग
	दस	वीआह[4]
	निहाल(विदेशी फैलाना विकसित करना)	विस
	निवउ	वाह(खेती करना)
	नस(नस्स)	सिमर
		सवार

१- आज वध और माग का प्रयोग सानुनासिक रूप में होता है। गुरु नानक ने `मंगहि` प्रयोग भी जपु में किया है।

२- पंजाबीप्रयी प्रवृति के अनुसार `वढ` आदि धातुओं का `ढ्ठ` रूप होना चाहिए और यही रूप अपभ्रंश किंवा प्राकृत में भी मिलता है। परन्तु नानक वाणी में इस प्रकार के द्वित्व रहित रूप ही मिलते हैं।

३- इस का प्रयोग हिन्दी में भी मिलता है जैसे कोयल कूकती है।

४- वीआह - पंजाबी में `विआह` मिलता है। गुरु नानक ने दीर्घ (ई) का प्रयोग किया है।

तदभव

	प्राकृत । अपभ्रंश
	अप्पउं । पहुंचना
[1] खउल (खौल	अंवउ ।
। हिन्दी	खिसर (ढीला पीडना) तुलनात्मक
निरवह । निवाह करना	गहं (पकडना)
परजार (जलाना)	चबाह (कहना)
[2] ध्राप (तृप्त होना)	जिण (जीतना)
निरजासि (निर्णय करना)	फखण (फख मारना)
राच (रुच , अच्छा लगना)	तिप्त (तृप्त होना)
विंद (वंदना करना)	तुठ (तुट्ठ) संतुष्ट होना
बरह (बरसना)	दंफ (जलना , दाफण , ब्रज
(स-ह)	धुंमा (डालना)

१- खउल = ख् + अ + उ + ल
= ख् + ौ + ल
= खौल

गुरु नानक ने सन्धि के नियमों का प्रयोग नहीं किया ।

फता (।।।) समाफाना)

लख (देख)

लंब (बोलना)

लुम (लोम करना)

विहाण (विवाह)

विछुन (अलग)

विगो (नष्ट होना)

विहाग (चमकना)

सरस (खिलना)

वुठ[1] (विट्ठि नाम धातु वृष्टि)

विफ[2] (विज्फ विंधा हुआ । विघ्)

विगुच (विगुंच)

उफरत (उजड़ना)

छीज (खराब होना)

वुडत[2] (डुबना)

बुफे (रहस्य बताना)

मीज (भीगना)

वाच (पढ़ना)

१- वुठ प्राकृत में इस का रूप विट्ठि है ।

१- विफ - प्राकृत में इस का रूप विज्फ है ।

२- वुडत हिन्दी में इस का रूप डुबना है ।

यौगकि धातुएं

जो धातुएं किसी दूसरे तत्व की सहायता से निर्मित होती हैं उन्हें यौगिक धातुएं कहते हैं ।

यौगिक धातुओं का विश्लेषण निम्नांकित रूप से किया जा सकता है :-

अकर्मक

सकर्मक

प्रेरणार्थक

अनुकरणात्मक

अकर्मक

अकर्मक धातुएं वे होती हैं जिन में कर्म की अपेक्षा नहीं रहती । गुरु नानक द्वारा निम्नलिखित अकर्मक धातुओं का प्रयोग हुआ है :-

पछुता   जीवदिआ मरु मारि न पछोताइऐ । रागु माझु पउड़-१२

कुरला

मुकर

गरज

बिलला - रसु कसु टटरि पाईऐ तपै तै बिललाइ । रागु माझु श्लोक २१ ।

यौगिक धातु

उपसर्ग युक्त

अकारान्त

उसर , उगव , उचर , उथाप , उधर , उपज , संग्रह , संधार । संताप

निसवार , निहार , निहाल , निकस

पसर , पहर ,

प्रगट प्रगास

परबोध , विसतार , विसर , विगस

विचर विगड़ विणस

आकारान्त

अथा समा

औकारान्त

विगो , किलो ।

सकर्मक

सकर्मक धातुएं वे होती हैं जिन में कर्म को अपेक्षा होती है ।

गुरु नानक द्वारा निम्नलिखित सकर्मक धातुओं का प्रयोग हुआ है ।

स्वरान्त हिन्दी । पंजाबी

१- कमा = जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ । रागु माफु सलोक ४

विचि दुनिआ सेव कमाइऐ । ता दरगह बैसणु पाइऐ । सिरी ३३, घरु ५

२- खा । मनै मुहि चोटा न खाइ । मनै जम कै साथि न जाइ ।। जपु । १३

३- गा - गावै को ताणु होवै किसै ताणु । गावै को दाति जाणै नीसाणु । जपु । ३

सेई तुधनो गावहि जो उधु भावनि रते तेरे भगति रसाले । जपु । २७

४- ढो - अठसठि तीरथ देनि न ढोई ब्रहमण अंनु न खाही । रागु माफु

५- दे । आपे जाणै आपे देइ । आखहि सिभि केई केइ । जपु । २५

भरीए हथु पैरु तनै देह ।

६- धो - पाणी धोतै उतरसु खेह ।। जपु । २०

७- पी - जो रतु पीवहि माणसा तिन किउ निरमल चीतु । रागु माफु सलोक।८

जमु जंदारु जोहि नही साकै सरपनि उसि न सकै हरि का रसु पीजै (रामकली ।५)

८- रो - पेईअड़े पिरु जातो नाही । फूठि विछुंनि रोवै धाही । रागु माफु घरु १।१

हिन्दी

खिलो । बुठै धाहु चरहि निति सुरही साधन दही खिलोवै । रागु बाफ सलोक ४५

ला (जितु तू लाइहि सचिआ तितु को लगै नानक गुण गाइ (मलार)

ले - लाल जवेहर रतन पदारथ खोजत गुरमुखि लहीऐ । प्रभाती । १७

मुठी - अगणि मुठी महलि न पावै अगण गुण - रागु माफ । १

बखसावणिआ

फलो

पंजाबी

परो

ला- सति गुर मेटे सोझी पाइ । सचे नामि रहे लिव लाइ ।

प्रभाती- विभास , असटपदीआं १।४

व्यंजनांत

हिन्दी पंजाबी

उग - सुरति होवे पति उगवे गुरवचनी भउ खाइ । सिरी रागु ।१०

उजड

उठ

कर

खेल

गल= निडरिआ उसु लगि गरबि सि गालिआ । रागु माझ - पउडी ।१४।

चल = हुकमी हुकमु चलाहे राहु । नानक विगसै वेपरवाहु (जपु ।३

चढ़ चड़ = केसरि कुसुम गिरगंमै हरणा सरब सरीरी चढ़णा । तिलंग

चमक अखी लोड़ी ना लहा हउ चढ़ि लंघा कितु । सूही ।वर ६।घरु।२।२

चुण = एनी फुली रउ करे अवरि कि चुणीअहि डाल(रागु सूही सलोक २०
बिनु नावै चुण सुटीअहि कोइ न संगी साथि । सिरी , असट-४

चेत = नानक गुरु न चेतनी मनि आपणै सुचेत । रागु आसा ।वार सलोक

चुग

छल = किउ पछालि जाइ किउ छलीऐ जे बलि रूपु पछाने । प्रभाती दखणी

जप = नामु जपै भउ भोजनु खाइ । गुरमुखि सेवक रहे समाइ । धनासरी
असर ।२।५

जल

जाण = जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई । जपु जी ।५

जाग

जोड

टल

टिक

उर - उरि घरु घरि उरु उरि उरि उरु जाइ ।
सो उरु केहा जितु उरि उरु जाइ ।
(रागुगउडी)

ढाल - भउ खला अगनि तपताउ । भांडा भाउ अंमृतु तितु ढालि । जप ३८

तुल

थक

घर मुहौकि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु (जपु ४)
जिनि करि कारणि धारिआ सभसै देह आधारु जीउ । रागु सुही ।
कीटा अंदरि कीटु करि दोसी दोसुधरे (जपु-७)

निकल

निकल

पिट

परख जाती दे किआ हथि सचु परखीऐ । महुरा होवै हथि मरीऐ चखीऐ ।

पच कूकर कुड़ु कमाईऐ गुरनिंदा पचै पचानु । सिरी रागु । १६

पढ़ जे बहुतेरा पड़िआ होवहि को रहै न भरीऐ पाइ ।। २ ।।

पछाड

फिर नावहु भुला जगु फिरै बेतालिआ । रागु माझ । पउडी । १४)

(फुट)फट ।जह जह देखा तह तह तू है तुझ ते निकसी फूटि मरा । सिरी ३१

मर

मिल

माज (हिं मांज) बिनु अम सबद न मांजीऐ साचे ते सचु होइ । सिरी रागु
असटपदीआं ५

माण

मोह तनु जलि बलि माटी भइआ मनु माइआ मोहि-मनूर । सिरी रागु ।१५

रच जिनि रचि रचिआ तिसहि न जाणै अंधा अंधु कमाइ । रागु माझ १

लाद अगगे पाछै सुखु नाही गाडे लादे छारु १०१०

विछुड़ मिलिआ होइ न वीछुड़े जे मिलिआ होई । सूही । घरु ६
४।३

(सुण)सुन- गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ । दुख परहरि सुख घरि लै जाइ
। जपु ५

सह

हार - जिथै बालणि हारीऐ तिथै चंगी चुप ।

हिन्दी

उबर सचि रते से अबरे दुबिधा छोड़ि विकार । सिरी रागु असटपदीआं ४
भली सरि जि उबरी हउमै सुई घराहु । सिरी रागु । ११ ।

डुब नानक मनमुखि अंधु पिआरु । बाझु गुरु डुबा संसार । रागु माझ ।२।

डोल

ढूंढ ढंढोलिमु ढूढिनु डिठु मै जगु धूए का धवलहरु । रागु माझु ।३।

तिआग

तप जीउ तपतु है बारोबार । तपि तपि खपै बहुतु बेकार । रागु धनासरी
घरु ३।५

पूछ सतिगुरु पूछउ जाइ नामु धिआइसा जीउ । धनाश्री ।छंतर ।५।

बध साकतु कूड़े सच न भावै । दुबिधा बाधा आवै जावै । रागु माझु (१)
मनमुख भूला ठउर न पाए । जम दरि बधा चोटा खाए । रागु माझ ।१
आपे निरमलु एक तूं होर बंधी धंधै पाइ ।। सिरी असटपदीआं । ३

मरम (हि०)

माग(मांग)

पंजाबी

कठ उचके हिन्दवाणीआ किउ ठिकै कठहि नाइ (रागु आसा)
खुरासान खसमाना

खिंड	दूजे बहुते राह मन कीआ मती खिंडीआ । रागु माझ सलोक ।३६ ।
खुथ	नानक जे सिर खुथे नावनि नाही ता सत चटे सिरि छाई
खट	केते खपि तुटहि वेकार (जपु २५)
खप	जीउ तपतु है बारोबार । तपि तपि खपै बहुतु बेकार । रागु धनासरी । घरु ३।५
जण	
तक	बिनु रासि रासी वापारीआ तके कुंड । चारि । सिरी रागु असटपदीआं-६
	साझ बिहाग तकहि आगासु । रागुगउडी (६)
दस	राहु दसाई न जुला आखा अमड़ी आसु । वडहंस (घरु २स०२।३
निबड	हुकमी होइ निबेड़ भरमु चुकाइसी जीउ । धनासरी । असट।२।२
नस(नस्स)	नानक सतिगुर मिले मिलाइआ दूख पराकृत काल नसे-परभाती-१६
पहिर	सुखु दुखु दुइ दरि कपड़े परिहरहि जाइ मनुख (रागु माझ सलोक ४४)
पसर	कोठे मंडप माडीआ लाइ बैठे करि पासारिआ (रागु आसा पउड़ी)
	पसरी किरणि बिगासे ससि घरि सूरु समाइआ - परभाती
पीड(ना)	जितु खाधे तनु पीड़ीऐ मनि महि चलहि विकार (सिरी रागु ।७)
फतोल	फतोलि फदीहति मुहि लेनि भड़ासा पाणी देखि सगाही रागु माझु । हतु ।३ १
बन	
मन	रब की रजाई मने सिर उपरि करता मने आपि गवावै (रागु माझु सलोकु । १३
मुन(मुन्न)	
मुकर	केते लेले मुकरु पाहि । केते मूरख खाही खाहि । जपु । २५ ।
रल	
रुल	

वस	ना ओहि मरहि न ढागे जाईहि ।
	जिनके रामु वसै मन माहि ।।	जपु । ३७

वग

वीआह	वेलु देखि मनि अनदु भइआ सहु वीआहण आइआ । रागु आसा ।१०

विसर	सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ।। जपु । ५ ।

वाह(ना)

सिमर	किउ सिमरी सिवरिआ नही जाइ । किउकरि साचि मिलउ मेरी माइ
	घनासरी ३(गउड़ी)

सवार	मै बिनु कोइ न लंघसि पारि । मै भउ राखिआ सवारि (गउड़ी)

सोख

हठ

हस

तद्भव

खउल	गदहु चंदनि खउलीऐ भी साहू सिउ पाणु

निरबह	परपंचु वेणु तही मनु राखिआ ब्रहम अगनि परजारी ६७

परजार

थ्राप	जिनि चाखिआ पूरा पदु होइ । नानक थ्रापिओ तनि सुखु होइ ।(
	परभाती । १४

परगास	बिखलु झालि सहजि परगासिआ । परभाती । स० १३

राच

लुझ	कहि कहि कथना माइआ लुझै (रागु माझ स० ४६)

बिंद

वरह

प्राकृत । अपभ्रंश

अंमउ -	राहु दसाई न जुला आखा अमडी आसु । वउहंस । घरु १ । सबद २।३

अबंड़	अंबड़ि कोइ न सकई हउ किस नो पुछणि जाउ । सिरी असट ५
आडा	
खिस	चालीसी फुरू होइ पचासी पगु खिसै सठी के बोढेपा आवै । वार माफ स०३
गह	
चव	फूठे वैण चवे कामि न आवए जीउ । धनासरी । छंत ३।४
चबाउ	
जिण	
फखण	नानक बोलणु फखणा दुख छडि मंणिअहि सुख (रागु माफ सलोश ४४)
तिपत	बंधन सउदा अण बीचारी । तिपति नाही माइआ मोह पसारी - आसा इकतु ।
तुठ	सतिगुरि तुठे पाइअनि अंदरि रतन भंडारा । रागु माफु । पउड़ी ।४।
दफ	पवहि दफहि नानका तरीऐ करमी लगि (रागु माफु सलोक ३६)
घुमा	
पतीणा	लोकि पतीणै ना पति होइ । ता पति रहै राखै जा सोइ । रागु धनासरी घरु दूजा ।३
लख	
लंब	
लुम	
विहाण	
विछुंन	नदीआ वाह विछुंनिआ मेला संजोगी राम । रागु आसा । घरु ३।५
विगो	दयि विगोए फिरहि विगुते किटा वते गला । रागु माफु । स० ४५

विहाग

सरस

बुठ		वुठे अनु कमादु कपाहा समसे पउदा होवै ।

राग माफ । सलोक ४५

विभ

विगुच		सिंचोताणि विगुचीऐ बुरा भला दुइ नालि जीउ
		फिकाबोलि विगुचणा सुणि मूरख मन अजाण ।

सिरी ।४।

छीज		मै तेरे डरु आला खपि खपि छिजै देह -

सिरी रागु । ६ ।

बुडत		मनहठि मती बूडीऐ गुरु मुखि सचु सु तारि ।

सिरी रागु । १६

मीज

वाच

गुफतम	(गुरु नानक फ़ के स्थान फ का प्रयोग किया है ।	
गुफतन् धातु		
धातु	भूतकाल	
गुफतन	गुफतम	
		ध्यान देना (करना)
करदन	कुदन	कुन
	दनिस्तन	(जान ले) दानी
गरिफत	(गिरफतह)	(पकड़ना)
दाश्तन	दारद(रखता है)	
गश्तन	गसतम (मै घूमा)	
वगोयद	बुगोयद (कहा)	

प्रेरणार्थक क्रिया

गुरुनानक की भाषा में प्रेरणार्थक क्रिया के निम्नलिखित रूप मिलते हैं।

आ प्रत्यय लगा कर।

सुफाए १५०।२१

तपाइ १४१।२८

आव प्रत्यय लगा कर

गडावै , जाणावै

आल वाला रूप

उठाली ८७७।१५	जीवालहि १५४।६
बहालिआ ४६३।२४	दिखालिआ ११४०।२६

आकारान्त धातुओं के साथ `आल` के स्थान पर `वाल` का प्रयोग मिलता है।

खा से खवाले १२६०।२१

ना से नावालिआ ५८०।२५

इसके अपवाद भी उपलब्ध हैं जैसे

पा से पवाई १२८०।६

धातु के अन्त में `ला` का प्रयोग करके। यदि धातु स्वर अन्त हो तो दीर्घ स्वर को ह्रस्व बना कर।

रो से रुलाइआ

दिख से दिखलाइआ

धातु के मध्यवर्ती स्वर को गुण करके ।

डुब से डोबै ४६८।११
सुध से सोधे ६३८।१
सुल से सोलै ६०७।२१

कहीं कहीं धातु का गुण किया स्वर भी स्थिर है और अन्त में प्रेरणार्थक ' आ ' भी लगाया है , जैसे :-

दो अक्षरात्मक रूपों में :

ढह से ढाहसी ६३४।२ ढाहाहदा १०३३।२१

जब साधारण क्रिया का धातु उपसर्ग लग कर बना हो अर्थात यह दो अक्षरात्मक हो तो दूसरे अक्षर का ह्रस्व स्वर प्रेरणार्थक चिह्न ' आ ' में बदल जाता है ।

बिसर से बिसार बनकर पुन: बिसारिआ
बिनस से बिनास बनकर पुन: बिनासे
उसर से उसार होकर उसारे ४३३।१३
उबर से उबार होकर उबारे ५६७।८
बिसर से बिसार होकर बिसारे ६६३।६
बिगस से बिगास होकर बिगासे ५४।१३

गुरु भाषा में अधिक प्रेरणार्थक क्रियायें ऐसी हैं जिनका (१) प्रेरणार्थक अर्थ लोप हो गया है और वह साधारण क्रियायें बन गई है (२) या छंद की आवश्यकता के कारण प्रेरणार्थक चिह्न बढ़ाया गया है परन्तु क्रिया साधारण क्रिया का ही अर्थ देती है । जैसे -

थापे १०५।४ , हरखाई १२७३।२० , लावे ६४४।५ , पालहि २२८।१७

नाम धातु

संज्ञा शब्दों में कुछ विशेष प्रत्यय जोड़ने से जो धातु बनते हैं उन्हें नाम धातु कहते हैं।

गुरु नानक द्वारा निम्न संज्ञाओं का प्रयोग नाम धातुओं के रूप में हुआ है।

१-	रंग[१]	६-	सूझ
२-	परख	१०-	निरबह(निर्वाह, हिन्दी)
३-	मोह	११-	परगास
४-	माल	१२-	परच(परिचय देना)
५-	वीआह	१३-	संतोख
६-	गरज	१४-	सम्हाल-समाल[१]
७-	तिआग	१५-	संगरह[४]
८-	मुल[३]	१६-	बूझ
		१७-	तलब[२]
		१८-	निवाज़

१- सम्हाल और समाल एक ही अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं। इन में केवल वर्तनी का अन्तर है।

रगे का किआ रंगीऐ जो रते रंग लाइ जीउ (रागु सूही)

२- बाकी वाला तलबीऐ सिरि मारे नंदारू जीउ (रागु सूही)

३- बहु रंगु देखि मुलाइआ[३] मुलि मुलि आवै जीउ

४- नामु समालहु नामु संगरहु[४] लाहा जगु महि लेहु।

१

नाम धातु

अरथ , अरंभ , अंबड , सरस , सीगार , सुख , सतु , संतोख ,
हरख , होम , कम , कुरल , कूक , खेड , गरव , चाह ,
छल , जनम , जीत , जोग , चूक , छुट छेह , टोल , ठग ,
ठाक , ठोक , तिआग , तग , दीप , धीर , नथ , निवास ,
परस , पुकार , बलिहार , फिर , थक , बखस , बीज ,
बैराग , माग , मीज , भिट , मुंज , भुल , भोग , मुकत ,
रस , रहस , रोक , रंग , लुक , लोच , वीचार , वणज ,

फारसी

करदम , खरीदि , गसतम , गलतु गिरफतह , गुजारहि ,
गुदारे , गुफतम , गोईं , जोइ , दानी , दारद , दिहंद ,
निवाजे , नेस , फुरमावहि , बरवसे , बिअफतम , बगोइ ,
कबुल , कुरबाणो , तलबीऐ ।

संयुक्त क्रिया

वर्तमान काल के कृदंत की सहायता से बनाए रूप ।
इन क्रियाओं से निरंतरता का बोध होता है ।

चलती आई ।एकि चले हम देखह सुआमी भाहि चलंती आई । ८७६।११

जीवत जीवै इउ पति पाणी सिफती सीपै नानक जीवत जीवै । ६५५।२६

जागत रहहि ओइ जागत रहहि न सुते दीसहि । १०२५।२४

गुरु भाषा में आ, जी , रह के अतिरिक्त , भज मर जा के साथ भी वर्तमान कालिक कृदंत के रूप मिलते हैं ।

पुर्व कालिक कृदंत के योग से बनाए रूप :

ढाहि उसारै ढाहि उसारै उसरे ढाहै । ६३५।२०

खोलि चली लाज मरती मरि गई घुघंट खोलि चली । ६३१।१०

करि थाकी हार डोर कंकन घणे करि थाकी सीगारु । ६३७।१८

देखहु बीचारि हार बिनु किनि सुखु पाइआ । ३७।२०
देखहु मनि बीचारि ।

गुरु भाषा में पुर्व कालिक कृदंत का प्रयोग उसर , उजड़ , सह , समा , सोख , संच , कह , कर , चल , जा , जी , तर , त्रिपत , थाप , देख , धिआ , धर , पछता , बैठ , बिनस , मर , मिल , मंग विगस , के साथ किया गया है ।

दो संयुक्त क्रियाओं में दो विभिन्न पुर्व कालिक कृदंतों का योग ।

अनेक संयुक्त क्रियाएं ऐसी भी मिलती हैं जिन में कभी तो ध्वनि को समानता के कारण और कभी अर्थ की एकरूपता के कारण कृदंत को दुहराया है । जैसे -

(ध्वन्यात्मक समानता)

जलिबलि जाउ । १४।५
गिडि मुड़ि पुरहि ताल । ४६४।२६
डिठी ठौकि बजाइ । ६१।२३

गुरु भाषा में तप , थाप , रह , आ , जा , देख के साथ ऐसे कृदंतों की पुनरुक्ति के उदाहरण मिलते हैं ।

एक ही पूर्वकालिक कृदंत की पुनरुक्ति से कार्य की निरंतरता अधिकता और उसे पुन: करने को सूचित किया है । इस के उदाहरण गुरु भाषा में पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं ।

करि करि थाकी । करि करि थाकी मीत घणेरे । १०२१।२६

फिरि फिरि आवै । फिरि फिरि आवै फिरि फिरि जाइ । ६३५।१२

तपि तपि खपै । जीउ तपतु है बारोबार तपि तपि खपै बहुतु बेकार । ६६१।२४

बहि बहि ऐसी ।अवगुण बहि बहि ऐसी । ६८६।११

गुरु भाषा में इस कृदंत की पुनरुक्ति के उदाहरण आ , आख, खा , जा , जनम , घर , पछता , पा , बुझ , मर , रो के साथ भी मिलते हैं ।

भुतकालिक कृदंत के योग से बनाए रूप :

भुत कालिक कृदंत के संयोग से बनी क्रियाओं से निश्चयता , निरंतरता आदि की सूचना मिलती है ।

जैसे -

बधा जाइ । नानकु चितु अचेतु है किता बधा जाइ । ६५५।१६

मेटिआ जाइ । जमण मरण न सुझई किरतु न मेटिया जाइ । १००६।२२

रहै - राता । राति दिनंति रहै रंगि राता । ६३१।४

सुते दीसहि । ओइ जागत रहहि न सुते दीसहि । १०२५।२४

तपै तपाइआ । ६४३।१४ कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ ।

इस कृदंत का जा , सुण , रह , तप , मव , मिट के साथ प्रयोग मिलता है ।

भावार्थक कृदंत :

इसके 'रहिआ ,' के साथ प्रयोग से निरंतरता , ' सकणा ' के साथ प्रयोग से कार्य करने का सामर्थ्य जाणा के साथ प्रयोग से काम की सम्पूर्णता की सुचना मिलती है ।

उदाहरण

जोहि नही साकै । जमु जंदारू जोहि नही साकै । ६०५।८

डसि न सकै । सरपनि डसि न सकै उरि का रसु पीजे । ६०५।८

धारि रहिआ । भरपुरि धारि रहिआ निहैकवलु । १०२२।७

जलि जाइ । बीर चलै घरि आपसो बहिसा बिरहि जलि जाइ । ६३५।१५

चुकि गइआ । भुलिआ चुकि गइआ तपतालु । १२८७।२

इस कृदंत के आ , घुम , लड , छड , ला , ले , सुण , दे , पे , चल आदि के साथ प्रयोग मिलते हैं ।

क्रियार्थक संज्ञा :

इस कृदंत के योग से बने रूपों से कार्य की निश्चयता और निरंतरता का बोध होता है , जैसे -

आवणु जाणु । एकु सोचै ता गति मिति पावै आवणु जाणु रहाई । ६३०।२०

लखणा जाई (अलखु न लखणा जाई है । १०२१।२५

इसके प्रयोग जा , कह , बाध , लग , विगुच , विसर आदि के साथ मिलते हैं ।

कर्म वाच्य : (ईअ , ऐ)

धातु	चढ़	पढ़	चढीऐ -	ऐतु राहि पति ७।११
कर्म वाच्य का	ईअ	ईअ	पवडीआ -	चढीऐ होइ इकीस
चिह्न	ऐ	ऐ	पढीऐ -	पढ़ीए केती आरजा ७।२०

वर्तमान काल अन्य पुरुष : + आइए , + ईऐ ,)

एक वचन -

धातु + आइए

समाइऐ समझाइऐ सलाहीऐ सुणाइऐ
कमाइऐ कराइऐ जुलाइऐ बुआइऐ
दिखाइऐ

धातु + ईऐ

सिमरीऐ सुटीऐ होईऐ हारीऐ
कहीऐ फुरीऐ कुटीऐ

अन्य पुरुष बहुवचन : (धातु + ईअ + हि)

पडीअहि — पडीअहि जेते बरस । पडीअहि जेते मास । ४६७।२०

लदीअहि — पडि पडि गडी लदीअहि पडि पडि भरीअहि साथ । ४६७।१८

धातु + ईअ + नि

समालीअनि — नित नित जीअडे समालीअनि देखैगा देवणहारु । १२।१६

समालीअनि — संभाले जाते हैं ।

अन्य प्रयोग — कहीअनि , परखीअनि , पाईअनि , मरीअनि , भरीअनि , आदि हैं ।

मध्यम पुरुष बहुवचन

धातु + ईअ + हु

जाणीअहु — तांबापारी जाणीअहु लाग ले जावहु । ४१८।२१

अन्य पुरुष एक वचन

आज्ञार्थक — जालीअउ । ५४।१७

भविष्यार्थक — फडीअगु । १२८६।११ । हैं ।

कर्मवाच्य (आदरार्थक)

मध्यम पुरुष

लीजै — प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजै । ५६६।२६

दीजे — मै दीजै नामु निवासु हरि गुण गावसी । ७५२।७

अन्य प्रयोग

सहीजे ।६०५।१०,कीजे ।६०५।८ , सीजे ६०५।१६ ।

का — कर्मवाच्य का इअ चिह्न लगाने से पूर्व धातु के स्वर को गुण करके भी कर्मवाच्य बनाया है जैसे -

सकेलीऐ — इथनु अधिक सकेलीऐ भाई पावकु रचंक पाइ । ६३७।१५

सकेलीऐ — सकेल के ` क ` के अ को ए करके ` सकेलीऐ ` बनाया गया है ।

(सकेल — सकेलन करना इकठा करना बताया गया है)

च। प (य , ज के स्थान पर)

कीचे — पहिला वसतु सिवाण के तां कीचै वापारि । १४१०।७

दिचे — दोझी दिचै दुरजनां मित्रां कुं जेकारु । १४१०।७

धोपे — अठ सठि तीरथ मरसि विगुचहि किउ मलु धोपै पापै । १०१३।५

मरीऐ मति पापा कै संगि ओहु धोपै नावै कै रंगि । ४।१६

धोपई — पाणी चितु न धोपई मुखि पीतै तिख जाइ । १२४०।१०

सि।जा।हो। — की सहायता से बनाए कर्मवाच्य के रूप

भूत कृदंत के साथ । जा।हो । के वर्तमान रूपों को जोड़ कर भी कर्मवाच्य के रूपों का निर्माण किया है ।

धातु + इआ। जा + इ

अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ । ५।२७

बहुता करमु लिखिआ न जाइ । ५।१६

कीमति पाइ न कहिआ जाइ । ६।१४

हो के साथ

(धातु +ता + हो + इ)

थापिआ न जाइ कीता न होइ २।६०

मनु वैरागी घीर वसै सच राता होइ । २१।८

कर्मवाची : कर्तृवाची:

गुरुभाषा में कुछ क्रियापद ऐसे भी है जो वास्तव में कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया हें परन्तु उनका प्रयोग कर्तृवाच्य अकर्मक क्रिया की भान्ति किया जाता है । जैसे -

उपजै — जगु उपजै बिनसै पति खोइ । ४१३।४

बुझै — गुरमुखि होवै बुझै सोइ । ४१३।४

भीजै — गुरमुखि नामु धिआइऐ मन मदरु भीजै । ४१६।१२

छीजै — मै तेरैहरु आला खपि खपि छिजै देह । १६।१५

कर्म वाच्य

कर्म वाच्य में कर्म की प्रधानता होती है और क्रिया का प्रधान सम्बन्ध सीधा कर्म से होता है अर्थात् क्रिया का वाच्य कर्म होता है ।

गुरु नानक वाणी से कर्म वाच्य के कुछ उदाहरण :-

१- हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुखु सुखु पाईअहि (जपु)
२- नदीआ अते वाह पवहि समुंदि न जाणी अहि (जपु)
३- केते वरमे घडीअहि रूप रंग के वेस (जपु)
४- बेमारगि मुसै मंत्रि मसाणि सिध गोसटि २५
५- सबदि भेदि जाणै जाणाई सिध गोसटि २६
६- मधु अंमृतु पीआ इहु मनु दीआ गुर पहि मोलु कराइआ (रागु सूही)

विश्लेषण क्रिया	= धातु	प्रत्यय
१- पाईअहि	= पा	+ ईअहि
२- जाणीअहि	= जाण	+ ीअहि
३- घडीअहि	= घड	+ ीअहि
४- मुसै	= मुस	+ ै
५- जोणाई	= जाण	+ आई
६- कराइआ	= कर	+ आइआ

कर्म वाच्य बनाने के लिए प्रत्यय = ईअहि = बहुवचन (अन्य पुरुष (वर्तमान)
ै एक वचन (वर्तमान)
आई एक वचन (वर्तमान)
आइआ एक वचन (भूतकाल)

हिन्दी में कर्म वाच्य के प्रत्यय = े

उदाहरण :-

वह दुख सुख में डाले जाते हैं - े (जाते हैं (बहुवचन (अन्य पुरुष)
वह मारा जाता है ा (जाता है) एकवचन (अन्य पुरुष)
उस से मूल्य करवाया गया वाया (गया)
कराया गया आया (गया)

पंजाबी उस कोलों मुल कराया गया आया (गया)

अपभ्रंश के

१- ` ईंअहि ,` , आई , ` प्रत्ययों का प्रयोग ही गुरु नानक द्वारा किया गया है ।

२- गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त ` आइआ ` प्रत्यय का प्रयोग खड़ी बोली और पंजाबी दोनों में होता है ।

निरुक्त में अपि को संसर्गार्थ बताया है और यहां भी दो क्रियाओं का संसर्ग अभिहित है। सर्वप्रथम प्रत्यय - इ य है। उत्तरकाल में विशेषता आ०भा०आ० भाषा के विकास में इस का हाथ है।

उ० व्य० में करि आइ इतिवक्ता ` (कारिका १४) में यही नियम मिलता है। कीर्तिलता में साधि सुनि आदि का प्रयोग मिलते हैं।

सदेशरासक का दुहरा पु० का प्रयोग देहेवि करि आ०भा०आ०

हिन्दी और पंजाबी का पुर्वगामि प्रयोग है। ` अपभ्रंश भाषा का अध्ययन वीरेन्द्र ` श्रीवास्तव।

इस प्रकार कह सकते हैं कि गुरु नानक के पूर्वकालिक क्रिया प्रयोग अपभ्रंश से पूरी साम्यता रखते हैं। खड़ी बोली और पंजाबी के पूर्वकालिक प्रयोग भी अपभ्रंश का अनुकरण करते हैं।

काटि	=	काट कर	इ प्रत्यय लगाकर गुरु नानक ने पूर्वकालिक क्रियाएं बनाई गई हैं।
देखि	=	देख कर	
मेटि	=	मिटा कर	
गहि	=	पकड़ कर	
अलाइ	=	अलापकर	
करि	=	कर के	
गाइ	=	गा कर	

प्रकार

पूर्वकालिक क्रियाएं

गुरु नानक साहित्य में निम्नलिखित पूर्वकालिक क्रियाओं का प्रयोग हुआ है।

`इ + धातु`

१-मउतकि काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ (सिध गोसटि)
२- अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानक ता का दासु (सिध गोसटि)
३- आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई (सिध गोसटि)
४- अनक जनम विछुरत दुख पाइआ। कर गहि लेहु प्रीतम प्रभ मिलाइआ
५- तेरा सदउा सुणीजै भाई जे को बह अलाइ
६- सहजि सीगार कामणि करि आवै। ता सोहागणि जा कंते भावै
७- जनमु मरणु पखाणु हरि गुण गाइ के (रागु सूही घरु १०।५)

तात्कालिक

जनमत ही दुखु लागै मरणा आइ के (रागु सूही काफी ५)

अपभ्रंश साहित्य में गम्पि, आणिवि, लेवि प्रयोग मिलते हैं इनमें पि और वि प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है।

१- काटि = काट कर २= देखि = देख कर, ३= मेटि - मिटा कर ४- गहि लेहु = पकड कर ५= अलाइ = अलाप कर।

पूर्वकालिक क्रिया बनाने के लिए इ प्रत्यय का प्रयोग किया गया है।

यह वाक्य की मुख्य क्रिया के अधीन होती है और इसका सिद्ध होना मुख्य क्रिया के होने से पहले पाया जाता है। (इसीलिए इसे पूर्वकालिक कहते हैं)

प्रवर्तनार्थक (विध्यर्थक)

क्रिया का प्रवर्तनार्थक प्रकार वह है जिस से प्रवर्तना (किसी को काम में प्रवृत्त करना या लगाना) पाया जाय। आज्ञा , प्रार्थना प्रश्न , अनुमति मांगना , अनुमति देना , उपदेश आदि ये सब प्रवर्तना के अन्तर्गत हैं। कभी कभी क्रिया का सामान्य रूप भी प्रवर्तनार्थक क्रिया के रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे यह करना।

गुरु नानक वाणी में निम्नलिखित प्रवर्तनार्थक क्रियाओं का प्रयोग हुआ है।

प्रार्थना

१- सुरति मति नाही चकराई करि किरपा प्रभ लावहु पाई। रागु सूही।

२- मैं दीजे नामु निवासु अंतरि सांति होइ

३- प्रणवति नानक सुणि मेरे साहिबा डुबदा पथरु लीजे।

४- सतिगुर भीखिआ देहि मै तू संम्रथु दातारु।

५- हीणउ नीचु करउ बेनती साचु न छोडउ भाई। रागु सूही घरु ५।६

क्रिया	अर्थ
१- करि किरपा	कृपा करो
२- लावहु	लगाओ
३- दीजे	दो
४- लीजे	लें
५- देहि	दो
६- सुणि	सुनो

गुरु नानक द्वारा इ , आवहु , इज्जइ इजे , हि प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है।

स्पष्ट है कि अपभ्रंश के प्रत्ययों का ही प्रयोग किया गया है।

उपदेश

१- जिसु जलनिधि कारणि तुम जगि आए सो अमृत गुर पाही जीउ
छोडहु वेसु भेखु चतुराई दुविधा इहु फलु नाही जीउ
२- मन रे राम जपहु सुखि होइ
३- चलतौ ताकि रखहु घरि अपने गुर मिलिऐ इहमति होइ जीउ
४- अवगुण छोडि गुण कौ धावहु करि अवगुण पछुताही
५- परहरि लोभु निंदा कूड़ु तिआगहु सचु गुरवचनी फलु पाही जीउ

१-	छोडहु	-	छोडो	-	छोड	+ हु प्रत्यय
२-	जपहु	-	जपो		जप	+ हु प्रत्यय
३-	रखहु	-	रखो		रख	+ हु प्रत्यय
४-	छोडि		छोडो		छोड	+ प्रत्यय (परहर + हि प्रत्यय)
	धावहु		दौडो		धाव	+ हु प्रत्यय
	पछुताही		पछताओ		पछुता	+ ही प्रत्यय
	तिआगहु		त्यागो		तिआग	+ हु प्रत्यय
	परहरि -		छोडो		+	

१- हिन्दी और पंजाबी में धातु के साथ ' ो ' प्रत्यय लगाकर बहुवचनीय अथवा आदर सूचक उपदेश देने की क्रिया बनाने का प्रचलन है। परन्तु गुरु नानक द्वारा इस प्रत्यय का प्रयोग नहीं हुआ है।

२- अपभ्रंश के हु, ५ + और ही प्रत्ययों का ही गुरु जी द्वारा प्रयोग किया गया है।

एकवचन में केवल क्रिया का मूल रूप ही प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न

गुरु नानक वाणी में प्रयुक्त प्रश्नों में से कुछ उदाहरण :-

१- दुनिआ सागरु दुतरु कहीए किउ करि पाईऐ पारि (सिध गोसटि)
२- आपे आखे आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै (सिध गोसटि)
३- सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारु (सिध गोसटि)
४- रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाइऐ गुरदुआरै
५- कवनु सु आवै कवनु सु जाइ कवनु सु त्रिभवणु रहिआ समाई ।

विश्लेषण :-

प्रश्न करने के लिए निम्नलिखित अव्ययों का प्रयोग किया गया है :-
किउकरि , किउ , कवनु किआ

क्रिया	धातु		प्रत्यय
कहीए	कह	+	ईए
दीजै	द	+	इजै
पूछउ	पूछ	+ उ	
पाइऐ	पा	+	इऐ
आवै	आ	+	वै
जाइ	जा	+	इ

स्पष्ट है कि अपभ्रंश के ईए , इजै , उ , इऐ , वै और इ प्रत्ययों का प्रयोग ही गुरु नानक द्वारा किया गया है ।

दीजै , लीजै का प्रयोग ब्रज में होता है । किउ , किआ का प्रयोग खड़ी बोली , पंजाबी में होता है किउ का सानुनासिक प्रयोग खड़ी बोली में होता है ।

वृत्तियां

वृत्ति का तात्पर्य है मन:स्थिति । भाषा में प्रत्येक मन:स्थिति को प्रकट करने के लिए एक एक क्रिया रूपों की कल्पना नहीं की जा सकती । मनोवृत्तियां अनंत हैं अत: उन्हें व्यक्त करने के लिए अनन्त क्रिया रूपों की आवश्यकता होगी । किन्तु भाषा में यह सम्भव नहीं है । अत: क्रिया रूप किसी अमुक मन:स्थिति का सुचक नहीं होता , बल्कि विभिन्न मनोवृत्तियों के फलस्वरूप होने वाली किसी एक विशिष्ट प्रवृत्ति का सुचक होता है । उदाहरण - जाओ क्रिया रूप से आज्ञा क्षोभ , याचना अनेक मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति हो सकती है । किन्तु प्रवृति एक है किसी को जाने के लिये कहना ।

मनोवृत्तियां दो प्रकार की होती हैं - तटस्थ और विधानात्मक ।

तटस्थ वृत्तियों के अन्तर्गत तीन वृत्तियां आती हैं संभावना , शर्त और संकेत । विधानात्मक के अन्तर्गत एक आती है विधि

हिन्दी में इस प्रकार चार वृत्तियां स्वीकार की जाती हैं ।

विधि , संभावना , शर्त , संकेत

विधि के विषय में पहले विचार किया जा चुका है । यहां पर केवल वृत्ति की दृष्टि से विचार किया जायगा ।

शर्त:-

सरचु चंगिआईआ मतु मन जाणहि कल (सोरठि चउपदे)
निरंकार के देस जाहि ता सुखि लहहि महलु
जे तू देहि त हरि रसु गाइ मनु तृपतै हरि लिव लागा
अकथ कथा ले सम करि रहै । तउ नानक आतम राम कउ लहै
कउउ है सिगी राम कली

नदरि करे ता सतिगुरु मेले ता निज घरि
वासा इहु मनि पाए
विनु सतिगुर सेवे जोगु न होइ ।

संभावना

हम डोलत बेड़ी पाप भरी है पवनु लगै मतु जाई (रागु रामकली
सलोक : ११)

संकेत :-

भावै जाउ भावै जाउ
सो अउ घुती जो घुपै आपु

सि० गोसटि

इस समग्र विवेचन से स्पष्ट होता जाता है कि गुरु नानक द्वारा अपभ्रंश के प्रत्ययों का ही प्रयोग अधिक हुआ है ।

काल

धातु रूप प्रक्रिया में काल का विचार आता है। विभिन्न कालों में प्रयुक्त रूपों में पुरुष (उत्तम , मध्यम और अन्य) वचन (एक वचन , बहुवचन)[1] तथा लिंग (स्त्रीलिंग और पुल्लिंग) के अनुसार परिवर्तन होता है। इसी तथ्य को ध्यान में रख कर गुरु नानक के क्रिया-प्रयोगों का काल-रचना की दृष्टि से विचार किया जा रहा है।

वर्तमान काल

अन्य पुरुष

एकवचन

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त क्रियाएं - लघाई[1], चलावै[2] आवहि[3], करेइ[4]
उपोए[5], सुणे[6], बोलिऐ[7], सम्हाले[8], चेतसि[9], जीवाले[10]

अपभ्रंश	चलइ , चलए , चलेदि
खड़ी बोली	चलता (है)
पंजाबी	चलदा (है , ए)

गुरु नानक द्वारा सामान्य वर्तमान अन्य पुरुष , एकवचन में जो प्रत्यय प्रयोग किए गए हैं वे अपभ्रंश भाषा के प्रत्ययों के अधिक निकट हैं[2]। अपभ्रंश व्याकरण के नियमानुसार (प्राय:) ` इ ` प्रत्यय व्यवहृत होती है। गुरु नानक में ` इ ` और ` ए ` दोनों का प्रयोग मिलता है। ` इ `, और ` ए ` का प्रयोग वर्ण एवं मात्रा (इ,ए,ि `) दोनों रूपों में मिलता है। गुरु नानक के प्रयोग खड़ी बोली और पंजाबी दोनों से दूर है।

१- इन्हीं तत्वों के आधार पर संज्ञा का भी विवेचन किया गया है। संज्ञा के अध्याय में इन्हें और विस्तृत रूप से बताया गया है।

२- यही छन्दनुरोधार्थ पूर्ववर्ती धातु के ` अ ` से मिल कर ` ए ` का रूप धारण करती है।

उदाहरण :- १- इस संसारु विखुवत अति भउजलु गुरसबदी हरि पारि लघाई
(रागु आसा)

२- तुधु आपे भावे तिवै चलावे (रागु आसा)

३- जबु लगु रिदै न आवहि यादि। (रागु आसा) जो किछु[8] बोलिए सभुखता

४- आपि कराए आपि करेइ। सोदरु तेरा सो घरु कहा जितु बहि सरब सम्हाले

५- आपि उपाए आपे दइ। मन एकु न चेतसि मूड़ मना। रागु आसा।

६- जो दरि मांगतु कूक करे महलि खसमु सुणे। कहे नानक जीवाले जीआ
जह भावै तह राखु तु ही। रागु आसा

बहुवचन

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त प्रत्यय - समाइ[1], गावनि,[2] ,आखे,[3] गावन्हि[4] ,चली अहि[5] ,छूटही[6]

अपभ्रंश चलहिं,चलन्ति (विकल्प) चलिरे

खड़ी बोली चलते (हैं)

पंजाबी चलदे (हन) जादे (हन)

इससे स्पष्ट होता है कि अपभ्रंश का 'हि' गुरु नानक द्वारा प्रत्यय प्रयुक्त हुआ है।

मध्यम पुरुष

एक वचन

गुरु नानक :- देहि,[1] देइ,[2] निरजो[3] वसोवहे,[4] जाराही[5]

अपभ्रंश : चलिहि, चलसि

खड़ी बोली चलता (है)

पंजाबी जांदा (हैं)

स्पष्ट है कि 'हि और सि' प्रत्ययों का प्रयोग गुरु नानक की भाषा में और अपभ्रंश में समान रूप से हुआ है। इन प्रत्ययों का खड़ी बोली और पंजाबी से कोई मेल नहीं बैठता।

उदाहरण :-

१- जिस तु देहि[1] तिसै किआ चारा। नानक सबु सवारण हारा

२- भावै धीरक भावै धके एक वडाई देइ[2]। रागु आसा

३- अंतरि गुरमुखि तू वसहि जिउ भावै तिउ निरजासि[3] (रागु सिरी घरु ७)

४- साचा मुरारे तानि जापहि जानि मनि वसावहे[4]

५- दरि सेवकु दरवानु दरदु तु जाणही भगती तेरी हैरानु दरदु गवावही

बहुवचन

गुरु नानक :- पिटिहु

अपभ्रंश चलहु चलह , चलहुं

खड़ी बोली चलते (हो)

पंजाबी चलदे (हो)

गुरु नानक की भाषा में और अपभ्रंश भाषा में ` हु ` का प्रयोग समान रूप से हुआ है ।

उदाहरण :-

धंधा पिटिहु माई हो तुम्ह कुछु कमावहु
ओहु न सुणही कतही तुम्ह लोक सुणावहु रागु आसा ।
असटपदीआं १३।४

उत्तम पुरुष

एकवचन

गुरु नानक :- जाउ[१], जीवा[२], जीवां[३], जपी[४], अंधुला[५]

अपभ्रंश चलउं , चलउ (चलामि)

खड़ी बोली चलता (हूं)

पंजाबी चलदा (हां) जांदा (हां)

गुरु नानक और अपभ्रंश में ` उ ` का प्रयोग दोनों भाषाओं की समीपता का परिचायक है ।

उदाहरण :-

१- करम धरम सचु साचा नाउ । ता के सद बलिहारै जाउ । रागु आसा

२- आखा जीवा विसरै मरि जाउ । आखण अउखा सचा नाउ । रागु आसा

३- मति विचु मरणु जीवणु होरु कैसा जा जीवां तां जुगति नाहीं । रागु आसा

४- जा तू देहि जपी तेरा नाउ

५- मन का अंधुला नाइआ का बंधु

<u>बहुवचन</u>

गुरु नानक :	चालह
अपभ्रंश	चलहुं
खड़ी बोली	चलते (हैं)
पंजाबी	जादे हां चलदे (हां)

गुरु नानक और अपभ्रंश में ' ह ' का प्रयोग समान रूप से हो रहा है। खड़ी बोली और पंजाबी में नहीं हो रहा।

वर्तमान काल के तीनों पुरुषों (प्रथम , मध्यम और उत्तम) में गुरु नानक ने जिन प्रत्ययों का प्रयोग किया है वे खड़ी बोली और पंजाबी में प्रयुक्त प्रत्ययों की अपेक्षा अपभ्रंश में प्रयुक्त प्रत्ययों के अधिक निकट हैं।

भूतकाल

अन्य पुरुष

एक वचन

	गुरु नानक : साजो[1], दिखाइआ[2], पाइ[3] अनु
खड़ी बोली	ताथा गया
पंजाबी	जांदा सी गिआ

उदाहरण:

जिनि घरि साजी[1] गगनु आकास । रागु आसा असटपदीआं ३

किआ भवीऐ का ढूढीऐ गुर सबदि दिखाइआ[2] । रागु आसा घरु-८- १६।२

जंत उपाइ विचि पाइअनु[3] करता अलगु अपारु[3]

विशेष :-

णाय कुमार चरिउ की भूमिका में डा० हीरालाल जैन ने लिखा है कि वे सम्पूर्ण ग्रन्थ में शुद्ध भूत आख्यात का एक प्रयोग आसि (आसीत,६।८।११) में पा सके । म०क० में भी आसि के उत्तम पुरुष और मध्यमपुरुष के एकवचन तथा प्रथम पुरुष के बहुवचन में प्रयोग प्राप्त होते हैं ।

बहुवचन

गुरु नानक :-	पाइआ[1], कीए[2], गए[3], दीआ[4]
खड़ी बोली	ते(थे) गए ,
पंजाबी	ओह जादे सी (सन)

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त प्रत्ययों का खड़ी बोली या पंजाबी से कोई मेल नहीं है ।

उदाहरण :-

१- चहु भेदु न पाइआ[1] । नानक सति गुरि ब्रहमु[2] दिखाइआ । रागु आसा

२- देवतिआ दरसन के ताइ दुख भुख तीरथ कीए

३- दर घर महला हसती घोडे छोडि विलाइति, देस गए[3]

४- हरि का नामु निधानु है पूरै गुरि दीआ[4] । रागु आसा
नानक नामु न वीसरै मधु अमृतु पीआ ।

भूतकाल

मध्यम पुरुष

एकवचन

गुरु नानक : आइआ

अपभ्रंश	आसि
खड़ी बोली	ता (था) (गया) या
पंजाबी	दा (सी) गिआ

उदाहरण :-

खुरासान खसमाना कीआ हिन्दुस्तान डराइआ । रागु आसा
आपै दोसु न देइ करता जमु करि मुगल चढाइआ । असटपदीआ

उत्तम पुरुष

एकवचन

गुरु नानक :- जाना [1] , जाता [2] , ढूढीआ [3] , पावा [4] पाइआ [5]

अपभ्रंश	आसि
खड़ी बोली	ता (था) गया
पंजाबी	दा (सी) गिआ

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त 'ता' प्रत्यय खड़ी बोली के प्रत्यय से मिलता जुलता है किन्तु इसका प्रयोग जानना क्रिया में नहीं किया जाता जैसा कि गुरु नानक देव ने किया है। गया (खड़ी बोली) गइआ या गिआ पंजाबी के प्रत्ययों की समता गुरु नानक देव के प्रत्यय से है।

उदाहरण :-

जिसका अंतु धनु सहजि न जाना [1] । आसा
करि वीचारु आचारु पराता ।
सतिगुर वचनी एको जाता [2] ।
चारे कुंडा ढूढीआं को नीकही मै ा । आसा
जा तिसु भावा तबही गावा । तागावे का फलु पावा
मै विचि निरभउ पाइआ । ता सहै के घर आइआ

भविष्यत काल

अन्य पुरुष

एक वचन

गुरु नानक :- पाहि[1], निखुटसि[2], रहसी[3], होइगा[4], होगु[5], कराइसी[6],
वढीअहि[7], मनीअनि[8], वढहु[9], लै[10], जाइ[11]

अपभ्रंश	हसिहि इहु, वेसउ, वसहु
खड़ी बोली	करेगा
पंजाबी	करेंगा

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त ` हि, हु ` प्रत्यय अपभ्रंश के ही प्रत्यय हैं।

गा का प्रयोग खड़ी बोली और पंजाबी दोनों में होता है।

उदाहरण :-

१- जा पति लेखै ना पवै ता जोअ किथै फिरि पाहि। रागु आसा
२- नानक पिंडु बखसीस का कबहु निखुटसि नाहि। रागु आसा
३- इहु मनु मुगधु किउ रहसी, बिनु समझे जप का दुखु सहसी आसा
४- भगति हीणु नानक जे होइगा ता खसमै नाउ न जाइ। रागु बिलावलु
५- आदि जुगादि है भी होगु
६- साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साइ कार कराइसी
(ता दरगह पैधा पाइसी) रागु आसा

७-

८- औ वसतु सिआणीऐ पितरी चोर करेइ।
वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ। रागु आसा

९- जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर।
औ एक न मंनीअनि मारि कढहु बेपीर। रागु सोरठि

१०-११ बहु रंग देखि भुलाइआ भुलि भुलि आवै जाइ जीउ (रागु सूही घरु ६।२

अपभ्रंश काल ` स ` और ` ह ` दोनों का ही प्रयोग मिलता है। पश्चिम में प्राय: स का बाहुल्य रहा है।

00

बहुवचन

गुरु नानक ` हि ` मरनि

अपभ्रंश	हसिहिहिं हसीसहि
खड़ी बोली	हसेंगे
पंजाबी	हसनगे

उदाहरण :-

ऊजल मोती सोहणे रतना नाल जुडंनि , तिन जरु वैरी नानका
जि बुढे थीइ मरंनि

नानक बदरा माल का भीतरि धरिआ आणि । वार सुही की
खोटे खरे परखीअनि साहिब कै दीवाणि । सलोका नालि
सलोक ३ ।

१

मध्यम पुरुष

एकवचन

गुरु नानक :- रोवहुगो , रोई , देवहि ,

अपभ्रंश हसिहिहि , हसीसहि ,

खड़ी बोली हसेगा (हसेगा)

पंजाबी हसेंगा ।

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त ` गो ` प्रत्यय थोड़ी सी भिन्नता के साथ खड़ी बोली और पंजाबी दोनों में प्रयुक्त होता है । अपभ्रंश के ` हि ` प्रत्यय का प्रयोग गुरु नानक द्वारा किया गया है ।

उदाहरण :-

१- तुम रोवहुगो ओस नो तुम्ह कउ कउणु रोई । आसा । असटपदीआ।१३।३

२- जब लेखा देवहि बीरा तउ पडिआ । रागु आसा असटपदीआ पटी

३- जिउ आइआ तिउ जावहि कउरे जिउ जनमे तिउ मरण भइआ ।

रागु राम कली ७

मध्यम पुरुष

बहुवचन

गुरु नानक :- जाणीअहु , जावहु

अपभ्रंश हसिहिहु , हसीसहु

खड़ी बोली हसोगे

पंजाबी हसोगे

अपभ्रंश के प्रत्यय ` हु ` का ही प्रयोग गुरु नानक द्वारा किया गया है ।

उत्तम पुरुष

एकवचन

गुरु नानक	समाउ[1] , देसा[2] , आवा[3]
अपभ्रंश	हसिहिउं हसीसउं
खड़ी बोली	हसूंगा
पंजाबी	हसागां

गुरुनानक द्वारा प्रयुक्त प्रत्यय और अपभ्रंश में प्रयुक्त प्रत्यय ' स ' में समता है ।

उदाहरण :-

१- गुर प्रसादि ब्रहमिं समाउ

२- हुणि उठि चलणा मुहति की तालि किआ मुहु देसा

३- मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि गुण नहीं नालि नावा

रागु धनासरी ।घरु २

एकु सबुद मेरे प्राण बसतु है बाहुडि जनमि न आवा ।

रागु बिलावलु घरु १ चउपद

बहुवचन

गुरु नानक	होइबा
अपभ्रंश	हिइ , सइ
खडी बोली	करेंगे
पंजाबी	करागे

गुरु नानक द्वारा प्रयुक्त ' बा ' अवधी का प्रत्यय है जो ' गा ' आदि अर्थों का द्योतक है ।

उदाहरण :- जो किछु करहि सोई परु होइबा अवरु न करना जाइ

रागु प्रभाती ।

स्त्रीलिंग

वर्तमान काल

एकवचन बहुवचन

अन्य पुरुष पछाणिआ[१] , चमकए[२] , आवै[३] , मोही[४] , करहि[५]

मध्यम पुरुष :

उत्तम पुरुष : मरीआ[६] , धोवा[७] , जाणी[८] , सुहावी[९] , वसा[१०] , आसित[११]

उदाहरण :-

१- साहुरड़े धन साचु पछाणिआ रागु आसा २७

२- बिजुल जिवै चमकए रागु आसा छंत ३५

३- गुरपरसादि ऐसी मति आवै रागु आसा २७

४- लालबहु गुणि कामणि मोही रागु आसा ३५

५- इकि संगि हरि के करहि रलीआ रागु आसा छंत १

६।७ एक न मरीआ गुण करि धोवा (२६)

८- पेवकड़ै धन खरी इआणी । तिसु सहु की मै सार न जाणी (२७)आसा

९- सेजा सुहावी संगि पिर के सात सरि अंमृत भरे आसा छंत १

१०- तुधु अंतरि हउ सुखि वसा तू अंतरि साबासि जीउ

११- तू सहु अगमु अतोलवा हउ कहि कहि ढहि पईआसि जीउ रागु सूही सुचजी

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	विगसी[1], थाकी[2]	आईआ[3], कीते[4], लहन्हि[5], खादीआ[6]
मध्यम पुरुष	भाइ[7]	
उत्तम पुरुष	आनी[8], जागउ[9], भल्ले[10], दीआ[11], सोहनि[12], होदीआ[14], देखि[12] (रही)	

उदाहरण :-

१- नानका हरि वरु देखि विगसी[1] मुंध मनि ओमाहओ । आसा छंत १

२- जपु तपु करि करि संजम थाकी[2] हठि निग्रहि नही पाईऐ ।२।२

३-४ हडोली चडि आईआ[3] दंद खंड[4] कीते रासि । आसा । असटपदीआ ११

५- इकु लखु लेहन्हि[5] बहिठीआ लखु लहन्हि खडीआ

६- गरी छुहारे खांदीआ[6] माणन्हि सेजडीआ

७- सतिगुर न सेविआ हरि भगति न भाई[7]

८- प्रेमु न चाखिआ मेरी तिस न बुझानी[8] । (२६)

९-१० अजै सुजागउ[9] आस पिआसी । भल्ले उदासी रहउ निरासी

११- आपणा मनु दीआ[11] हरि वरु लीआ जिउ भावै तिउ रावए

१२- हउ बनुबनो देखि रही तृणु देखि सबाइआ राम

१३- जिनि सिरि सोहनि[13] पटीआ मांगी पाइ संधूर

१४- महला अंदरि होदीआ[14] हुणि बहणि न मिलन्हि हदुरि

अन्य पुरुष एकवचन भविष्यत् काल

भविष्यत् काल एकवचन स्त्रीलिंग

उदाहरण :- १- देही होवगी खाकु पवणु उडाईऐ = वगी

२-सा धन खली साहुरे किआ मुहु देसी अगै जाइ जीउ = ी , सी

उत्तम पुरुष

एकवचन

आगे सह भावा कि न भावा (रागु आसा)
२६

मिलेगा प्रीतमु तब करउगी सीगारु

गुरु नानक द्वारा लिंग निर्माणार्थ (पुल्लिंग और स्त्रीलिंग के लिए) भिन्न भिन्न प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है। कुछ प्रत्यय ऐसे भी हैं जो दोनों लिंगों में समान रूप से प्रयोग किए गए हैं।

जैसे वर्तमान काल

अन्य पुरुष , एक वचन ` वे ` ` ए ` । मध्यम पुरुष एक वचन उत्तम पुरुष , एक वचन ` इआ ` । पुल्लिंग में ` वहि ` और स्त्रीलिंग में ` हि ` ।

भूतकाल में - ` इंआ ` समान रूप से प्रयुक्त हुआ है।

` अव्यय का अर्थ है जो व्यय न हो । व्याकरण में इस शब्द में व्यय का अर्थ परिवर्तन लिया जाता है । अर्थात् अव्यय वह है जो परिवर्तित न हो । कहा गया है सदृशं त्रिषु लिंगेषु सर्वासु च विभक्तिषु - वचनेषु च सर्वेषु यन व्येति तदव्ययम् । अर्थात जो लिंग विभक्ति और वचन के अनुसार परिवर्तित न हो वह अव्यय है । हिन्दी में अधिकांश अव्यय (यहां , इधर , नीचे आगे , अब यों और पंजाबी ऐथे , ओथे) तो ऐसे हैं , परन्तु ऐसे भी क्रिया विशेषण अव्यय हैं जो परिवर्तित होते हैं जैसे ` वह भागता आया , वह भागती आयी , वह भागते आए ` वह अच्छा करता है , वह अच्छा करती है , वह बड़ा तेज़ दौड़ा , वह बड़ी तेज़ दौड़ी ।`

अव्यय चार प्रकार के होते हैं :-

१- क्रिया विशेषण

२- समुच्चय बोधक

३- सम्बध सूचक

४- विस्मयादि बोधक

गुरू नानक की भाषा में प्रयुक्त अव्ययों का भी इन्हीं आधारों पर विवेचन किया जायगा ।

क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण अव्ययों मे मुख्य उपभेद निम्नलिखित हैं :-

१- कालवाचक , २- स्थान वाचक , ३- दिशा वाचक, ४- रीति वाचक , निषेध वाचक ।

काल वाचक

हिन्दी में अब , जब , तब , कब तथा इनके अवधारक निपात ` ही ` युक्त रूप अब + ही और आज , कल आदि काल वाचक अव्यय हैं ।

गुरु नानक द्वारा निम्नलिखित काल वाचक अव्ययों का प्रयोग किया गया है ।

काल वाचक

अज	६०।१७	घडी कि मुहति कि चलणा केलणु अज कि कलि
आदि।	६३०।२८	उपरि आदि असि तिदु लोइ
सदा	१।११	इकि हुकमि सदा भ्वाईअहि
चिरु	६३२।२४	चिरु जीवनु चेतनु नित नीत ।
नित	६४३।१५	क्वन मुखि कालु जोहत नित रहै ।।
नीत	६३२।२	गुणवंती गुण सारे नीत ।
पुनहि।	५०३।२०	उपदेस गुरू मम पुनहि न गरभं
पुनि ।	६६२।२५	उपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ।।
पुरबि ।	६८६।६	साद कीते दुख परकुडे पुरबि लिखे माइ

अव्यय

क्रिया विशेषण पुनरोक्ति

काल वाचक

जुगह जुगह	-	नानक तोटि न आवई तेरे जुगह जुगह भंडार ।।
जुगु जुगु	-	जुगु जुगु साचा है भी होसी । १०२२।१३
तिलु तिलु	-	दिनु दिनु आवै तिलु तिलु छीजै । १३३०।१६
नित नित	-	नित नित लेहु न छीजै देह ।।१२५७।१
नीतानीत	-	सगल गुण अवगुणु न कोई होहि नीता नीता । ७६५।२७
वार वार	-	कुसा कटीआ वार वार पीसणि पीसा पाइ । १४।२७

कई बार संज्ञा की पुनरोक्ति करके दूसरे शब्द के अन्त पर अन्तर । अन्तरि लगाया है ।

जुगह जुगंतर	-	जुगह जुगंतर की बिधि जाणै । १०२७।२१	
जुगह जुगंतरि	-	जुगह जुगंतरि मुकति पराइण । सो मुकति भइआ पति पाइदा ।	१०३८।६

क्रिया विशेषण की पुनरोक्ति

सदा सदा	-	नानक सोई सेवीऐ सदा सदा जो देइ । ६५६।२२

सामासिक रूप :

दो भिन्न संज्ञाओं अथवा अव्यय के योग से बना सामासिक रूप :

अहिनिसि	-	कलर केरी कंध जिउ अहिनिसि किरि ढहि पावि । १८।२७

सासि गिराह	-	हुकमी साह गिराह देदा जाणीऐ । २८८।२८
खिनु पलु	-	जिन खिनुपलु नामु न वीसरै ते जन विरले संसारि । २१।२३ ।
दिनसराति	-	राम नामु जपि दिनस राति । गुरमुखि हरि धनु जानु । २१।१४
दिनु रैणी	-	बिनु सबदै मुठे दिनु रैणी । २२७।१५
निसिबासुर		सम तेरी तू मैरा निसि बासुर रंगि रावै । ११०७।१०
राति दिनसु	-	लव लगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि । ४७१।६ ।
रैणि दिनसु	-	रैणि दिनसु दुइ दाई दाइआ । १०२१।४ जगु खेले खेलाई है ।
पल पंकज	-	पल पंकज महि नामु छडाए जे गुर सबदु सिआपे ।१२७५।११

तीन संज्ञा पदों के योग से :

खिनु पलु घड़ी	-	खिनु पलु घड़ी नही प्रभु जानिआ जिनि इहु जगु उपाइआ । १२२६।२०
मुहतु न चसा	-	मुहतु न चसा विलंमु भरीऐ पाईऐ । १४७।२७

दो भिन्न सर्वनाम अथवा क्रिया विशेषणों के योग से(बिना मात्रा के) :

अब तब	-	अब तब अवरु न मागउ हरि पहि नाम निरंजनु दीजै पिआरि ५०४।६
अब ही कबही	-	अब ही कब ही किछु न जाना तेरा एको नामु पछानो । ७९६।२।३
कबही न	-	कबही न घाटसि पूरा तोलो । १०२६।२७,२८

मात्राओं समेत :

जब लगु	-	जब लगु साहिबु मनि वसै तब लग बिघन न होइ । ६६२।१४

संकेत वाचक :

जे करि — अउखध मंत्र मूलु मन एकै जेकरि दृढ़ किंतु कीजै रे । १५६

विशेषण तथा संज्ञा के योग से :

चहु जुगि - मासु पुराणी मासु कतेबी चहु जुगि मासु कमाणा ।१२६०।७

जुग चारि - सभु पछाणिआ से सुखीए जुग चारि । ५५

तिकाल - पुसतक पाठ बिआकरण बखाणै संधिआ करम तिकाल करै ।
११२७।२०

लखवार - सोचि सोचि न होवई जे सोची लख वार ।। २१५

क्रिया-विशेषण-मूलक वाक्यांश :

दो भिन्न क्रिया विशेषण मिला कर अथवा कोई और अव्यय लगा कर -

आजु कालि - आजुकालि मरि जाइऐ प्राणी हरि जपु जपि रिदै धिआई हे
१०२५।२८,२६

पुनरपि - पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ । २२४।२

आजु कि कलि - घड़ी कि मुहति कि चलणा खेलण अजु कि कलि । ६०।१८

क्रिया विशेषण और संज्ञा मिला कर :-

अजपा जापु न वीसरै आदि जुगादि समाइ । १२६१।६

आदि जुगादी है भी होसी अवरु झूठा सभु मानो ।
४३७।१२

बिनु तिलु--- फलु - बिनु तिलु रहि न सकै फलु
जल बिनु मरनु जीवनु
तिसु ताई । १२७३।१८

क्रिया विशेषण , अव्यय या अव्य शब्दों के योग से :

अनदिनु - तनु मनु समधा जे करी अनदिनु अगनि जलाइ । ६२।१०

खिनु ताई - नानी सी बुंद पवनु पति खोवै जनमि मरै खिनु ताई ।
१२७४।८

पहिलो दे : पहिलो दे जड अंदरि जमै ता उपरि होवै छाउ । १२८८।६-१०

निरंतरी - घटि घटि जोति निरंतरी बूझै गुरमति सारू । २०।११

निरंतरि - जोति निरंतरि जाणीऐ नानक सहजि सुभाइ । ५५।१०

निरंतरे - आपि करता करे सोई प्रभु आपि अंति निरंतरे । ७६७।१३

स्थान वाचक

क्रिया विशेषण

मूल रूप :

उपरि सचहु उरै सभु को उपरि सचु आचारु । ६२।१७

परि - ऊपरि गगनु गगन परि गोरखु ता का अगमु गुरू पुनि वासी ।
६६२।२६-३०

उपरहु - उपरहु पाणी वारीऐ झले झिमकनि पासि - ४१७।६

तले - तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ।। ३।१२

अगै - सतजुगि रथु संतोख का धरमु अगै रथवाहु ।

आगै आगै सरपर जाणा जिउ मिहमाणा काहे गरबु कीजै ।

पाछे - आइ सैती पकउहि सूझते तीज लोव
मकर पाछे कछु न सूझै एहु पदमु अलोव ।।

पिछै - पउदी जाइ परालि पिछै हथु न अंबडै । ७६६।५

अंतरि	-	अंतरि लगी जलि बुझी पाइआ गुरमुखि गिआनु । २०।२८
अंतर	-	पुनं दान अनेक नावन किउ अंतर मलु धोवै । २४३।१२
बाहरहु	-	उहि अंदरहु बाहरहु निरमले सचे नाइ समाइआ । १३६।१४
भीतरि		नानक बदरामालका भीतरि धरिआ आणि । ७८६।१२
विचि	-	नदीआ विचि टिबे दिखाले थली करे असगाह ।
अगु	-	जंतु उपाइ विचि पाइअनु करता अलगु अपारु । ६३७।१४
निकटि	-	निकटि वसै देखै सभु सोई । ८३१।१२
पासि	-	ऊंदरु दूंदर पासि धरीजै । ६०५।१६
साथि	-	अंतिकालि किछु साथि न चाजै । ६०६।२६
दुरि	-	खिनु पलु नीद न सोवई जाणै दुरि हजुरि । ६०।११

फारसी से :

नजीकि	-	पिरु नजीकि न बूझै बपुड़ी । १२७४।२४
हजूरे	-	साचे राचे देखि हजूरे । ६४४।१
जेर	-	हम जेर जिमी दुनीआ पीरा मसाइका राइआ । १४३।२६
पेसि	-	यह अरज गुफतम पेसि तो दर गोसतकन करतार ।७२१।४
मिआनु	-	आप नेड़ै दुरि आपे ही आपे मंझि मिआनु ।२५।१५-१६

साधित स्थानवाचक

सर्वनाम मूलक

निश्चय वाचक-

एथै	-	एथै - जीवण मरणा जाइ कै एथै लाजे कालि । १५।८
ऐथै (ओथै)	-	ऐथै ओथै निबही नालि । ३५५।७
ओथै	-	कच पकाई ओथै पाइ । ७।२२

प्रश्न वाचक

कह - कूड़ु अमावस सचु चन्द्रमा दीसै नाही कह चड़िआ । १४५।१७

केह - सर भरि थल हरीआवले इक बूंद न पवई केह । ६७।६

कहा - आतो जाइ कहा ते आवै । १५२।२२

कत - बिनु गुर रामनाम कत लहीऐ । ४१६।४

किथै - बाग मिलख घर बार किथै सि बागणं । १४१।२६

कियहु - कियहु आइआ कह गइआ । १२८७।७

सम्बन्ध वाचक

जह - जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ । ७५२।२३

जहां - जहां नामु मिलै तह जाउ । ४१४।१८

जितु - गुरू समुंदु नदी सभि सिखी नातै जितु वडिआई । १५०।१०

जिथै - जिथै नीच समालीअनि तिथै नदरि तेरी बखसीस। १५।१३

नित्य संबंधी

तह - जह देखउ तह नालि गुरि देखालिआ । ७५२।२३

तहा - गुरमुखि साधु तहा गुदराणु । ३५५।२३

तही - जह प्रभ सिमरै तही मनुमानिआ । २२४।१८

तिथै - तिथै सोहनि पंच परवाणु । ७।१६

सरबे - सरबे समाणा आपि तू है उपाइ सभ कारंगा

सरबं - सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोई

संज्ञा मूलक

विशेषण मूलक

पारा - किउकरि बूझै पावै पार । ४४।७

पारा - किउकरि भवजलु लंघसि पारा । १०२६।१३
पारि - इउ भवजलु पारि लंघाई ।। १०२६।१३
पारे - विणु करमा कैसे उतरसि पारे । ६०३।२०
पारो - किउकरि पाइऐ पारो । ६३८।१८
परे - धरती होइ परे होइ होइ । ३।२१
औरे - सबहु औरे सभु को उपरि सचु आचारु । ६२।१६

(विशेषण मूलक)

उरध - उरध मूल जिसु साख तलाहा चार बेद जितु लागे ।
५०३।१०
दो आले - झूठा रुदनु होआ दोआले खिनमहि भइआ पराइआ ।
७५।१४
भरपूर - अवगुणी भरपूर हे । ६३६।१
भरपुरि - तू भरपुरि जानिआ मै दुरि । २५।११
भरपूरे - घटि घटि साचि रहिआ भरपूरे । ६४४।१

क्रिया-विशेषण मूलक-वाक्यांश
स्थानवाचक

क्रिया-विशेषण या विशेषण की पुनरोंक्ति करके :

जह जह जह जह देखा तह तह नर हरी । ८७६।१३
जत जत जत जत देखउ तत तत तुमही । १०४०।२४
तह तह तह जह देखा तह तह नर हरी ।
तत तत जत जत देखउ तत तत तुमही ।
परे परे ऊपरि परे परे अपरंपरु । १०४०।२२
वेकी वेकी वेकी वेकी जंत उपाए । १०३२।१३
वेको वेका होरि जीअ उपाए वेको वेका । ८४०।८
एकी एकी कहै नानक छपे किउ छपिआ एकी एकी वंडि दीआ ।
३५१।१

दो भिन्न नाम मूलक

ससुरै पेईऐ	-	ससुरै पेईऐ मै वसी सतिगुरु सेवि निसंग । ६४२।१६
पेईऐ सहुरै	-	ना सुखु पेईऐ साहुरै झूठि जली वेकारि । ५६।८
घर दर	-	घर दर फिरि थाकी बहुतेरे । ६३२।१४
वणखंडि	-	इकि कंद मूलु चुणि खाहि वण खंड वासा । १४०।६
हलति पलति	-	हलति पलति निबही तुधु नालि । ४१२।२३
उरवारि पारि	-	उरवारि पारि मेरा सहु वसै । १५७।६
बागे बाग	-	घर गच कीते बागे बाग ।। २४३।१२
फनीकट	-	नाम बिना फनीकट समिकरमा जिउ बाजीगर भरमि भूलै ।
		१३४३।१० ।
बादि	-	संजमु साध संगति बिनु बादि जइआ । ६०६।१६
बिरथा	-	बिनु देखे कहणा बिरथा जाइ । २२२।१८
चुपै	-	चुपै चंगा नानका बिणु नावै मुहि गंधु । १२८८।२०
भुला	-	जिथै जाई बहीऐ भला कहीऐ । ५६६।२
जोरी	-	जोरी मंगै दानु वे लालो । ७२२।२२

सर्वनाम मूलक :

इउ	-	जीवतिआ इउ मरीऐ । ८७७।१२
इव	-	नानक बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ ।८३६।८
ऐव	-	नानक एव न जापई कोई खाइ निदानि । ८५४।१
एवै	-	नानक एवै जाणीऐ जीवै देवणहारु । १२४२।१२
एतु	-	सुरती सुरति रलीऐ एतु ।। ८१८।६
किउ	-	किव करि आखा किव सालाही
		किउ वरनी किव जाणा ।। ५।१
केव	-	तुधु बाझु पिआरे केव रहा । ६६०।६

कैसे	-	नाम बिना कैसे सुखु पावै । ६०६।२
कैसा	-	बैसिगुफा महि आखउ कैसा ।। २२१।२२
जिउ	-	जिउ भावै तिउ राखुदइआला । ४१६।७
जिव	-	जिव आइआ तिव जाइसी कीआ लिखि लै जाइ ।१३३१।६
जेव	-	जेव साइर देह लहरी बिजल जिवै चमकरे ।। ४३६।१
जेतु	-	तनु करि तुलहा लंघहि जेतु ।। ७७८।६
तिउ	-	जिउ भावै तिउ राखु दइआला । ४१६।७
तिवै	-	जिउ तू राखहि तिवै रहाउ ।। ११८६।११०
तथा	-	गुर कै सबदि तथा चितु लाए ।। ६६३।५
आपु	-	हुकमु रहाऐ आपणे मूरखु आपु गणेइ ।। १२४१।१४

क्रिया विशेषण-मूलक वाक्यांश :

सर्वनाम के साथ सर्वनाम , क्रिया-विशेषण संबंधक , संज्ञा आदि जोड़ कर सामासिक रूप :

इवही	-	धनवंता इव ही कहै अवरी धन कउ जाउ । १२४४।२२
इउ किउ	-	इउ किउ कंत पिआरी होवा । ३५६।२७
किउकरि	-	किउकरि बूझै पावै पार । ६४४।७
किवकरि	-	किवकरि आखा किव सालाही किउ वरणी किव जाणा । ४।२८
कवज मुखि	-	कवन मुखि सूरजु तपै तपाइआ । ६४३।१४
काहे कउ	-	काहे कउ तुझु इहु मनु लाइआ । ६४०।१
किवैन	-	जतन करै बिंदु किवै न रहाइ । ६०६।२

बिधि का प्रयोग :

इह बिधि	-	नानक इह बिधि छुटीऐ नदरि तेरी सुखुहोई । ७६०।१५
इन बिधि	-	रसना नामु जपहु तब मथीऐ इन बिधि अंमृत पावहु । ७२८।७

इन्ह बिधि	-	पुजा प्राण सेवकु जे सेवे इन्हा विधि साहिबुरतु रहे । ७२८।७
इनु बिधि	-	घट ही भीतरि सो सहु तोली इनु बिधि कितु रहावा । ७३१।२
इनु बिधि	-	माल के माणे रूप की सोभा इनु विधि जनमु गवाइआ ।। २४।३
कितु बिधि	-	तितु अगम तितु अगमपुरे कहु कितु बिधि जाईऐ राम ।। ४३६।४
किन बिधि	-	किन बिधि सागरु तरीऐ । ६७७।६
बहु बिधि	-	आपे बहु बिधि रंगुला सखीऐ मेरा लाल । २३।१८ ।
सम बिधि	-	प्रम मिले पिआरे कारज सारे करता सम बिधि जाणे । ११०६।२७ ।
कितु कितु बिधि	-	कितु कितु बिधि जगु उपजै पुरखा कितु कितु दुखि बिनसि जाई ।।

भाइ का प्रयोग

इक भाइ	-	इक भाइ इकमनि नामु वसिआ सतिगुरु हम मेलीआ ।। ८४३।१० ।
एक भाइ	-	नह असथिरु दीसै एक भाइ ।। ११८७।२६
एकै भाइ	-	उतमु होवा प्रमु मिलै इक मनि एकै भाइ । ६३६।२३
दूजै भाइ	-	ध्रिगु जीवणु दोहागणी मुठी दूजै भाइ । १८।२६
सहज भाइ	-	नानक कृपा करे जग जीवनु सहज भाइ लिव लाए ।। ३५३।२७
सुख भाइ	-	सबदि महली खरा तू खिमा सचु सुख भाई ।। ६३७।१०
सच भाइ	-	गुरमुखि कुछु न भावई सचि रते सच भाइ । २२।६

सतिगुर माह - साकत प्रेम न पाइऐ हरि पाइऐ सतिगुर माइ । ५६७।२३
खसमै माह - चाकरु लगै चाकरी जे चले खसमै माह ।। ४७४।२३
गुर माह - साधु मिले साधु जनै संतोखु वसै गुर माइ ।। ६२।२०
गुरमति माह - अमृत रसि राता केवल बैरागी गुरमति भाइ सुभाइआ ।।
१०३६।५
पिर माह - बईअरि बोलै मीठुली भाई
साचु कहै पिर माइ ।। ६३७।१३
मै माह - मै भाई भगति तरु भवजलु मनाचित लाइ हरि चरणो ।।
५०५।२७
भगति माह - आपे मुकति तृपति वर दाता
भगति माइ मनि भाई है ।। १०२१।१३
मन माह - गुर के सबदि रचै मन माइ ।। ६०३।१४
गुर के माह - बुडी घरु घालिउ गुर के भाइ चलो ।। ६८६।१३
मन के माह - लेखा लिखीऐ मन के माइ ।। १२३७।१६

क्रिया विशेषण मूलक वाक्यांश :

जिउ जिउ - नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ।
१४४।१८
जिव जिव - जिव जिव हुकमु तिवै तिव कार ।। ८।६ ।
तिव तिव - जिव जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ।। ४।१४
तिउ तिउ - ।। १४४।१६
तिवै तिव - । ८।६

निषेधात्मक :

नाना - ना ना करत न छुटीऐ बिणु गुण जम पुरि जाहि ।।
६३४।२८

अनुकरणात्मक क्रिया की पुनरुक्ति करके
या अन्य शब्द के योग से :-

थर थर	-	थर थर कपै जीअड़ा थान विहुणा होइ ।। ६३४।१४
मड़ मड़	-	मड मड अानि सागरु दे लहरी ।।१०२६।६
मउवाउ	-	अानि पाणी बोले मउवाउ ।। १५३।८

कारणवाचक क्रिया विशेषण

सर्वनाम मूलक :

काइ	-	गुणवती सहु राविआ निरगुणि कूके काइ ।। ५५७।११
काइचे	-	मूडे काइचे मरमि भुला ।। ६६१।२५
काइतु	-	तां काइतु मिले सजाई ।। ४६७।१२
काही	-	अंतरि मैलु लोभ बहु झूठे बाहरि नावहु काही जीउ ।। ५६८।१२
काहे	-	काहे गरबसि मूडे माइआ ।। २३।२३
किउ	-	सो किउ विसरै मेरी माइ ।। ६।२४
केहे	-	जिसु सिकदारी तिसहि खुआरी चाकर केहे डरणा ।। ६०२।२६
कितु	-	जिनी नामु विसारिआ से कितु आए संसारि । १०१०।१३

निषेधात्मक क्रिया विशेषण :

नाा	-	नाा को मेरा किसु गही नाा को होआ न होगु ।। ६३४।३
न	-	दुविधा राते महलु न पावहि ।। ६०५।१
नह	-	मीन की चपल सिउ जुगति मनु राखीऐ उडे नह हंसु नह कंधु छीजे ।। ६६२।२

नहि	-	चकवी नैन नीद नहि चाहै बिनु पिर नीद न पाई ।। १२७३।११
नही	-	सगली मूले नही सबदु अचारु ।। ११६०।८
नन	-	सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ।। १३।५
ना	-	खोटे पोते न पवहि तिन हरिगुर दरसु न होइ ।। २३।२
नाहि	-	परतापु लगा दोहागणी भाग जिना के नाहि जीउ ।७२।५
नाही	-	अखी अंधु जीभ रसु नाही रहे पराकउताणा ।। ७६।६
नीम्ही	-	चारे कुंडा ढूढीआ को नीम्ही मैडा ।। ४१८।२५
निरति	-	निरति न पाईआ गणी सहंस ।। ३७८।१६
मत	-	मै मत जोबनि गरबि गाली दुधा थणी न आवए ।। २४२।१३
मनहि	-	आपे दुरमति मनहि करेइ ।। ३४६।२२

निश्चय वाचक क्रिया-विशेषण

निसग	-	ससुरै पेईऐ मै वसी सतिगुरु सेवि निसंग ।। ६४२।१७
निसगु	-	सतिगुरू सेवि निसंगु भरमु चुकाईऐ ।। १४५।६
निहचउ	-	जो तिसु भावै सो निहचउ होवै ।। १०३४।२०

परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण

अति	-	बिनु गुर मनुआ अति डोलाइ ।। ६४२।१३
अधिक	-	इधनु अधिक सकेलीऐ माई पावक रंचकपाइ ।। ६३७।१५
रंच	-	तनु चुगहि मिलि एकसे तिन कउ फाप नरंच । ६३४।१०
रंचक	-	इधनु अधिक सकेलीऐ माई पावक रंचक पाइ । ६३७
मोरी	-	हउ घोलि घुमाई खनीऐ कीती हिक मोरी नदरि निहालि ।। १०१४।२३

किछु	-	गुर परसादि जाणै मिहमानु ता किछु दरगह पावै मानु ।। ३५०।५
किछु	-	तिसकी कीमति ना पवै कहणा किछु न जाइ ।। २८२।४
चोखी	-	अखर विरख बाग भुइ चोखी सिंचि भाउ करेही ।।३५४।२६
बहु	-	बहु चिंता पिड चाले हारी ।। २२७।७
बहुतु	-	अखर पडि पडि भुलीऐ भेखी बहुतु अभिमानु ।। ६१।२०
बहुता	-	खरा सिआणा बहुता भारु ।। २४।२४
बहुती	-	परवाणु जीवण की बहुती आस ।। ३५४।१

संबंधक या निषेधात्मक क्रिया-विशेषण
लगा कर बनाए सामासिक रूप -

तिल का	-	जे को पावै तिल का मानु । ४।२१
तिलु न	-	सभसै दासा तिलु न तमाइ ।। १०२२।७
तृणा न	-	तृण न पाइउ बपुड़ी नानकु कहै गवार ।। १२४१।२४

ही भी अपि का प्रयोग :

जब कभी किसी शब्द पर जोर देना हो तो गु मा में इन क्रिया विशेषणों का प्रयोग किया गया है । (ही)

ही कबही	-	बिनु गुरसबद मुकति नही कबही ।। ११२७।१२
ही कबहि	-	नानक मूरखु कबहि न चेतै ।। १११०।६
हु कबहु	-	साच सबद बिनु कबहु न छूटसि ।। ११६६।३
हुं कबहुं	-	कबहुं साहिब देखिआ मेणा ।। १२५७।१०
हु कबहु	-	रे मन लैसै कबहु न पाइ ।। ११६६।३

यह संज्ञा , सर्वनाम , क्रिया-विशेषण आदि के साथ मिल कर क्रिया-विशेषणात्मक वाक्यांश बनाता है ।

संज्ञा के साथ : -

मन ही ते - रवि रहिआ सोइ अवरु न कोइ
मन ही ते मनु मानिआ ।। १११।८

सर्वनाम के साथ :

तुझ ही ते - चउरासीह मेदनी तुझ ही ते होई ।। १२८३।२३

किन ही - सबदै आचारु न किनही पाइआ ।। १२८५।१४

क्रिया विशेषण के साथ :-

सद ही - प्रिउ नालि सद ही सचि सगे नदरी मेलि मिलाई ।।
१२७३।२१

तब ही - सहजि मिलिआ तब ही सुखु पाइआ ।। १२७४।२५

उत ही - बिसटा कीट भए उत ही ते उत ही माहि समाइआ ।।
१२५५।८

तह ही - नानक पूछि चलउ गुर अपुने जह प्रभु तह ही जाईऐ ।।
११०८।२७

जह ही - तह ही मनु जह ही ते राखिआ ।। १२३२।२०

तत्काल बोधक -

वर्तमान कृदंत के साथ

देखत ही - दरसनु देखतु ही मनु मानिआ ।।

तुलना बोधक :

सबंधक के अनुसार प्रयोग :

काली हु धउले सुरति गई काली हु धउले
किसै न मावै रखिउ धरे ।। १०१४।१०

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हु अति नीचु ।१५।१२

निश्चयवाचक

हु - नानक दुलीआ मसु रंगु मसु हु मसु लेह ।। १२४०।२०

हु - इहु मनु कतहु न जाइ ।। १२६१।५

भी -

भि - आप पटी कलम आपि उपरि लेखुभि तूं ।। १२६१।२१

भी - हे भी होसी भी ।। १।४

अपि

पुनरपि - पुनरपि जनमु नाही गुण गाउ ।। २२४।२ ।

गुरु नानक द्वारा निम्नलिखित समुच्चय बोधक अव्ययों का प्रयोग किया गया है ।

होरु अवरु , अवराहा , अवर , बिनु , सभु सभ समि , हभीआ , किउ-जा, काइ , की , काहे जे कितु
जा-ता जब , किआ

१- विणु नावै होरु धनु नाही होरु विखिआ सभु छारा । माझ ।पउड़ी।४
२- नानक अवरु न जीवै कोइ । माझ ।स०१८
३- ऐते वेस करेदीए गुधे सहु रावी अवराहा । वडहंस ।घरु १।स० ३।१
४- चाकरीआ चंगिआईआ अवर सिआणप कितु सूही । घरु ६।३
५- बिनु नावै को संगि न साथी मुकते नामु धिआवणिआ माझ ।असटपदीआ १।४
६- मैं रोवंदी सभु जगु रुना रुंनड़े वणहु पखेरु । वडहंस । घरु । १।स०१
७- विणु नावै सभ विसु पैन्हणु खाइऐ । माझ । पउड़ी । १०
८- समि
सहीआ सहु रावणि गईआ हउ दाधी कै दरि जावा । वडहंस । घरु १।स० १
९- मैं की नदरि न आवही वसहि हभीआं नालि । ,, ,, सब १।३
१०- तिखा तिहाइआ किउ लहै जा सर भीतरि पालि ,, । सब १
११- गुणवंती सहु राविआ निरगुण कूके काइ ?
१२- मैरा कंतु रीसालू की धन अवरा रावे जी । ,, । घरु १। सब २/१
१३- काइआ कूड़ि विगाड़ि काहे नाईऐ । ,, घरु १ ।छंत १।१
१४- ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु आसा स० २७
१५- जा मंजे ता ठीकरु होवै घाउत घड़ी न जाइ । माझ ।
१६- जब साच अंदरि होइ साचा तामि साचा पाइऐ । वडहंस ।छंत ।१
१७- माछी तारु किआ करे पंखी किआ आकासु ।
पथर पाला किआ करे खुसरे किआ घर वासु । माझ ।स०।२२

अवर अवरं अपरं पा० अपरम स०

होरु पंजाबी प्रयोग है।

सम सर्व स०

हमीआं गुरु नानक का विशेष प्रयोग है। स ह के नियमानुसार सम

का हम और बहुवचन स्त्रीलिंग रूप हमीआं बनाया गया है।

किआ किम्

काहे व्रजभाषा का प्रयोग है।

आराहा

संदर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी

उदय नारायण तिवारी	१- भारती भण्डार , प्रयाग सं० २०१२ वि० २- हिन्दी भाषा का उदगम और विकास ।
कामता प्रसाद गुरु	हिन्दी व्याकरण नागरी प्रचारिणी सभा काशी सं० १९७७ ।
कैलाश चन्द्र अग्रवाल	आधुनिक हिन्दी व्याकरण , रंजन प्रकाशन, बाके विलास , सिटी-स्टेशन मार्ग , आगरा-३ , १९७१ ।
जयराम मिश्र	नानक वाणी मित्र प्रकाशन , प्राइवेट लिमिटेड , इलाहाबाद , २०१८ वि०
त्रिलोकी नारायण	अवधी और उसका साहित्य सरस्वी सहकार दिल्ली की ओर प्रकाशन दिल्ली , बम्बई , नई दिल्ली, १९५४ ।
दयानंद	कारकीय: अजमेरनगरे वैदिकयन्त्रालेय २००९ वि०
देवेन्द्र कुमार	अपभ्रंश प्रकाश श्री गणश प्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थ माला , २।३८ , भदैनी , काशी ।
धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी भाषा का इतिहास , हिन्दुस्तानी एकेडेमी , प्रयाग १९५८ ।

भोलानाथ तिवारी — हिन्दी भाषा का सरल व्याकरण
राजकमल प्रकाशन , १९५८ ।

प्रेम नारायण टण्डन — सूर की भाषा १९५७ ।

भगवत प्रसाद दुबे — कबीर-काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन ।

रामचन्द्र शुक्ल — हिन्दी-व्याकरण दास ब्रादर्स ।
अनारकली , लाहौर , १९३० ।

राहुल सांकृत्यायन — दक्खिनी हिन्दी काव्यधारा

वीरेन्द्र श्रीवास्तव — बिहार राष्ट्र भाषा-परिषद
पटना वि० १९५६ ।

वासुदेवशरण अग्रवाल — अपभ्रंश भाषा का अध्ययन
कीर्तिलता साहित्य सदन ,
चिरगांव भांसी , १९६२

शिवप्रसाद सिंह — कीर्तिलता और अवहट्ट भाषा
साहित्य भवन प्राइवेट लि०
इलाहाबाद , १९५५ ।

सरयू प्रसाद अग्रवाल — प्राकृत-विमर्श
लखनऊ विश्वविद्यालय

सीताराम — राजस्थानी सबद कोस

हंस कुमार तिवारी — बंगला और उसका साहित्य

हुमायून कबिर — राजकमल प्रकाशन
बंगला काव्य की भूमिका
राजकमल प्रकाशन , १९५८ ।

हेमचन्द्र जोशी — प्राकृत भाषाओं का व्याकरण
बिहार राष्ट्रभाषा परिषद ,
पटना , १९५८ ।

संस्कृत कोश

रामसरूप शास्त्री — आदर्श हिन्दी संस्कृत कोश
चौखम्बा विद्या भवन ,
चौक , वाराणसी ,
२०१४ वि०

प्राकृत कोश

हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ — पाइअ सद्द महराणवो
(प्राकृत शब्द गहाराविः)

पंजाबी

कान्ह सिंह (नाभा) — १- गुरु शबद रतनाकर
महान कोश
भाषा विभाग , पंजाब , पटियाला ,
१९६०
गुरमत सुधाकर ,
भाषा विभाग पंजाब , १९७०

काला सिंह (बेदी) — वारां गुरु नानक
पंजाब बुक सटोर ,
पहाड़ नवीं दिली-५५ ,
१९६९ ।

तारन सिंह — गुरु नानक बाणी प्रकाश,
सी गुरु ग्रन्थ साहिब खोज विभाग
पंजाबी यूनीवरसिटी ,
पटियाला , १९६९ ।

तेजा सिंह — शब्दांतिक लगां मातरां दे गुझे भेद, लाहौर बुकर शाप, घंटा घर लुधियाना, १६४६।

दुनी चन्द — पंजाबी भाषा दा विकास, पंजाब यूनीवरसटी पब्लीकेशन, बीउरो, चण्डीगढ़। १६५६।

साहिब सिंह — गुरबाणी विआकरण, हिन्द प्रेस कोरट रोड़, अमृतसर, १६३२।

गुरु ग्रंथ साहिब
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक, कमेटी, अमृतसर।

आदि गुरु ग्रंथ साहिब जी, फरीद कोट वाला टीका।

साहिब सिंह — गुरु ग्रन्थ साहिब दर्पण।

o - o - o

- o -

o

Sr.No.	Name of the Writer	Title, Publisher.
1.	Babu Ram Saksena	Evolution of Awadhi. The Indian press Limited, 1937.
2.	Earnest Trumpp	The Adi Granth, Munshi Ram, Manohar Lal, New Delhi, 1970.
3.	Joseph Devey Cunningham.	The Sun Printing Works, Lahore, 1897.
4.	Jay Kanta Mishra.	A History of Maithli Literature, Tirabhukti Publications I, Sir P.C. Banerji Road, Allahabad, 1949.
5.	J.C.Ghosh.	Bengali Literature, Oxford University press London, Geoffrey, Cumberiege, 1948.
6.	Kusum Jali Deshpande.	Marathi Sahitya Maharashtra Information Centre Govt. of Maharashtra 30-31, York Fotee Building Connaught Circus, New Delhi-1.
7.	Romesh Chander Dutt.	Cultural Heritage of Bengal. Punthi Pustak Calcutta 4: India: 1962.
8-	A grammar of Bangru	Dr. Jagdev Singh Head of Linguistic Department Kurukshetra University Kurukshetra